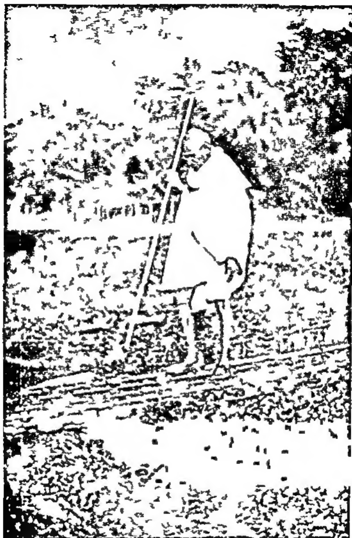


सपूण स्वरा-यशी साजम

राजा राममोहनरायसे गांधीजी

[भारतकी आजादीके अितिहासकी अेक समीक्षा]

मगनभाअी प्रभुदास देसाअी

अनुवादक
रामनारायण चौधरी



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

पहली आवृत्ति ३

रु० २ ० मार्च १९५९

प्रकाशकका निवेदन

गुजरात विद्यापीठ अहमदाबादने गुजरातीमें पुस्तक राजा राममोहन रायथी गांधीजी श्री सूरजबहेन स्मारक ग्रंथमालाकी एक पुस्तकके रूपमें प्रकाशित की थी। गुजरातीमें यह पुस्तक सन् १८५७के शताब्दी महोत्सवके अवसरमें प्रसिद्ध की गई थी। उसका हिन्दी अनुवाद निकालनेकी गुजरात विद्यापीठने हमें अनुमति दी, जिसके लिए हम विद्यापीठके बहुत आभारी हैं।

इसमें पिछले दो सौ वर्षों (सन् १७५७ से १९५७ तकके) हमारे भारतीय इतिहासकी झांकी समझाई गई है। इस पुस्तकका जन्म कैसे हुआ, इसमें किन किन बातोंका समावेश हुआ है, इस विषयमें श्री मगनभाई देसाईने अपनी प्रस्तावनामें विस्तारसे बताया है। अतः हम इस आशासे यह हिन्दी अनुवाद हिन्दी जनताके सामने प्रस्तुत करते हैं कि हमारे पाठकों तथा सामान्य पाठकोंको यह पुस्तक उपयोगी और दिलचस्प मालूम होगी।

१०-९-५७

प्रस्तावना

जिस पुस्तकका उपनाम बताता है कि यह भारतकी आज़ादीके अितिहासका अेक खुलासा है अर्थात् यह अुसके अितिहासका विवरण-ग्रंथ नहीं है। अतः जिसमें अुस अितिहासका ब्योरेवार बयान नहीं मिलेगा, न अुसे बतलाना मेरा अिरादा ही था।

फिर भी मैं बरसोंसे मानता आया हूं कि अुसका ब्योरेवार वर्णन अब लिखा जाना चाहिये। अब तकके कामसे तो अुस लिखनेका स्वप्न भी मैंने मन-ही-मन सेवन किया है। मेरा १६०० से १८०० तकका अितिहास भारतकी अंग्रेज व्यापारशाही अुसका स्वतंत्र आरंभिक अभ्यासके रूपमें है। आगे १८५७ तकका अुसका कच्चा मसौदा मैंने तैयार रखा है। अुसके बाद यह कथा आगे लिखी जानी चाहिये। परन्तु यह लम्बा और बड़ा काम जब होगा तब होगा। जिस बीच १८५७ से १९०० वर्षके अितिहासकी विस्तृत खुलासा करनेवाली पाठ्यपुस्तकें विद्या अध्ययनकर्ताओं तैयार करना चाहिये यह सूझ अेक शिक्षकके नाते हमेशा महसूस हुआ है। कारण आजके विद्यार्थीको अिस प्रकार नजदीकका ज्ञान न हो तो भारतके भावी नागरिकका ज्ञान अुसकी शिक्षा अधूरी रहेगा जितना ही नहीं वर्तमान भारतको वह समझ ही नहीं सकेगा। हमारी शिक्षा प्रणालीमें आज भी यह कमी पूरी नहीं हुअी है। अब अुसमें सुधार होना चाहिये।

परन्तु यह पुस्तक अुस महत्त्वाकांक्षाका परिणाम नहीं है। जिसकी अुत्पत्ति अकस्मात् रूपमें हुआ। सन् १९५४ में गुजरात कॉलेजके अितिहास और अर्थशास्त्र मंडलने अपने २५ वर्ष पूरे होनेके अुत्सवमें अेक व्याख्यानमालाका आयोजन किया था। अुसमें भाग लेनेका मुझे न्योता दिया गया था। विषय लिया गया था — भारत कैसे स्वतंत्र हुआ? यह विषय मेरा रखा हुआ था। अुसकी चर्चा करते हुअे मैंने आधार लिया — राजा राममोहनरायसे गांधीजी तक। यह पुस्तक अिसी नामसे प्रकाशित हो रही है।

व्याख्यानके रूपमें दो घंटेमें मैं जो कह पाया था वह थोड़ासा विस्तारसे लिखना मालूम हुआ। मैं मानता हूं कि अिस तरीके विषयका प्रारंभिक परिचय मिल सकता था कि

मैं अुसके बारेमें कुछ लेख लिख डालूँ तो 'शिक्षण अने साहित्य' * के पाठकोंको अच्छा लगेगा। अुसके सम्पादकके नाते मुझे कुछ-न-कुछ लिखना तो पड़ता ही है, तब यह विषय क्या बुरा है? अिस प्रकार मैंने जनवरी १९५४ में यह लेखमाला शुरू की और १९५५ के नवम्बर तक किस्तोंमें जारी रखी। अिस अरसेमें मैं १९४२ के अितिहास तक पहुँचा था। १९४२का समय आने पर यह लेखमाला रुक गअी। १९४२ से १९४७ तकके ५ वर्षोंका अत्यन्त गतिवान अितिहास भाग अुसके बाद अभी अभी तैयार किया है। अुतना भाग अिस पुस्तकमें पहली बार प्रकाशित हो रहा है। अुसके अलावा अन्य सारी सामग्री 'शिक्षण अने साहित्य' में प्रकाशित हुअे लेखोंपर से अिस पुस्तकका सम्पादन किया गया है।

अलबत्ता पुस्तकका मुख्य भाग अिसके प्रथम ११० पृष्ठ हैं। अुसमें मैंने अितिहासकी अेक समग्र समालोचना प्रस्तुत करके संक्षेपमें यह कथा कही है कि भारत कैसे आजाद हुआ।

अिसे पुस्तकका रूप देते समय विचार आया कि अिस कथाकी पूर्ति करनेवाली दूसरी सामग्री तैयार हो सके तो अुसे भी दे देना ठीक होगा। जिससे पुस्तककी अुपयोगिता भी बढ़ जायगी। यह मानकर पूर्तिके रूपमें अिसमें मेल खानेवाली दूसरी सामग्री 'शिक्षण अने साहित्य' में से चुनकर यहाँ दी गअी है। मैं मानता हूँ कि पाठकोंको वह पसन्द आयगी।

मूल अितिहासकी समीक्षाके साथ पूर्तिकी यह सामग्री चुनकर रखनेमें जो खयाल मेरी नजरमें था अुसे यहाँ संक्षेपमें बता दूँ। पूर्तिके आरम्भके ६ प्रकरणोंमें कुछ विशेष अैतिहासिक सामग्री है। अुसके द्वारा पिछले १०० वर्षके कुछ खास क्षेत्रोंके अितिहास पर प्रकाश पड़ सकेगा। प्रकरण ७ से १२ में आजादीके प्रमुख निर्माताओंके बारेमें कुछ सामग्री है। अुसमें गांधीजीके बारेमें मुख्यतः अुनकी सत्याग्रही कार्य-पद्धतिका चित्र मिलेगा। बादके अंतिम ४ प्रकरणोंमें देशके विभाजनका और अुसके बाद नवीन भारतके कुछ मुख्य प्रश्नोंकी चर्चा है। यह सामग्री १९४७ से १९५५ तकके लेखोंमें से दी गअी है। अब प्रकाशन मिला (जो आज गांधी-स्मारक पड़ता है) और मन लगा भरे हैं। पाठकोंसे निवेदन है कि अिस बीच समय अुसके बाद भी हुआ लिख

* गुजरात विद्यापीठका गुजराती मासिक, जिसका नाम बदल कर अब 'नवजीवन' कर दिया गया है।

जानेकी तारीखें ध्यानमें रखें क्योंकि अुनका चर्चा भावी अध्यायों पर अिसका छाया होगी, जो अिस समय पढ़ने पर मेल खाता नहीं मालूम होगी।

समालोचकी शैली तथा अवधि विस्तारके बारेमें दो शब्द कहना जरूरी है। यह लेखमाला शुरू तो अिस खयालसे हुअी थी कि दो-चार लेखोंमें व्याख्यानका मर्म बता दिया जाय। अिसका असर पाठकोंको शुरूके प्रकरणोंमें दिखाओ देगा। वे प्रकरण लगभग रूपरेखाके नाते जैसे मालूम होंगे। ज्यों ज्यों मैं अुसमें आगे बढ़ता गया और कथा हमारे समयके नजदीक आती गअी त्यों त्यों अिस संक्षिप्त शैलीमें अनजाने ही फेरबदल होता गया। कथा कुछ विस्तारसे लिखी जाती रही। जिसकी किस्तें मैं हर महीने लिखता जा रहा था पहलेसे लिखकर रखी हुअी कथाको विस्तारमें नहीं दे रहा था। अिस प्रकार चलते चलते १९४२ के बाद तक मैं आया कि आगेकी किस्त रुक गअी जो अभी तक रुकी हुअी है। अिसका कारण यह था कि क्रिप्स मिशनके आगमनसे लेकर १९४७ तकके पाँच-सात वर्षोंमें घटनाओंकी असी परम्परा चली कि वह सारा सूत्र याद करके ही अपनी बात लिखी जा सकती थी। जिसके लिअे अुस विषयकी सामग्री देखना जरूरी था।

अिस प्रकार रुका हुआ काम अिस पुस्तकके प्रकाशनके निमित्तसे थोड़े समय पहले हाथमें लिया। १९४० से बादके अितिहासके ये प्रकरण काफी लम्बे हो गये हैं। मुझे लगता है कि वे पाठकोंको पसन्द आयेंगे क्योंकि १९४२ से १९४७ तक जो कुछ हुआ अुसकी संक्षिप्त कथा अनमें पाठकोंको मिलेगी। ये प्रकरण तैयार करनेमें मुझे श्री वी॰ पी॰ मेननकी पुस्तक दि ट्रान्सफर आफ पावर अिन अिण्डिया से अच्छी मदद मिली। जिसके लिअे मैं हृदयसे अुनका आभार मानता हूँ। यदि यह पुस्तक न मिलती तो कथा कहनेके लिअे मुझे बहुतसी तत्कालीन सामग्री देखना पड़ता और फिर भी अिस बारेमें हुअी घटनाओंके बारेमें मनन अिस आन्तरिक जानकारी जो कुछ वह सकती है वह तो मिल ही नहीं सकता था। यह पुस्तक हमारे देशके अितिहासके अिस प्रकरणके सिलसिलेमें बड़ा कामका ग्रंथ है।

मेरा खयाल है कि भारतका आजादीके अितिहासका अिस ढंगका समालोचनात्मक पुस्तकके रूपमें हमारी भाषा (गुजराती) में पहली ही बार प्रकाशित हो रही है। भारतका जिस कालका अितिहास अिसमें पढ़नेको अनेक मनोरंजक प्यारी गति मति तथा रीति-नीतिमें मौलिक परिवर्तन बतानेवाला है। अिसमें अहिंसक

हो गान्धीजी उत्थान या पतनका बाज डर रहता है। आगाह नागरिक स्वप्न प्राचीन हिन्दुत्व नहीं है अथवा यदि है तो सनातन हिन्दुत्वका या व्यापक अमर गान्धीजीवन उसका जीवन द्वारा बनाया और हिन्दू सिद्धान्त हिन्दू कुरान अथवा जीवन दान किया जा है। यह वस्तु केवल हिन्दुत्व नहीं है। उसमें जाति रंग धर्म भाषा या सम्प्रदाय भेद भी नहीं है। मनुष्य जीवन निरन्तरताके प्रति वफादार रह और यह बात स्वीकार कि सारे मनुष्य भाई-बहन हैं अथवा पारिवारिक बन्धन सबका जीवन तथा राष्ट्रजीवन विशाल — जिस प्रकारका अन्तर्धर्मसमभाव जीवनदृष्टि गांधीजीका वसुधैव कुटुम्बकम् सार भा है। उसी व्यापक सर्वोदय दर्शनका नवयुगका मानव धर्म है। गांधीजीने यह आदर्श हमें सिखाया है। आज यह प्रश्न सारी दुनियाके सामने है। भारतका जिस स्वप्न शिखर पर चढ़ना है। हमारा विश्व सबका यह भाव यदि प्रस्तुत समीक्षा किया सके तो उसका प्रयोजन सफल माना जायगा। भगवान यह कुशल भावना भारतवासियोंके हृदयमें जाग्रत करे जिस प्रार्थनाके साथ मैं यह पुस्तक पाठकोंके सामने रखता हूं।*

२१-८-५७ मगनभाई देसाई

* मूल गुजराती पुस्तककी प्रस्तावना।

अनुक्रमणिका

पूर्ति

राजा राममोहनरायसे गांधीजी

अुपोद्घात

१

राजा राममोहनरायका समय था सन १७७२ से १८३३ तकका। अुस कालमें अंग्रेजी राज्य बंगालमें जम गया था। और मजबूत नींव पर अुसकी स्थापना करनेकी बात अंग्रेज शासक विचार रहे थे। अिस प्रकार वह काल अंग्रेजोंके राज्यका स्थापना-युग था।

गांधीजीका समय सन १८६९ से १९४८ तकका था। अिस कालमें अंग्रेजी राज पूरा जम कर फिर अस्तंगत हुआ। अुस पर गांधीजीका पक्का असर-ताके होना है अैसा कुछ बात हुआ। अिस प्रकार यह काल अंग्रेजी राज्यका अुत्थापन-युग था।

स्थापना-युगके भारतके पथप्रदर्शकका काम राममोहनरायने किया। यह मैं किसी तरह अुस महापुरुषकी निन्दा या अपस्तुतिके रूपमें नहीं कहता। परन्तु अिसमें मैं अुनकी पूरी स्तुति कर रहा हूं।

अुस युगमें भारतने कुछ नया ही अनुभव किया। हथियारोंके होते हुअे शांतिमय होने लगे तथा बड़े पर्याप्त शूरता और बहादुर होते हुअे भी हजारों कोसोंसे आये हुअे मुट्ठीभर गोरोंके सामने पराजित होकर भारत अुनके राज और व्यापारका शिकार बन गया और अिस प्रकार अुनके गुलाम बननेसे यहांके भारतीय राजा-महाराजा रोक न सके। मेरे जैसा कि अंग्रेज अितिहासकार लिखते रहे हैं, हमारे ही पैसा हमारे ही रुपयेसे तथा हमारे ही सनाम अंग्रेजोंने हमें हराया और अपना राज बनाया। बल्कि अैसा होना तो और भी विचित्र माना जायगा। अिस विचित्रतासे हमारी जनता स्तब्ध हो गयी फिर भी नये शासनमें अमन अेक समान शांति और भला-बुरा व्यवस्था भी रहा।

अिस प्रकारके विचित्र परिवर्तनकी नब्ज पहचानकर देशके लिअे मार्ग सूचित करनेका काम जिम्मेदारी राजा राममोहनरायने की यह अितिहास साफ कहता है। रवीन्द्र टागोरका वाक्य अुद्धृत करूं तो

Through the dynamic power of his personality and his uncompromising spirit he visualised our national being with the urgency of creative endeavour He is the great path maker of this century who has removed ponderous obstacles that impeded our progress at every step and initiated us into the present era of world wide co-operation of humanity

[अपनी प्रचण्ड प्रतिभा और अदम्य आत्मबलसे अुन्होंने तुरत पहचान लिया कि हमारी राष्ट्रात्माको अपने विकासके लिअ सर्जनात्मक पुरुषार्थ तुरत हाथमें लेना चाहिये। अिस शताब्दीके वे महान पथनिर्माता है। पग-पग पर जो भारी विघ्न हमारी विकास-यात्रामें आते थे अुन विघ्नोंको अुन्होंने दूर किया और आजके जगद्-व्यापी मानव सहयोगके नव युगकी हमें दीक्षा दी।]

राजा राममोहनरायने भारतके आधुनिक युगकी नींव डाली और अुस समय अेक अैसी राष्ट्रगति आरंभ की जिसके जोरसे भारत अुस समयकी अवनत दशामें से अुन्नति साधनेके मार्ग पर अग्रसर हुआ।

अिस युगकार्यको समझनेके लिअ राजा राममोहनरायके जीवन और कार्यका थोड़ा परिचय प्राप्त कर लें तो आनन्द आये। परन्तु यह लोभ छोड़ देना चाहिये।

२

अपरोक्ष दृष्टिसे देखें तो भारतमें दूसरा नया विषम-युग आया प्लासीके संग्राममें पतन पर — लगभग अंग्रेजी राज्यकी स्थापनाको १ वर्ष हो जाने पर। अिस अवधिमें प्रजाने लोगोंको जो हानि होते देखा अुसमें से वह युग पैदा हुआ। राजा राममोहनरायके लिये हुअे पाठके अनुसार चलते हुअे भारतको जो दूसरा अनुभव हुआ वह था परराज्यकी गुलामीसे अुसके द्वारा होनेवाले अपमानका, राष्ट्रका आत्मा हीनताका, स्वमान हानिका और प्रजाके स्वत्वका अवनति होनेके भयका।

यह नया परिणाम भी अैसा ही कठिन और अद्भुत था। अुस समय जो लोग नये पराक्रमकी जरूरत थी तथापि पुराने युगका पाठ पर्याप्त नहीं था — अुसकी शक्ति कम पड़ती थी। अुस समय अैसे ही प्रचण्ड प्रतिभावाले महात्मा पुरुष गांधीजी हमें मिल गये। टागोर द्वारा राजा

राममोहनरायके विषयमें कहे गये अुपरोक्त शब्दोंमें ही हम अपने नये युगद्रष्टाके रूपमें गांधीजीको देख सकते हैं।

अिस दृष्टिसे देखें तो भारतके अिन दो महापुरुषोंकी प्रतिभामें अिस तरहका साम्य था। दोनों धर्मपुरुष थे, देशभक्त थे, मानवताप्रेमी थे, महान हिन्दू थे और महान भारतीय थे।

खास विशेषता यह थी कि दोनों अंग्रेज प्रजाके मित्र थे और भारतीय तथा अंग्रेज दोनोंके सम्मिलित कल्याणके विचारसे रखनेवाली समन्वय-नीतिको मानते थे। परन्तु अितिहासकी गतिका स्वरूप असा था कि अेकने भारतमें अंग्रेजी राज्य स्थापित करनेमें हाथ बंटाया और दूसरेने असे अुखाड़नेमें। दोनों प्रक्रियायें दोनों प्रजाओंके हितमें होनेके कारण ही अूपरसे विचित्र और विरोधी लगने पर भी सच और दूरदृष्टिसे देखने पर अेक ही प्रकारका काम अिन दो महापुरुषोंने किया।

दोनोंके समकालीन गवर्नर जनरलोंको याद करनेसे अेक मजेदार अुदाहरण मिलता है। दोनों महापुरुष अुनके मित्र थे और अेक-दूसरेकी सहायता करनेको अुत्सुक थे। बेंटिक और राममोहनराय तथा माअुण्टबेटन और गांधी मित्रोंके रूपमें रहे। दोनोंने परस्पर सद्भावना रखी और दोनोंने अपने-अपने देशोंका काम किया।

अिस प्रकार यह प्रवर्तनका अन्त भी अुसके अनुरूप ही हुआ — स्वतंत्र भारतका प्रथम गवर्नर जनरल भारतकी ही पसन्दगीसे अेक अंग्रेज बना। अिन दो महापुरुषोंकी दृष्टिमें जो समन्वय भाव और विश्वजित् प्रेमभाव था अुसने अिन डेढ़ सौ दो सौ वर्षोंके भारतीय अितिहासकी रचनामें मुख्य भाग लिया है। ये भाव अिस लम्बे युगमें प्रधान स्वरके रूपमें रहे हैं और अिसलिये अब आगे स्वतंत्र विश्व-मानवको जन्म देनेका काम आज अितिहासकी नियतिकी अनिवार्यताके भाग्य पर आ पड़ा है।

२

अंग्रेजी राज्यकालका अिस शताब्दीका अितिहासप्रवाह आज कुछ स्पष्ट हो रहा है। अिस समय अुसका अेक और सबसे बड़ा लक्षण भी देखने लायक है क्योंकि वह अिन दो महापुरुषोंके सब विचारोंका सच्चा निचोड़ भी है।

अिस लक्षणको सादी भाषामें हमने अपर देखा — राजा राममोहनरायने अंग्रेजी राज्यकी स्थापनाका मंत्र दिया, गांधीजीने असकी अुत्थापनाका मंत्र दिया।

अिस चीजको जरा गहरे जाकर जांचनेकी जरूरत है। अिन दोनों अवसरों पर भारत और अिंग्लैंडके नेता सम्मतिपूर्वक चले यह अुल्लेखनीय वस्तु हमने अूपर देखी। क्या अूपर अूपरसे देखने पर यह विचित्र नहीं लगता? अंग्रेज बीसवीं सदीमें राज्यत्यागके लिअे तैयार हो और भारतीय अससे पहलेकी सदीमें परराज्य स्वीकार करनेके लिअे तैयार हों, यह घटना समझने जैसी है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो राजा राममोहनराय जैसे अुदारमतवादी पुरुष भारतकी गुलामीमें हाथ बटायें, यह आजकी दृष्टिसे विचित्र लगता है। अिसी प्रकार गांधी जैसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श रखनेवाले पुरुष अंग्रेजोंके लिअे 'चले जाओ' का नारा लगायें, यह भी अुतना ही विचित्र कहा जायगा।

अेक दृष्टिसे देखें तो यह विचित्रता दूर हो जाती है और अिस युगका सारा अितिहास अेक प्रवाह बनकर अेक ही सूत्रके रूपमें हमारे सामने आता है। यह दृष्टि हमारा जननीति विकासकी है। अिस कालमें राज्यसंस्थाके सम्बन्धमें हमारे विचारोंमें जो नअी वृत्ति और नया दर्शन हुआ असकी दृष्टि है। यहां संक्षेपमें हम अिसे देखेंगे। वैसे असलमें यह घटना अितनी गंभीर है कि असका पूरा विवेचन करनेके लिअे अेक बड़ा ग्रंथ लिखा जा सकता है।

४

राजा राममोहनरायके और असके पहलेके कालमें राज्यसंस्थाके विषयमें हमारे जो विचार थे वे यूरोपके अस समयके विचारोंसे भिन्न थे। हमारी दृष्टि नीतिधर्म अथवा संस्कृति-परायण समाज-व्यवस्थाकी थी, जिसमें राजा और राज्य अनेक अंगोंमें अेक प्रमुख अंगके तौर पर रहते थे। अंग्रेजीमें जिसे 'कल्चरल स्टेट' कहा जाता है असी तरहके हमारे विचार थे। जिसे 'पॉलिटिकल स्टेट' कहा जाता है या 'नेशन स्टेट' कहा जाता है असे राष्ट्रभाव-मूलक भिन्न भिन्न जातिके राज्यकी कल्पना हमारी नहीं थी। डच, अंग्रेज, फ्रेंच अित्यादि प्रजायें अिससे दूसरे विचारवाली थीं। यूरोपमें अिस कल्पनाका अुदय हुआ था और अिस कल्पनाको अपने साथ लेकर वहांके लोग दुनियामें निकल पड़े थे।

भारतमें अुस समय राज्यसम्बन्धी यह भावना नअी चीज थी। अिसलिअे अंग्रेजोंके सम्पर्कमें आने पर राजा राममोहनरायने अुसका सांस्कृतिक मूल्य आंका। अुन्होंने देखा कि जिस नअी प्रजाके पास नअी विद्या है वह विद्या अुसकी भाषा द्वारा भारतको प्राप्त करना चाहिये। अरबी फारसी और संस्कृतके जिस महानिधि अेवं नअी भाषा द्वारा मिल सकनेवाले नये खजानेको देखा और भारतकी सांस्कृतिक सम्पत्ति तथा अुसके विकासके हितमें अुस खजानेकी पुकार की। अिसमें अुन्हें अिंग्लैण्ड और भारत दोनोंका समान हित दिखाअी दिया।

विलियम बेंटिंक और मेकॉलेको 'पोलिटिकल स्टेट' की अपनी भावनाके कारण अिसमें अपने राज्य-संगठनका लाभ मालूम हुआ, राजा राममोहनरायको अिसमें अपने लोगोंका संस्कृति-विकास अथवा विद्या-विकास मालूम हुआ। अिस प्रकार दोनोंका मेल बैठ गया। नतीजा यह हुआ कि भारतमें अंग्रेजी राज्यकी स्थापनाके कदम अुठाये गये। राजा राममोहनरायको अुसमें गुलामी नहीं मालूम होती थी। वे अंग्रेजी राज्यकी नअी तासीरको न पहचान सके अुस समय वह समझमें आ भी नहीं सकती थी। भारतीय देशी राज्य भी 'नेशन स्टेट' — राष्ट्रीय राज्यकी भावनाको साफ तौर पर समझ नहीं पाये थे अिसलिअे आपसमें लड़ते थे और अंग्रेजी राज्यको भी लगभग अैसा अेक नया देशी राज्य मान कर चलते थे।

अंग्रेजी राज्य-व्यवस्था दूसरी तरहसे भी अुस समयकी देशी राज्य व्यवस्थाकी तुलनामें हमारे कुछ लोगोंको अच्छी लगी और पराधीन होने पर भी अखरी नहीं। यह भी अंग्रेजी राज्यकी स्थापनाका अेक कारण जरूर था। परन्तु अुसे हमने गुलामी नहीं समझा क्योंकि हमारा मुख्य विचार सांस्कृतिक सुराज्यकी आत्माका था।

५

परन्तु धीरे धीरे अनुभव होने पर यह विचार बदलता गया। ज्यों ज्यों अंग्रेजी राज्य आगे बढ़ा त्यों-त्यों हम अुसे समझने गये। नयी प्रजाके राज्य सम्बन्धी और अुसके राष्ट्रनिष्ठ विचार हम देखने जानने और पढ़ने लगे। और अुस ढंगसे हम अपने देशके प्रति और अुसके हितके प्रति देखने लगे तदनुसार अुसे आगे बढ़ानेके लिअे तत्पर होते गये और अैसा करते-करते लगभग तीन-चार पीढ़ियोंके भीतर — १९ वीं सदीके अन्त तक हमारे लोगोंको

लगा कि देशमें सुराज्य होना ही काफी नहीं है, सुराज्यके लिअे स्वराज्य होना चाहिये और परराज्य मिटना चाहिये, क्योंकि हम भी अेक राष्ट्र हैं। अिस प्रकारकी विशेष राष्ट्रीय अस्मिताका अुदय पिछली सदीका अेक बड़ा नया लक्षण है।

और अिस अनुभवसे यह मालूम हुआ कि भारतको स्वराज्य प्राप्त करना चाहिये — राष्ट्रके रूपमें स्वतंत्र राज्य बनना चाहिये, नहीं तो अुसका विकास नहीं हो सकता। यह युग-परिवर्तन राजा राममोहनरायके युगसे भिन्न प्रकारका था।

अिन विचारोंके कारण धीरे धीरे अैसा समय आया जब अंग्रेज भी मनसे या बेमनसे समझ गये कि भारत छोड़नेमें ही अुनका हित समाया हुआ है, वर्ना भारत तो जायगा ही, मगर मैत्री भी खो बैठेंगे। अिसके परिणामस्वरूप दोनों देश मित्रतापूर्वक अेक-दूसरेसे अलग हुअे और अिस प्रकार अेक बड़ी क्रांति हुआी। भारतका अेक राष्ट्रके रूपमें और 'पोलिटिकल स्टेट' के रूपमें जन्म हुआ। भारतने सांस्कृतिक विकासमें यूरोपकी यह नया थान अतर गना और हमारी संस्कृति अिस हद तक अधिक विकास करके पुनः अपनी प्राचीन विकास-यात्राको अर्वाचीन युगमें आगे जारी रख सकी है।

अिस नवयात्राके समय हमारी लोकात्माको आगे बढ़नेका मंत्र गांधीजीने दिया। टागोरके कथनानुसार अैसा ही मंत्र १९वीं सदीमें राजा राममोहनरायने अुस समयके लिअे दिया था, यह हम अूपर देख चुके हैं।

अिस यात्राका अितिहास हमारी स्वतंत्रताका अितिहास है। वह अेक सांस्कृतिक वस्तु है — केवल राजनैतिक नहीं। अिस अितिहासको हम अुसके मुख्य मुख्य सूत्रधारोंके द्वारा देख सकते हैं। अुनकी कोअी पांच पीढ़ियां हो चुकी हैं। अिन पीढ़ियोंको अब हम क्रमसे देखेंगे।

२

राजा राममोहनरायका युग

[भारतीय स्वातन्त्र्य-यात्राकी पहली पारी]

१

राजा राममोहनरायका जमाना यानी १९वीं सदीका प्रारम्भकाल। बंगालमें अुस समय नयी अंग्रेजी राज्य-व्यवस्था अच्छी तरह जम गयी थी। अुस प्रान्तकी राज्यक्रान्ति १७५७ के बादके १० वर्षोंमें पूरी हो चुकी थी। बंगालमें अिस राज्य-व्यवस्थाको जमानेके लिअे हेस्टिंग्स और कार्नवालिस जैसे चतुर अंग्रेजोंने काम किया था।

पिछले नवाबोंका राज्य और टूटते हुअे मुगल राज्यके जमानेमें जैसी अव्यवस्था थी अुसकी तुलनामें यह नया जमाना कुछ ठीक और स्थिर लगता था। कलकत्तेके बड़े धनी बंगाली अंग्रेजोंके साथ मिलकर अनेक साझियोंके रूपमें व्यापार-धन्धेसे लाभ अुठा सकते थे। और जमींदारोंके सिलसिलेमें स्थायी जमाबन्दी करके भी कार्नवालिसने कायम कर लिया था।

मुगलोंमें औरंगजेबने भूल करके हमारी प्रजाकी संस्कृति और धर्ममें हस्त-क्षेप किया। अिस मामलेमें हम अत्यन्त जाग्रत प्रजा हैं। किसीके अैसे हस्तक्षेपको हम जरा भी सहन नहीं कर सकते। अिसलिअे अुस राज्यको हमने जहाँ-तहाँ तोड़ डाला। नया राज्य खड़ा करनेका श्रेय यदि किसीको दिया जा सके तो वह मराठा राज्यको दिया जा सकता है। लेकिन वह अिस जिम्मेदारीमें पूरा नहीं अुतरा। सन् १८०० तक अुस राज्यकी असफलता दिखाई देने लगी थी। राजनीतिक दृष्टिसे भारत छिन्न भिन्न हो गया था। १९वीं सदीके प्रारंभिक चतुर्थांश तक तो ज्यादातर भारत लगभग पराधीन हो गया और सारा भारत अंग्रेजोंके हाथमें चला गया था। १८२० तक जिस भागमें आजकल पश्चिमी पाकिस्तान है अुसे छोड़कर बाकीका लगभग सारा हिन्दुस्तान अंग्रेजोंके हाथमें चला गया था।

यह नया राज्य शुरूमें हमें अखरा नहीं था। बल्कि बीचके समयकी अंधाधुंधी और पिंडारियोंकी लूटमारके बाद नये राज्यमें प्रजाको निश्चिन्तता-

सी मालूम हुअी। अिसलिअे अंग्रेजी राज्यकी जमानेमें हमारे लोग शरीक हुअे। और किसीको असा नहीं लगा कि हम अपनी गुलामीकी जड़ें मजबूत करनेमें भाग ले रहे हैं।

२

परन्तु नया युग अपने साथ नये प्रश्न और नये परिवर्तन तो लाया ही था। सचमुच देशमें अेक बड़ी सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति हुअी थी जो अंतमें सांस्कृतिक बनी और समग्र लोकजीवन पर असर डालने लगी। अुसके मुख्य पहलू देखने चाहियें।

अंग्रेज शासक भारतमें बसकर राज्य नहीं करते थे। हिमालय और नेपालमें तथा असे अन्य पहाड़ी भागोंमें रहने और बस्तियां कायम करनेका शुरूमें अुनका अिरादा था, परन्तु वह टिका नहीं। अंग्रेज पांच-पांच वर्षमें भारतके रुपयेसे घर जाते रहे और भारत पर राज्य करते रहे। जैसे मुसलमान भारतमें ही बस कर यहांके निवासी बन गये, वैसे अंग्रेज नहीं बने। अिससे यह कहना चाहिये कि जिसे सचमुच परराज्य कहा जा सके असा राज्य पहले-पहल अंग्रेजोंका ही भारतमें स्थापित हुआ।

शासकके रूपमें अंग्रेज अपनेको भारतके लोगोंसे अूंचा मानते थे, यह स्पष्ट है। भारतके अूंच-नीच भावसे भरे सामाजिक वातावरणमें तो खास तौर पर असा ही हो सकता था। अिस प्रकार राज्यमें भेदभाव और देशियोंके प्रति हीनभावके बीज बो दिये गये।

अफ्रीकामें जैसे अुपनिवेश कायम हुअे और अंग्रेज घर बनाकर रहे वैसा भारतमें नहीं हुआ। अिसलिअे आज जैसे दक्षिण अफ्रीका, कीनिया आदिमें अंग्रेज गोरे हैं वैसे भारतमें भारतीय गोरोंकी आबादी नहीं है। हां, अेंग्लो अिण्डियन जाति जरूर पैदा हुआ, परन्तु अुसका कारण भिन्न है।

अंग्रेजोंको राज्यकी जरूरत यह थी कि भारतीय लोग अुनकी नौकरीमें, व्यापारमें और सेनामें भरती हों। अिसके लिअे अेक नया मध्यमवर्ग खड़ा होता गया। अिस चीजका भारतीय समाज पर तरह तरहका असर हुआ। दो प्रजायें आपसमें मिलने लगीं, परन्तु समानभावसे नहीं। यह स्पष्ट है कि भारतीय कुछ नीचेपनका भाव रखकर चलते थे।

अंग्रेज लोग यूरोपकी नयी सभ्यता लेकर आये। अुसका स्वरूप विज्ञान

जुसका धन मिलकर अुसे नया रूप दे रहा था। परंतु यह चीज अस समय किसीको खास तौर पर महसूस नहीं हुआी थी। वह अक नया आरंभ होनेवाला प्रबल प्रभाव था असा आज हम कह सकते हैं।

अंग्रेज भी भारतके लोगोंको औसाी बनानेमें दिलचस्पी रखते थे। यह सच है कि पुर्तगाली लोगोंके बराबर नहीं फिर भी अुन्होंने आँसाओ मिशन प्रवृत्ति भारतमें शुरू की। बंगालमें डच लोगोंकी यह प्रवृत्ति बहुत पहलेसे जारी थी। यद्यपि अंग्रेज अपने व्यापारको ही मुख्य वस्तु मानते थे फिर भी धर्म-परिवर्तनको छोड़ नहीं सकते थे। गोरोंका नभी दुनियामें जो प्रयाण शुरू हुआ वह अिस्लामका मुकाबला करने और अुसे दबानेके लिअे था। असा करते हुअे अुन्हें व्यापार नजर आया जिसलिअे व्यापारमें अिस्लामी प्रजाको प्रतिस्पर्धी समझकर गोरोंने अुन्हें अिस क्षेत्रसे हटाया। धीरे धीरे अिसमें वे सफल हुअे। फिर भी धर्मान्तरका मूल आवेग थोड़ा मात्रामें तो जारी ही रहा।

भारतके हिन्दुओंमें मिशनरियोंने औसाओी धर्म फैलानेके प्रयत्न शुरू किये। जिसका असर लोक-जीवन पर तुरन्त दिखाओ दिया क्योंकि जैसा पिछले प्रकरणमें कहा गया है हम धर्म और संस्कृतिके मामलेमें जाग्रत प्रजा हैं।

यह असर केवल धार्मिक ही नहीं परन्तु सामाजिक भी था। हमारे सामाजिक रीति रिवाज धार्मिक आचार वगैरा परधर्मियोंकी आलोचनाके विषय बने। हमारा स्त्रियों वगैरा पर नभी आलोचना होने लगी। अक जमानेमें जिस्लामके आनेसे जो हुआ था अुससे भिन्न मुल्ला नये यूरोपियन आसाओ धर्म और असकी संस्कृतिके संघर्ष भी शुरू हुआ।

खानपान विवाह आदि सबमें नयी हो बातें देखनेको मिलीं। अस लोगोंके लिअे कि गोरोंके कारण खराब अक प्रतिष्ठित पेश हो सकता है। जिससे स्पष्ट हो दोगलापन बनी। जिसी तरह पोशाक आदिमें भी हुआ।

अिस प्रकार अंग्रेजोंके आनेसे जो नया युग आरंभ हुआ अुसके सम्बन्धमें और भी कुछ बातें गिनायी जा सकती हैं। अुस समयका सारा अितिहास सामग्रीकी जांच करके ये बातें अधिक स्पष्ट निश्चित और पूर्ण बनाने जरूरी हैं। १७०० से लगभग १८०० तकके अिस कालका स्थितिको साफ करके अुसका प्रामाणिक और व्यवस्थित अितिहास अब समाजके सामने पेश किया जाना चाहिये।

३

राजा राममोहनरायने जिस नये युगमें पुनरुत्थानका काम किया। भारतको किस प्रकार व्यवहार करना चाहिये जिसकी अेकदा बात मह निश्चित करके अुन्होंने लोर जीवनका अेक खास भाग पर लगाया। जिसलिअे वे भारतकी नअी यात्राके पहले मार्गदृष्टा माने जायेंगे। अुन्होंने जो मुख्य मुद्दे बताये अुन्हें संक्षेपमें नीचे दे दूं

१ अंग्रेजोंके पास जो नअी विद्या है वह हमें लेनी चाहिये।

२ असलिअे हमें अुनकी भाषा सीखनी चाहिये।

(जिन लोगोंने नौकरी जिसलिये आर्थिक लाभ भी था जो अुसमें प्रेरक और आकर्षक बना।)

४ नयी वस्तु धर्ममें धर्मदृष्टि और मूर्तिपूजा वगैराकी तरफ अुन्होंने ध्यान दिया। ब्रह्मसमाजकी स्थापना की।

लेकिन वे मानते थे कि प्रजाको स्वतंत्र नाश होने दिये बिना यह सब किया जाना चाहिये। वे जीमाओं रहा बने। हां जीमाओं धर्मका अुन्होंने जितना सांगोपांग अध्ययन किया कि आसाआ पादरियोंको भी अुनका लोहा मानना पड़ता था।

६ वह फ्रांस और अमरीकाकी क्रांतियोंका युग था। अुनका अुन्होंने कद्र की थी। परंतु भारतके बारेमें अुनका यह विश्वास था कि अंग्रेजी राज्य आया तो भला आया अगर हम अुससे लाभ अुठायेंगे तो वह सुराज्य बन सकेगा।

अंग्रेजोंने अपना राज्य किस ढंगसे और कैसे जमाया अिसका चित्र *लैकीने लिखा पाठकोंको मैं अपना (गुजराती) पुस्तक* भारतमें अंग्रेज व्यापारोंवाला पुस्तकका अिशारा करके अिस विषयमें सन्तोष करूंगा।

और भारतके व्यापार धंधे पर अिसका क्या असर होने लगा यह भी अिस पुस्तकमें मिल सकेगा।

यह सब पहले बंगालमें स्पष्ट हुआ यह समझमें आ सकता है। वहां अंग्रेजोंका नया राज्य पहले जमा और जमा त्यों पर आगे चक्कर देशभरमें फैला।

३

१८५७ का युग

१

राजा राममोहनराय १८३३ में अिंग्लैण्डमें गुजर गये। भारतके लोक-जीवनकी प्रगतिके सम्बन्धमें अुन्होंने दो मुख्य मार्ग स्थापित किये :

१ संस्कृत, फारसी और अरबी द्वारा प्राप्त विद्याधनके अलावा अंग्रेजी भाषा सीखकर अुसके द्वारा अिंग्लैंडकी नयी विद्यायें हस्तगत की जायँ।

२ जन-जीवनमें जागृति और नवचेतनका संचार करनेके लिअे प्राचीन अद्वैतवादकी बुनियाद पर नया धर्म-विचार पुनः स्थापित किया जाय और अुसके आधार पर भारतीय समाज-जीवनमें पुनरुत्थान और सुधारका काम जारी किया जाय। सतीप्रथाका विरोध, विधवा-विवाह, स्त्री-शिक्षा आदि बातें अिसीका परिणाम था।

परन्तु भारतके धर्म-संस्कृतिके मामलेमें वे स्वस्थ और स्वधर्मनिष्ठ रहे। अिसलिअे आमतौर धर्म-परिवर्तनकी प्रवृत्तिको अुन्होंने पसन्द नहीं किया और भारतके लोकाचारमें अुस तरहके सुधारकी अवहेलना की।

जिस प्रकार राजा राममोहनरायने भारतमें नवयुगका आरम्भ किया। अंग्रेज शासक अर्थात् मेकॉले, बेंटिक आदि लोग अपने ढंगसे वस्तुओंको पसन्द करते थे। परन्तु अुनकी भूमिका और दृष्टि दूसरी थी। राममोहनराय देशकी सत्त्वनिष्ठ प्रगतिकी दृष्टिसे सोचते थे, अंग्रेज अपने राज्यकी प्रतिष्ठा और स्थिरताकी दृष्टिसे और अपनी संस्कृतिकी अुत्तमताकी दृष्टिसे विचार करते थे। वे धर्म-परिवर्तनकी प्रवृत्तिको अिष्ट मानते थे और भारतमें पश्चिमी ढंगसे समाज-परिवर्तन भी होता रहे तथा जैसा मेकॉलेने अपने अेक स्थान पर अपनेमें कहा था, भारतीय लोग अंग्रेजी और अुनकी सांस्कृतिक पूजक और अनुसरण करनेवाले बनें अिसे वे वांछनीय वस्तु मानते थे।

राजा बाहरस्य कारणम् के अनुसार अंग्रेजोंको अिस प्रकारका असर होने लगा था। और अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं। परन्तु राजा राममोहनरायकी दृष्टि अिस प्रकारके परिवर्तनके विरुद्ध थी, क्योंकि भारतके

सांस्कारिक या सांस्कृतिक जीवनमें वे जो पुनरुत्थान चाहते थे अुसमें अिसे कोअी स्थान नहीं था। भारत अपना राष्ट्रधर्म भूलनेको तैयार नहीं था।

अिस अेक मूल दृष्टिभेदके कारण ही १८५७ की प्रचंड आग भड़क अुठी। भारतीय और विलायती संस्कृतियोंके दो स्वतंत्र रसायनोंके मिश्रणका यह पहला परिचय था। अुसने नाना पक्षोंके आवरण झाड़ दिये और अुसके साथ राममोहनरायकी पारी पूरी हुअी। अुसके बाद अुनके अुत्तराधिकारी पारीका आरंभ हुआ।

२

अिस समयकी कालगणना मानें रूपमें देनी हो तो वह १८३५ से १८८५ तक मानी जायगी। अुसके दो निश्चित भाग हो जाते हैं — १८५७ से पहलेका भाग और अुसके बादका भाग। १८५७ से पहलेके भागके बल वे ही थे जो अूपर बताये गये हैं (१) राजा राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित पुनरुत्थानका बल और (२) अंग्रेजोंकी लायी हुअी पाश्चात्य सभ्यताकी ओर दोनोंको मोड़नेवाला राज्यबल।

अंग्रेजोंके राज्यबलसे अलग माने जा सकनेवाले नये दो बलोंमें से अेक मिशनरी बलका अुल्लेख हम कर चुके हैं। दूसरा बल था हमारी विद्याओंका अध्ययन आरंभ करनेवाले यूरोपीय पंडितोंका बल। अुनमें विलियम जोन्स, विलियम कोलब्रूक, टॉड, प्रिन्सेप, मैक्समूलर, फर्ग्युसन, मोनियर विलियम्स आदि माने जायेंगे। अिस वर्गके लोगोंकी दृष्टि मिशनरियों जैसी छिछली नहीं, परन्तु गहरी और अुदार थी। वे हमारी विद्याओं और ग्रन्थोंको अपनी अध्ययन-प्रणालीका नयी और तटस्थ दृष्टिसे देखने लगे। अुससे हमें भी नवीन प्रतीत होनेवाले दृष्टिबिन्दु, दृष्टियां और वस्तुअें प्राप्त होने लगीं। आगे चलकर अिस ढंगसे अध्ययन करनेकी पद्धति भी देशी विद्वान अपनाने लगे और विदेशी विद्वानों जैसे ही सम्मानके पात्र बने। तेलंग, भांडारकर आदि अैसे ही महापुरुष माने जायेंगे।

यहां यह अुल्लेखनीय है कि यह तीसरा विद्याबल १८५८ में जो तीन विश्वविद्यालय — कलकत्ता, बम्बअी और मद्रास — स्थापित हुअे अुनके साथ भी जुड़ जाता है। अिन विश्वविद्यालयोंके द्वारा हमारी प्राचीन विद्याओंको विशाल पद्धतिसे पढ़ानेका काम १८५७ के बादके कालमें व्यवस्थित रूपसे

आरम्भ हुआ। ये विश्वविद्यालय अंग्रेजी भाषाके द्वारा काम करने लगे, अिसलिअे स्पष्ट है कि अपने आप — अन्य किसी कारणसे नहीं तो अिस भाषाके माध्यमके ही कारण — पुरानी शराब नअी बोतलोंमें भरी जाने लगी।

३

अंग्रेजी राजनीति अेक और बातमें भी आगे बढ़ रही थी। वह थी अपने राज्यको धीरे धीरे मजबूत और अेकछत्र बनानेकी बात। वेल्सलीने फौजी मदद देकर बहाने देशी राजाओंको अपने कब्जेमें कर लिया था। फिर भी अनेक राज्य अलग-अलग थे, अंग्रेजोंका राज्य सारे देशमें अेकचक्र नहीं था। अिससे सवालों और व्यवस्थामें कुछ कमी जरूर रहती थी। अुसे दूर करनेका काम भी जल्दीमें डलहौसीके कार्यकालमें अंग्रेजोंने हाथमें लिया। अिससे अपने-आप देशी राजाओं और नवाबोंमें असन्तोष और विरोध पैदा हुआ। विधर्मी लोग हमारे देशमें अपनी जड़ जमाकर हमारे देशी राज्योंको नष्ट कर रहे हैं, अिसमें हमारी सत्त्वहानि और मानभंग है — अैसा असर लोकमानस पर हुआ।

नअी शासन-नीतिके अेकाध दूसरे असर भी विचारने जैसे माने जायेंगे। ज्यों-ज्यों देशी राज्योंके साथ युद्धके अवसर कम होते गये और नया राज्य स्थिर होता गया, त्यों-त्यों सेनाकी आवश्यकता घटती गअी। अंग्रेज अपनी खड़ी सेना रखते थे, अुसके अलावा रजवाड़ोंमें सामन्तशाही पद्धतिसे सेनामें भरती की जाती थी। ये दोनों प्रकारकी सेनायें कम हो गअीं। अिससे अेक प्रकारकी बेकारी आअी, जिससे देशमें राजनीतिक लूटपाट और पिंडारी-ठगोंका जमाना आ गया। अंग्रेजोंने अुन्हें सख्तीपूर्वक दबाया और ये लोग जमीन पर आबाद होकर खेतीमें लगे। व्यापार धंधेमें भी कंपनी सरकारका शोषण शुरू हो ही गया था। अिस प्रकार अंग्रेजी राज्यकी स्थिरताके आर्थिक परिणाम भी धीरे धीरे दिखाअी देने लगे थे।

अंग्रेज कर्मचारियोंकी वृत्ति भारतीय प्रजाके प्रति जिस कालमें अच्छी थी। बादमें प्रजाके प्रति सन्देह रखकर काम करनेका युग आया, वैसा अिस कालमें नहीं था। अैसा नहीं कहा जा सकता कि अंग्रेज शासकोंमें यह भान पैदा नहीं हुआ था कि भारतीय प्रजामें जो साम्प्रदायिक भेदभाव है और हिन्दुओंमें जातपांतका जो अूंचनीच भाव है वह राजनीतिक क्षेत्रमें विदेशी राज्यको राजनीतिक तौर पर मजबूत रखनेमें अुपयोगी हो सकता है, परन्तु वह

सांस्कारिक या सांस्कृतिक जीवनमें वे जो पुनरुत्थान चाहते थे, अुसमें अंग्रेजोंको स्थान नहीं था। भारत अपना राष्ट्रधर्म भूलनेको तैयार न था।

अिस तरह मूल दृष्टिभेदके कारण ही १८५७की प्रचंड आग भड़क अुठी। भारतीय और विदेशी संस्कृतियोंका स्वतंत्र रूपसे आमने सामने मिलनेका यह पहला परिचय था। अुसने दोनों पक्षोंको आत्मभान करा दिया और अुसके साथ राममोहनरायकी पीढ़ी पूरी हुआ। अुसके बाद अुनके अुत्तराधिकारियोंकी पीढ़ीका आरंभ हुआ।

२

अिस समयकी कालगणना मोटे रूपमें देनी हो, तो वह १८२८ से १८८५ की मानी जायगी। अुसके दो निश्चित भाग हो जाते हैं — १८५७ के पहलेका भाग और अुसके बादका भाग। १८५७ के पहलेके भागके दल वे ही थे जो अूपर बताये गये हैं: (१) राजा राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित पुनरुत्थानका दल और (२) अंग्रेजोंकी लायी हुआी पाश्चात्य सभ्यताकी ओर देशको मोड़नेवाला राज्यवर्ग।

अंग्रेजोंके राज्यवर्गसे अलग माने जा सकनेवाले नये दो वर्गोंमें से अेक मिशनरी वर्गका अुल्लेख हम कर चुके हैं। दूसरा वर्ग था हमारी विद्याओंका अध्ययन आरंभ करनेवाले यूरोपीय पंडितोंका वर्ग। अिनमें विलियम जोन्स, विल्किन्स, कोलब्रूक, टॉड, प्रिन्सेप, मैक्समूलर, फर्ग्यूसन, कनिंघम अित्यादि माने जायंगे। अिस वर्गके लोगोंकी दृष्टि मिशनरियों जैसी छिछली नहीं, परन्तु गहरी और अुदार थी। वे हमारी विद्याओं और प्रथाओंको अपनी अध्ययन प्रणालीकी नयी और तटस्थ दृष्टिसे देखने लगे। अुससे हमें भी नवीन प्रतीत होनेवाले दृष्टिबिन्दु, दृष्टियां और वस्तुअें पेश होने लगीं। आगे चलकर अिस ढंगसे अध्ययन करनेकी पद्धति भी देशी विद्वान अपनाने लगे और विदेशी विद्वानों जैसे ही सम्मानके पात्र बने। तेलंग, भांडारकर आदि अैसे ही महारथी माने जायंगे।

यहां यह अुल्लेखनीय है कि यह तीसरा विद्यावर्ग १८५८ में जो तीन विश्वविद्यालय — कलकत्ता, बम्बअी और मद्रास — स्थापित हुअे अुनके साथ भी जुड़ जाता है। अिन विश्वविद्यालयोंके द्वारा हमारी प्राचीन विद्याओंको विदेशियोंकी पद्धतिसे पढ़ानेका काम १८५७ के बादके कालमें व्यवस्थित रूपसे

आरंभ हुआ। ये विश्वविद्यालय अंग्रेजी भाषाके द्वारा काम करने लगे, अिसलिये स्पष्ट है कि अपने-आप — अन्य किसी कारणसे नहीं तो अिस भाषाके माध्यमके ही कारण — पुराना गौरव नअी बातोंमें भरा जाने लगा।

२

अंग्रेजी राजनीति अेक और बातमें भी आग लगा रही थी। वह थी अपने राज्यको धीरे धीरे मजबूत और अेकछत्र बनानेकी बात। वेल्स्लीने फौजी मदद देनेके बहाने छोटे राजाओंको अपने कब्जेमें कर लिया था। फिर भी अनेक राज्य अलग-अलग थे। अंग्रेजोंका राज्य सारे देशमें अेकछत्र नहीं था। अिससे संचालन और व्यवस्थामें कुछ कमी जरूर रहती थी। अुसे दूर करनेका काम भी अन्तमें डलहौजीने कायदेसे अपने हाथमें लिया। अिससे अपने-आप देशी राजाओं और नवाबोंमें असन्तोष और विरोध पैदा हुआ। विधर्मी लोग हमारे देशमें अपनी जड़ जमाकर हमारे राजाओंको नष्ट कर रहे हैं, जिसमें हमारी सत्त्वहानि और मानभंग है, अैसा असर लोक मानस पर हुआ।

नअी शासन-नीतिके असली दूसरे असर भी विचारने जैसे माने जायेंगे। ज्यों ज्यों देशी राज्योंके साथ युद्धके अवसर कम होते गये और नया राज्य स्थिर होता गया, त्यों-त्यों सेनाकी आवश्यकता घटती गअी। अंग्रेज अपनी सेना रखते थे, अुसके अलावा देशी राज्योंकी सामन्तशाही पद्धतिसे सेनायें भरती की जाती थीं। ये दोनों प्रकारकी सेनायें कम हो गअीं। अिससे अेक प्रकारकी बेकारी आअी, जिससे शुरूमें राजनीतिक लूटमार और पिंडारी-ठगोंका जमाना आ गया। अंग्रेजोंने अुन्हें सख्तीपूर्वक दबाया और अनेक लोग जमीन पर आधार होकर खेतीमें लगे। व्यापार धंधेमें भी कंपनी सरकारका शोषण शुरू हो ही गया था। अिस प्रकार अंग्रेजी राज्यकी स्थिरताके आर्थिक परिणाम भी धीरे धीरे दिखाअी देने लगे थे।

अंग्रेज कर्मचारियोंकी वृत्ति भारतीय प्रजाके प्रति अिस कालमें अच्छी थी। बादमें प्रजाके प्रति सन्देह रखकर काम करनेका युग आया, वैसा अिस कालमें नहीं था। अैसा नहीं कहा जा सकता कि अंग्रेज शासकोंमें द्वेष भाव पैदा नहीं हुआ था कि भारतीय प्रजामें जो साम्प्रदायिक भेदभाव है और हिन्दुओंमें जातपांतका जो अूंचनीच भाव है, वह राजनीतिक क्षेत्रमें विदेशी राज्यकी भेदनीति द्वारा मजबूत रखनेमें अुपयोगी हो सकता है, परन्तु वह

जितना उग्र नहीं था — जितना उग्र होनेकी जरूरत भी उस समय अ महसूस नहीं हुआी होगी।

फिर भी इस बंगाल नव राजनीतिक प्रणालीके कारण पश्चिमी ढंगके विचारोंका उसमें अनन्त कारण तथा इसी तरहकी बातें करके अंग्रेजी अंग्रेजी राज्य बनानेके लिओ उपाय सब कुछके कारण खास तौर पर असर भारतमें वातावरण गरम हुआ और इसी सबने अंग्रेजी राज्यके खिलाफ विरोध करनेका कदम उठाया। उसमें यह बात उल्लेखनीय है कि बंगाल बम्बओ दक्षिण भारत बगैरा भागोंमें जिस कदमके साथ कुछ सम्बन्ध रखनेमें नहीं आया। जिससे उसका विरुद्ध रहा। सारा काम सफल नहीं हुआ और अंग्रेज भारतमें टिक गये। लेकिन उनकी नीतिमें दो-तीन बड़े परिवर्तन जरूर हुअे जो राष्ट्र जीवनमें उल्लेखनीय माने जायेंगे। उनकी मुख्य बातें संक्षेपमें ये थीं

१ रैयतके धर्मके मामलेमें अेक विशेष प्रकारकी तटस्थ-नीति रखी जाय यह अंग्रेजी शासन-नीतिका मुख्य सूत्र बना। समाज-सुधारके बारेमें भी यही नीति पसन्द की गअी।

२ कंपनी सरकार न रहकर अिंग्लैण्डकी रानीका राज्य भारतमें स्थापित हुआ।

३ पहले शस्त्रास्त्रकी दृष्टिसे राजा और प्रजा समान थे। सिपाहीकी खोजाजाम बादमें उसमें जो असमानता आअी वह उस समय नहीं थी। प्रजा द्वारा विद्रोह न करे इस खयालसे सुरक्षाके लिओ हथियार बन्दीका कानून बनाया गया।

४ यह वचन दिया गया कि नौकरियां आदिमें सबके प्रति समान भाव रखा जायगा।

५ विश्वविद्यालय स्थापित किये गये।

६ हिन्दू मुसलमानोंके प्रति भेदनीतिका आरंभ हुआ। सिपाही विद्रोहमें दोनों जातियोंके लोग शामिल होकर लड़े थे। यह खतरा फिरसे नहीं खड़ा होना चाहिये यह राजनीतिका जाग्रत भाग बना।

स्पष्ट है कि ये सब बातें राष्ट्र जीवनको भी नअी दिशामें ले जानेवाली साबित हुआीं।

अिसका दूसरा पहलू भी है जो हमारी स्वराज्य यात्रामें अेक प्रेरक भावनाके रूपमें काम करता रहा है। वह भावना यह थी कि सिपाहियोंका

विरुद्ध कलकत्तेवाली घटना राष्ट्रकी मुक्तिके लिये की गयी हिंसक क्रान्ति अथवा सशस्त्र विद्रोह था और उसके साथ क्रान्तिको फिर जागृत करनेका मनोरथ जुड़ा हुआ था। विद्रोह हिन्दुस्तानकी दशामें अब अलग शाखा निर्माण की है। उसका उल्लेख प्रसंगमें यहां करना ठीक होगा।

४

शस्त्र द्वारा राज्यसत्ताका विरोध करना और उसे उलट देना यह क्रान्तिका अितिहास-प्रसिद्ध पद्धति है। देशी राजाओंने अिस ढंगसे कम्पनी सरकारके विरुद्ध अलग-अलग समयमें भिन्न भिन्न कारणोंसे और देशके विभिन्न भागोंमें यथाशक्ति संगठन बनाकर काम किया था। मीर कासिम हैदर और टीपू नाना फड़नवीस वगैराके प्रयत्नोंमें अिस प्रकारकी झलक मिलती है। १८५७ की घटना अिसी प्रकारका अन्तिम प्रयोग माना जा सकता है। अिसलिये उसका भारतके अंदर स्वाधीनताकी भावना-भूमिमें महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

दूसरी अितिहास प्रसिद्ध पद्धतिका दूसरा अंग यह है कि देशकी राज्य सत्ताको पलटनेके लिये उसके शत्रुओंकी सहायता ली जाय। १८५७ में अिस तरहकी कोअी मदद खास तौर पर ली गयी हो अैसा नहीं लगता। परन्तु अिससे पहलेके समयमें फ्रेंच डच आदि लोगोंकी मदद लेकर देशी राजा और नवाब लोग अंग्रेजोंके विरुद्ध लड़े थे अिसके उदाहरण मिलते हैं। १८५७ के बादके कालमें अिस पद्धतिका जाग्रत प्रयोग हुआ है। यद्यपि अिसका समय १९वीं सदीके अन्तमें आता है फिर भी उसी मूल भावनाको १८५७ की घटनाने प्रेरित किया था यह साफ तौर पर बताया जा सकता है। (सिपाही विद्रोह सम्बन्धी वीर सावरकर आदिके ग्रन्थ)

अिसी परम्पराका अन्तिम उदाहरण देना हो तो वह था सुभाषबाबूका जापानकी सहायतासे आजाद हिन्द फौज खड़ी करके भारत पर आक्रमण करनेका प्रयत्न था।

भारतकी आजादीकी लड़ाअीकी अिस पद्धतिका तन्तु समय-समय पर देश काल और युगके अनुसार भिन्न भिन्न रूपमें अन्त तक जारी रहा है। अब अिसे विभाग करके कहना हो तो उसे जगतकी पुरानी राजनीतिमें प्रमाणभूत हिंसाकी पद्धति कहा जा सकता है। १८५७ की घटना अिस

पद्धतिके पुरस्कर्ताओंका प्रखर भावना-केन्द्र बनी है। अिस घटनामें हमारे लोगोंको अुस समयकी हमारी संस्कृतिकी रक्षा होने जैसी बात लगी थी। अंग्रेज अपनी संस्कृति भारतमें फैलाने लगे थे। हमारी प्रजा जैसा मौका हाथ लगा अुसके अनुसार अुसका विरोध करने लगी। और अुस हद तक वह प्रयत्न सफल माना जायगा। क्योंकि यहांके लोगोंके धार्मिक और सामाजिक जीवनमें अर्थात् अुनके मजहबी रीति रिवाजोंमें दखल न देना और शासकोंका तटस्थ भावसे काम करना अिस घटनाके बाद अंग्रेजी राज्यका नीतिसूत्र-सा बन गया। लोगोंको भी यह पसन्द आया। नौकरियां वगैरामें समानता रखेंगे, धर्ममें हस्तक्षेप नहीं करेंगे अित्यादि बातें रानी विक्टोरियाकी घोषणामें कही गयी, वह अिस घटनाका तात्कालिक फल कहा जा सकता है।

परन्तु अिससे हमारी जनता अपने बारेमें अपने रीति रिवाजमें सुधार करनेके विषयमें सुस्त या बेपरवाह बन गयी और सोता रहा सो बात नहीं। कारण १८५७ के जमानेकी क्रान्तिमें विद्रोह तो अेक अंग था। अुसके साथ साथ अनेक दिशाओंमें लोक जीवन विकसित हो रहा था। राजा राममोहनरायने जो युगबीज अकेले हाथों बोया था वह फूल कर अुगा था और अुसका पौधा तेजीसे पनप कर शाखा प्रशाखायें निकालता जा रहा था। ब्रह्मसमाज और अंग्रेजी शिक्षा — अिन दो जबरदस्त नयी बातोंका हमारे जीवन प्रवाहमें समावेश हो जानेसे प्रजा जीवनमें नये-नये रस खिलने लगे थे। मोटे तौर पर यह हिसाब लगाया जा सकता है कि वह काल १८५७ के विद्रोहसे लेकर १८८५ तकका काल था।

४

१८५७ से १८८५

[पुनरुत्थानका अुष:काल]

अेक दृष्टिसे देखें तो यह युग स्वातन्त्र्य विचारके अभ्युदयका आधारभूत युग माना जायगा। अिसमें हुअे मनोमंथनके नवनीतके रूपमें १८८५ में राष्ट्रीय कांग्रेसका जन्म हुआ। ये मनोमंथन हमारे राष्ट्र जीवनके सभी मुख्य अंगोंमें पैदा हुअे थे और अुसके मंथनकारोंकी नामावली हमारे अर्वाचीन युगके महान राष्ट्रपुरुषोंके रूपमें अितिहासमें अंकित हुअी है।

अंग्रेज शासकोंने अेक तरफ हथियारबन्दीका कानून* बनाकर और दूसरी ओर अंग्रेजी विश्वविद्यालय खोलकर अिस युगका प्रारंभ किया। नये राज्यकर्ता और नअी राज्यपद्धतिकी भी अुन्होंने स्थापना की। अुसके साथ साथ अंग्रेज शासकोंके मनमें यह डर भी बैठ गया कि भारतीय जनता कब क्या कर बैठे यह नहीं कहा जा सकता। अिसलिअे अैसा कहा जा सकता है कि अविश्वास और सावधानीका मानस नयी राजनीतिकी भूमिका बन गया।

रचनात्मक सुधारवादका जन्म

सत्तावनके विद्रोहका अुग्र मानस दबा दिया गया। लेकिन यह सब राखके नीचे दबी हुअी आगकी तरह हुआ होगा। अुसे फिरसे भड़क अुठनेमें समय लगा। हिंसक क्रान्तिका यह मानस १८८५ के युगमें प्रत्यक्ष काम करने लगा था अैसा नहीं मालूम होता।

परन्तु जिसे रचनात्मक सुधारवाद कहा जा सकता है अैसा नव विधान देशके विविध क्षेत्रोंमें अुत्पन्न हुआ। अिसके पराक्रमी पुरुषोंको अिस

---

* अुस समय हथियार विज्ञानके साधन आधुनिक नहीं बने थे। दोनों पक्षोंमें अिस बारेमें समानता थी अैसा कहा जा सकता है। हथियारबन्दीके कानून द्वारा अंग्रेजी राज्यने भारतमें अपना पंजा जमा लिया और लोगोंके शस्त्रबलको स्थायी रूपमें दबा दिया।

पद्धतिके पुरस्कर्ताओंका प्रेरक भावना-बल बनी है। अिस सत्तामें हमारे लोगोंको अस समयकी हमारी संस्कृतिकी रक्षा हानि जैसी बात लगा था। अंग्रेज अपनी संस्कृति भारतमें फैलाने लगे थे। हमारी प्रजा असी दौरमें हाथ लगा अपने अनुसार अुसका विरोध करने लगा। और अस ... वह प्रयत्न सफल माना जायगा। क्योंकि यहांके लोगोंके धार्मिक और सामाजिक जीवनमें अर्थात् अनके रूढ़िगत रीति रिवाजोंमें दखल न देना और नामसेवा तटस्थ भावसे काम करना अिस घटनाके बाद अंग्रेजी राज्यकी नीतिसूत्र-सा बन गया। लोगोंको भी यह पसन्द आया। नौकरियों वगैरामें समानता रखेंगे धर्ममें हस्तक्षेप नहीं करेंगे अित्यादि बातें रानी विक्टोरियाकी घोषणामें कही गयी वह अिस घटनाका तात्कालिक फल कहा जा सकता है।

परन्तु अिससे हमारी जनता अपने बारेमें अपने रीति रिवाजमें सुधार करनेके विषयमें सुस्त या बेपरवाह बन गयी और सोती रही सो बात नहीं। कारण १८५७ के जमानेकी क्रान्तिमें विद्रोह तो अेक अंग था। अुसके साथ साथ अनेक दिशाओंमें लोक-जीवन विकसित हो रहा था। राजा राममोहनरायने जो युगबीज अकेले हाथों बोया था वह फूट कर अुगा था और असका पौधा तेजीसे पनप कर शाखा प्रशाखायें निकालता जा रहा था। ब्रह्मसमाज और अंग्रेजी शिक्षा — अिन दो जबरदस्त नयी बातोंका हमारे जीवन प्रवाहमें समावेश हो जानेसे प्रजा जीवनमें नये-नये रंग खिलने लगे थे। मोटे तौर पर यह हिसाब लगाया जा सकता है कि वह काल १८५७ के विद्रोहसे लेकर १८८५ तकका काल था।

४

१८५७ से १८८५

[पुनरुत्थानका अुषःकाल]

अब दृष्टिसे देखें तो यह युग स्वातन्त्र्य विचारके अुदयका आधारभूत युग माना जायगा। अिसमें हुअे मनोमन्थनके नवनीतके रूपमें १८८५ में राष्ट्रीय काँग्रेसका जन्म हुआ। ये मनोमन्थन हमारे राष्ट्रजीवनके सभी मुख्य अंगोंमें पैदा हुअे थे और अुसके मन्थनकारोंकी नामावली हमारे अर्वाचीन युगके महान राष्ट्रपुरुषोंके रूपमें अितिहासमें अंकित हुअी है।

अंग्रेज शासकोंने अेक तरफ हथियारबन्दीका कानून* बनाकर और दूसरी ओर अंग्रेजी विश्वविद्यालय खोलकर अिस युगका प्रारंभ किया। नये राज्यकर्ता और नअी राज्य-पद्धतिकी भी अुन्होंने स्थापना की। अुसके साथ साथ अंग्रेज शासकोंके मनमें यह डर भी बैठ गया कि भारतीय जनता कब क्या कर बैठे यह नहीं कहा जा सकता। अिसलिअे असा कहा जा सकता है कि अविश्वास और सावधानीका मानस नयी राज्यनीतिकी भूमिका बन गया।

रचनात्मक सुधारवादका जन्म

तत्काल तो विद्रोहका अुग्र मानस दबा लिया गया। लेकिन यह सब राखके नीचे दबी हुअी आगकी तरह हुआ होगा। असे फिरसे भड़क अुठनेमें समय लगा। हिंसक क्रान्तिका यह मानस १८८५ के युगमें प्रत्यक्ष काम करने लगा था असा नहीं मालूम होता।

परन्तु जिसे रचनात्मक सुधारवाद कहा जा सकता है असा नव विधान लेकर विविध क्षेत्रोंमें अुत्पन्न हुआ। अिसके पराक्रमी पुरस्कर्ता अिस

---

* अुस समय हथियार विज्ञानकी मददसे आधुनिक नहीं बने थे। दोनों पक्षोंमें अिस बारेमें समानता थी असा कहा जा सकता है। हथियारबन्दीके कानून द्वारा अंग्रेजी राज्यने भारतमें अपना पंजा जमा लिया और लोगोंके शस्त्रबलको स्थायी रूपमें दबा दिया।

युगके प्रसिद्ध ज्योतिर्धर हैं, जिनकी समग्र विचार-सृष्टिने अिस रचनात्मक सुधारवादको जन्म दिया।

धर्मके क्षेत्रमें नवनिर्माण

धर्म क्षेत्रमें देखें तो (१) ब्रह्मसमाजका विकास और प्रार्थना-समाजका अुदय (१८६७) (२) आर्यसमाजका अुदय (१८७५) तथा विकास (३) थियासाफी और हिन्दू धर्मके प्रति नवदृष्टिका विकास तथा (४) श्री रामकृष्ण परमहंसका जीवन-दृष्टि — ये सब अिस कालके महाप्रयाण हैं।

अिन सब आन्दोलनोंमें नया तत्त्व यह था कि वे जीवनकी धर्मदृष्टिका पुनरुद्धार करके अुसके द्वारा समग्र व्यापक जीवनमें नव बल का संचार करके क्रान्ति जगानेकी राह देख रहे थे। और अुसका लक्षण वैयक्तिक नहीं परन्तु सामूहिक और सामाजिक था। केवल स्वर्ग और मोक्षकी परम्परागत दृष्टि गौण बन गयी थी और सामाजिक जीवन भी व्यक्तिकी जिम्मेदारी और सेवाका पात्र है यह भाव मुख्य बन गया था।

और दूसरी बात यह है कि ये आन्दोलन अमुक भागोंमें पैदा होनेके कारण वहां अनका जोर बड़ा फिर भी वे स्थानीय नहीं थे अनके पीछे समस्त भारतीय जनतामें फैलनेका संकल्प था।

अलबत्ता अुन आन्दोलनोंमें खास रंग या विशेष छायावाले भाव थे। जैसे ये सब आन्दोलन मुख्यतः हिन्दू धर्मसे सम्बन्ध रखनेवाले होनेके कारण हिन्दू जातिको — जो बड़ी संख्यामें थी — स्पर्श करते थे। परन्तु अुनके पीछे बादके युगोंमें पैदा होनेवाला जो धर्मगत राष्ट्रवाद देखा गया वह भानपूर्वक पैदा नहीं हुआ था। हां आर्यसमाजको अिसका अपवाद मानना चाहिये। अुसमें अुग्र हिन्दूवाद और वह भी वेदवाद था। वर्तमान हिन्दू समाजमें धार्मिक और सामाजिक सुधार करनेके लिअे अुसका जन्म हुआ परन्तु अुसके साथ ही वह ओसाओी और मुसलमान धर्मके विरुद्ध अेक खास कट्टर भाव रखकर पैदा हुआ। अुग्र धार्मिक राष्ट्रवादके लक्षण अुसमें थे जो बादके युगोंमें और आज भी राजनीतिक हिन्दूवादके पोषक बन हुअे हैं।

प्रार्थना-समाज ब्रह्मसमाज थियासाफी वगैरा आन्दोलनोंमें जो अेक खास बात थी वह नये अंग्रेजी युगकी छाया थी। अनका माध्यम अंग्रेजी

मराठीको और गुजरातमें श्री महीपतरामने गुजरातीको अपनाया था। जिस कारण ये आन्दोलन नओ अंग्रेजी शिक्षा पाये हुओ लोगों तक सीमित रहे, अुनके बाहर अधिक नहीं फैले।

जिस क्षेत्रके ज्योतिधर जिस प्रकार थे
केशवचन्द्र सेन (१८३८–१८८४)
देवेन्द्रनाथ टागोर (१८१८–१९०५)
दयानंद सरस्वती (१८२४–१८८३)
रामकृष्ण परमहंस (१८३६–१८८६)
म० गो० रानडे (१८४२–१९०१)
रा० गो० भांडारकर (१८ ७–१९२५)
ब्लवाट्स्की (१८३१–१८९१)
कर्नल आल्कोट (१८३२–१९०७)
अेनी बेसेंट (१८४७–१९३३)

जिन महापुरुषोंका असर भारतीय जीवनके सब अंगों पर पड़ा। जनताके अूपरी स्तरके लोगोंमें यह भाव जाग्रत हुआ कि अब हमें किसी नये मार्ग पर चलना है। वे अपनी अपनी रुचि, योग्यता और शक्तिके अनुसार नये विचार करने लगे।

आर्थिक क्षेत्रमें नया विचार

आर्थिक क्षेत्रमें देखिये। श्री रमेशचन्द्र दत्त, दादाभाओ नौरोजी तथा न्यायमूर्ति रानडे जिस बारेमें तलस्पर्शी विचार करने लगे। इनका वाद — हमारे देशकी सम्पत्ति अंग्रेजी शासन-नीति द्वारा चूसी जाकर विलायत जा रही है और अुसकी अलग गंगा बह रही है — का विचार जिस युगमें हमारे नेताओंने सामने रखा।

रेल्वे आओ। परन्तु खेती और अकाल सम्बन्धी दुःख देशको मिला।

देशके धंधे मृतप्राय हो गये हैं और भुखमरी तथा दारिद्र्य घर करने लगे हैं।

ये विचार लेख और भाषण, अध्ययनके फलस्वरूप पेश किये गये। और वे आज अपने रूपमें पाये जाते हैं। विशेष बात तो यह थी कि नये जमानेके नये अुद्योगोंकी नींव डालनेवाले पराक्रमी नवनिर्माता भी देशमें पैदा हुओ। देशका मिल-अुद्योग जिसी कालमें शुरू हुआ। श्री जमशेदजी ताता तथा श्री रणछोड़भाओ छोटालाल जिस कालके नामांकित नेता हैं।

अिन विचारोंसे ही अिस युगके अन्तमें १८८९ के बाद अ० भा० अुद्योग-परिषद् तथा अर्थ-परिषद् जैसी संस्थाओंका जन्म हुआ।

समाज-सुधारका क्षेत्र

दूसरा अुल्लेखनीय क्षेत्र सामाजिक है। नये धर्म-विचारने हिन्दू समाजमें कुछ अुदार भाव पैदा किये। अुसे जात-पातकी संकीर्णताकी बुराअी, अस्पृश्यताकी अधार्मिकता, स्त्री-सम्मानका भाव दिया और अिसमें सुधारकी दृष्टि दी। विदेश-गमन, विधवा-विवाह, स्त्री-शिक्षा, छुआछूतका नाश, जात-पातका त्याग — अित्यादि समाज-सुधार अिस कालमें जारी हुअे। आर्यसमाजने अिस क्षेत्रमें बहुत बड़ा काम किया।

देशके हितके बारेमें सोचनेवाले प्रत्येक महापुरुषको अिस युगमें लगा कि हमारी जनतामें नये विचार प्रेरित करनेकी जरूरत है। ये विचार मुख्यतः नअी अंग्रेजी विद्याओंसे पैदा हुअे। परन्तु यह अुल्लेखनीय है कि आर्यसमाजने अिन्हें हिन्दू धर्मके ग्रंथोंसे प्रेरणा प्राप्त की थी। यही बात रामकृष्ण परमहंसकी थी। खास बात यह थी कि दयानंद सरस्वतीकी तुलनामें रामकृष्ण परमहंस जरा भी शिक्षित नहीं थे। अुनके द्वारा हमारे देशकी जनतामें जो परम अुदार धर्मदृष्टि और जीवन-भावना थी वह प्रगट हुअी। सर्वधर्म-समभाव, सेवा द्वारा साधना, स्त्री-सम्मान, जात-पातके भेदभावोंका त्याग अित्यादि अनेक वस्तुअें अिन महापुरुषके जीवनमें सहज गंगाकी तरह प्रगट हुअीं और अुनकी प्रचंड शक्ति तथा तेजस्विता अितनी अधिक थी कि नयी शिक्षा पाये हुअे विवेकानंद जैसे पुरुषको अुन्होंने अपनी ओर खींच लिया। बंगालमें केशवचन्द्र सेन, देवेन्द्रनाथ टागोर आदि ब्रह्मसमाजियोंने जमानेमें भी अिस महागंगाने अपना प्रवाह बराबर जारी रखा और देशमें सर्वत्र अुसके जलका सिंचन होने लगा। अिन दोनों तलस्पर्शी प्रवाहोंका समाज पर बहुत बड़ा असर हुआ।

अुद्योग-क्षेत्र और अर्थक्षेत्रकी तरह अिस समाज-क्षेत्रमें भी १८८५ के बादके युगमें अ० भा० सामाजिक परिषद जैसी संस्थाका जन्म हुआ।

विद्याक्षेत्र

विद्याके क्षेत्रमें भी अुल्लेखनीय बातें हो रही थीं। विश्वविद्यालयोंमें अंग्रेजी तो पढ़ाअी ही जाती थी, अुसके साथ प्राचीन भाषाओंका अध्ययन

भी शुरू हुआ। मुख्यतः फारसी अरबी भाषायें नये ढंगसे पढ़ाओ जाने लगीं। शास्त्रियोंकी पुरानी पद्धति और पाठशालायें पिछड़ गयीं। जिसका असर देशकी भाषाओं पर भी होने लगा। भारतकी देशी भाषाओंमें अिन प्राचीन भाषाओंका शब्दकोश और शब्दप्रयोग काफी मात्रामें आने लगे। दूसरी ओर अंग्रेजी भी अुन पर असर डालने लगी।

अंग्रेजी शिक्षासे नौकरियां प्राप्त करनेका लक्ष्य जोर पकड़ने लगा। लोग विलायत जाकर भी शिक्षा प्राप्त करने लगे।

नयी विद्याओंके पठन भी होने लगे। अुनकी नामावली भी रखनी चाहिये। मुख्यतः तीन जिलोंमें — बम्बआी मद्रास बंगालमें जहां सर्वप्रथम विश्वविद्यालय स्थापित हुअे वहां यह चीज खास तौर पर देखनेको मिलती है।

अलीगढ़ मुस्लिम आन्दोलन

अिस कालमें सर सैयद अहमदखानने अेक नया प्रयास शुरू किया। वह था अलीगढ़ केन्द्रमें मुस्लिम शिक्षाका। १८५७के विग्रहमें अंग्रेजोंको मुसलमानों पर शक हो गया था कि यह जाति शरारती है। अंग्रेजोंकी अिस नाराजीको दूर करनेके लिअे सर सैयदने खास तौर पर मेहनत की। दूसरी ओर अुन्होंने मुसलमानोंमें घर किये हुअे प्राचीन प्रथा-रिवाजोंको दूर करके नयी अंग्रेजी शिक्षा दाखिल करनेका प्रयत्न आरंभ किया। आज अुसका फल अलीगढ़ विश्वविद्यालयके रूपमें हम देख रहे हैं।

अिस विचार-केन्द्रके आसपास अुर्दू भाषा भी विकसित होती गयी। हाली, अिकबाल, शिबली आदि लेखक अिस सम्बन्धमें याद आते हैं। अिस प्रकारका अध्ययन और अुसकी खोज होनी चाहिये।

यह सही है कि अिस कालमें साम्प्रदायिकताका जहरीला स्थान नहीं था, परन्तु जरासा अुसका स्वर बल्कि अेक सूक्ष्म जो दो शाखाओंमें बिखरा व बादमें बड़ी खतरनाक साबित हुआ, अिस दृष्टिसे भी अितिहासका यह पन्ना समझने लायक है। अुस समय तो सर सैयदके मनमें केवल अपनी धर्मजातिका पिछड़ापन दूर करनेकी सद्भावना दृष्टि थी। परन्तु बादके अितिहास-कालमें नयी पार्टियां नये भाव अुसमें आये, नये कारण मिले, नयी नीतियां पैदा हुआीं और अनेक भाव सारा चित्र बदल गया। यह वस्तु आज स्वराज्य निर्माणके युगमें कैसा प्रकारसे बड़ा बोधक है। परन्तु ये सब बातें १८५७के बादके युगकी प्रस्तुत प्रकरणमें नहीं आतीं।

परन्तु यह अल्लेखनीय है कि स्वराज्य निर्माण-युगकी अुसकड़ली अिसी समय तयार हुअी।

राज्यमन्त्र

अन्तमें राज्यमन्त्र भी नय असरमें आया। मुगलोंकी दरबारी प्रणालीके बदले नयी अंग्रेजी ढंगकी राजनीति दिखाअी देने लगी। पार्लियामेंट, शासनतंत्र लोकमत जसी कल्पनाअें अुत्पन्न हुअीं।

यह खयाल पदा हुआ कि सरकारी नौकरियोंमें देशी लोग बराबरीके दर्जे पर जाय तो बडा फायदा हो और अपनी जनताका राजकाज हम अच्छी तरहसे तथा अधिक समय और प्रमसे कर सकते हैं। *नौकरियोंके स्वदेशी करण — अिंडियनाअिजेशन —* की माग अब जाग्रत राजनीतिक माग समझी जाने लगी और वह शासकोंके समक्ष रखने जसी लगी। अस समय आअी० सी० अस होना अेक देशकाय जसा भी लगता हो तो असमें आश्चय नही।

देशाभिमानने अेक नयी धर्मभावनाका रूप लिया। लोगोंका देशके प्रश्नोंके बारेमें शिक्षा देनी चाहिये, अंग्रेजोंको अिसके लिअे समझाकर शासनमें सुधार कराने चाहिये — ये विचार नये अंग्रेजी पढ़े लिखे देशप्रेमी युवकोंमें पदा हुअे। शासन पर निगाह रखनेके कामको वे देशसेवा समझकर अपने आप करने लगे। यह सारा चिंतन प्रस्तुत करनेके लिअे अलग-अलग संस्थाअें अखबार अित्यादि भी स्थापित होने लगे। सार यह कि नये अंग्रेजी राजनीतिक युगका समझनेके प्रयत्न अपने-आप शुरू हुअे।

१८५७ से १८८५ के युगकी अिन सब प्रवृत्तियोंको समग्र रूपमें देखने हुअे अेक चीज साबित होती है। वह यह कि देशमें नवयुगका आरंभ होनेके साथ देशके जागरण अुसका सामना करनेके लिअे नयी दृष्टि और नयी शक्तिके बीज भी डाले और वे नव पल्लवित होकर तेजीसे वृक्षोंका रूप लेने लगे। १७५७ से १८५७ के युगकी अराजकी दूर हुअी, अनैतिकता अभाव मिट गया और अुसके स्थान पर नयी नीतिकी स्थापना हुअी।

अिस युगकी खोज और असका अध्ययन अब हमारे देशमें खूब होना चाहिये। यह देशके पुनरुत्थानका अुषःकाल माना जायगा। अुसके विधायक वर्ग और अुसके पुरस्कर्ता लोग हमारी बडी भारी सांस्कृतिक पूंजी है। नयी पीढ़ीके लिअे असका अध्ययन शक्तिका स्रोत खोलनेके समान है। बेशक अिस अध्ययन और खोजकी दृष्टि शुद्ध और सात्त्विक होनी चाहिये।

५

स्वातंत्र्य-यात्राकी तीसरी पीढ़ी

[सन् १८८५ से १९२०]

१८८५ का वर्ष अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकी स्थापनाका वर्ष था। असा माना जा सकता है कि यहां तक पहुंचनेमें भारतकी स्वातंत्र्य-यात्राकी दो पीढ़ियां पूरी हुआ और नयी तीसरी पीढ़ी शुरू हुआ।

दूसरी पीढ़ीके बुजुर्गोंने मिलकर यह संस्था स्थापित की। तब अुन्हें अिस बातकी कल्पना भी नहीं होगी कि यह संस्था आगे चलकर भारतकी स्वतंत्रता प्राप्त करनेमें सफल होगी। कौम, जाति, धर्म, भाषा अित्यादि किसी भी भेदभावके बिना भारतीय और भारत हितचिन्तक विदेशी — खास तौर पर अंग्रेज — अुसमें शरीक हो सकते थे। कहा जा सकता है कि नवीन भारत कैसा होगा अिसकी धुंधली कल्पना कांग्रेसके संस्थापक नेताओं द्वारा की गयी थी। अिस नयी संस्थाका यह विचार अुसका अेक स्थायी अंग रहा है।

शुरूके २० वर्षोंमें — १८८५ से १९०५ के बीच — अिस संस्थाका जो काम हुआ अुसके मुद्दे तथा पुस्तिकाओंका अध्ययन किया जाय तो बड़ी दिलचस्प सामग्री मिल सकती है। असके सिलसिलेमें अेक अुल्लेखनीय बात यह है कि कांग्रेसकी रीति-नीति और अुद्देश्योंके सम्बन्धमें अिन बीस वर्षोंमें कोई खास अलग दृष्टि अथवा स्पष्ट पंथ पैदा नहीं हुअे थे। जो सामान्य नीति तथा अुद्देश्य दूसरी पीढ़ीने निश्चित किये थे, ज्यादातर अुन्हींको स्वीकार करके काम किया गया। थोड़ा स्पष्ट भेद १९०५ के बाद दिखाई देने लगा। और वह भी देशके भावी अभ्युदयके सम्बन्धमें तथा अुसे प्राप्त करनेके मार्गके विषयमें। स्वातंत्र्य-यात्राकी तीसरी पीढ़ी अिस भेद पर खड़ी हुआ मानी है।

अिस भेदका अर्थ था नरम और गरम अथवा अुग्र तथा अुदार पक्षों और दृष्टियोंका जन्म। नरम दलकी बुनियादमें श्रद्धा थी कि भारत और अिंग्लैण्ड मिलनेमें दोनोंके कल्याणका आश्रय मानते हैं। गरम दलका आधार यह विश्वास और श्रद्धा था कि भारत अेक स्वतंत्र प्राचीन राष्ट्र है और अुसे अिसी रूपमें अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहिये। नरम दलका

यह मान्यता थी कि हमें पार्लियामेंटरी ढंग पर काम करना चाहिये। गरम दलकी यह मान्यता थी कि अिस ढंगसे काम नहीं चलेगा और स्वदेशी अित्यादिके स्वतंत्र तरीकोंसे लोगोंमें काम करके राष्ट्रको जगाना चाहिये। अंग्रेजी भाषासे काम लेनेकी रीति नरम दलकी थी, देशी भाषासे काम लेनेकी रीति गरम दलकी थी।

अिस प्रकारके स्पष्ट भाग तीसरी पीढ़ीमें देखे जा सकते हैं। भारत सेवक माननीय श्री गोखले और राष्ट्रवादके पिता समान लोकमान्य तिलककी अिस पीढ़ीमें अैसे अनेक नाम जोड़े जा सकते हैं।

अिस पीढ़ीका अेक विशेष अुल्लेखनीय सर्वसामान्य लक्षण यह मान्यता है कि राष्ट्रकी सेवाके लिअे जीवनकी दीक्षा लेना चाहिये। यह भाव अिस युगमें स्पष्ट रूपमें प्रगट हुआ। राजनीति अेक सेवाधर्म है, अुसमें राष्ट्रसेवा है, अिस मंत्र पर यह पीढ़ी खड़ी हुई थी। राजनीतिमें भी धर्मदृष्टिसे काम करना चाहिये, अिस प्रकारकी अुदात्तता राजनीतिक कार्यमें आयी। त्याग, बलिदान, स्वार्पण अित्यादि अुदात्त गुण राष्ट्रसेवकोंका पाथेय बनने लगे। भारत सेवक समाजकी स्थापना १९०५ में हुअी। साथ साथ राष्ट्रवादका भी अुदय हुआ। अंग्रेजी विदेशी राज्य जाना चाहिये और अुसकी जगह स्वराज्यकी स्थापना होनी चाहिये, यह भाव लोगोंमें पैदा होने लगा।

अैसे राजनीतिक रंगके अलावा धार्मिक और आध्यात्मिक रंग भी अिस पर चढ़ता रहा। बल्कि यह रंग अैसा बुनियादी था, जो सारे आन्दोलनकी मूल भूमिकामें रहकर प्रेरणा देनेवाला था। सामूहिक पुरुषार्थका आधार धर्म और अध्यात्मसे प्राप्त किया गया। गीता, हिन्दू जीवन-दृष्टि अित्यादि द्वारा अुपरोक्त अग्र समाज- और राष्ट्र-धर्मका समर्थन करनेकी बात सोची जाने लगी। अंग्रेजी शिक्षामें सीखी जानेवाली नअी विद्याओंके कारण अेक प्रकारके शंकावाद, शून्यवाद और नास्तिकवादका जो जोर शिक्षित वर्गमें बढ़ रहा था अुस पर अिस चीजने बहुत अच्छा असर डाला। अिसमें स्वामी विवेकानंदका अनोखा हिस्सा था। स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, हरदयाल, नाग, अेनी बेसेंट अित्यादि अनेक महान विचारकोंके नाम भी अुल्लेखनीय हैं। राष्ट्रके अिस नवधर्मके लिअे तथा नये पराक्रमके लिअे नया शिक्षण होना चाहिये, अिस विचारसे राष्ट्रीय शिक्षाका मंत्र भी प्रगट हुआ और अुसके विविध प्रयोग शुरू हुअे।

किन साधनोंसे काम लिया जाय जिस बारेमें हमने अूपर थोड़ा विचार किया। गरम दलके साथ आतंकवाद और विप्लव विचार भी जिस कालमें प्रगट हुआ। जिसके दृष्टान्तोंके जितिहास पर भी अेक विशेष प्रकरणके रूपमें विचार किया जाना चाहिये।

१९०५ से १९१९-२० तक जिस पीढ़ीका मथन यहां तक पहुंचा कि कांग्रेससे अलग नरम दलकी अेक राजनीतिक संस्था भी पैदा हुअी और जिस प्रकार दो दल अन्तमें व्यवस्थित रूपमें अेक-दूसरेसे अलग हो गये।

साम्प्रदायिक प्रश्न भी जिसी युगमें स्पष्ट रूप पकड़ा। पृथक साम्प्रदायिक मताधिकार जिस कालकी खोज था। आगाखां आदि नेताओंने अपनी मुस्लिम संस्था स्थापित की। जिससे भारतके सार्वजनिक विकास और स्वराज्य-यात्रामें अेक स्वतंत्र प्रकरण शुरू हुआ। हिन्दी अुर्दू भाषा और लिपि वगैराके झगड़का और हिंदुत्वादका जन्म भी जिस युगमें स्पष्ट रूपमें बताया जा सकता है।

जिससे यह स्पष्ट मालूम होने लगा कि कौमी अेकता अेक राष्ट्रीय महाकार्य है। और कांग्रेसका वह अेक बुनियादी काम हो गया।

जिस राष्ट्रधर्मके तत्त्वज्ञानकी जिस कालमें चर्चा हुअी और फली अुसकी भावना बहुत मन्यतः हिन्दू धर्मकी भाषा और भावोंमें निहित थी। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि अैसा जान-बूझकर किया गया था। अैसा होना स्वाभाविक था। फिर भी यह अेक अुल्लेखनीय बात तो है। हां कांग्रेसके मंच पर सभी जातियां अेकधर्मी अर्थात् सच्ची स्वराज्यधर्मी दृष्टिसे जिकट्ठी होती थीं और अेकताके लिअे खूब कोशिश करती थी।

अैसे मनोपराक्रमी युगका असर अंग्रेज शासकों पर होना स्वाभाविक था। राजनीतिक सुधार दाखिल होने लगे। जिस गोरोंका गुरुभार कहा जाता है अुसका सूत्र अनुभवमें आने लगा। राष्ट्रीय स्वाभिमानको ठेस पहुंचाने वाला व्यवहार भी जिस पीढ़ीके अंग्रेज शासकोंकी तरफसे होना ध्यानमें आता है। अब अंग्रेजी राज्य और भारतीय जनता आमने-सामने विरोधीके रूपमें खड़े हैं यह भाव धीरे धीरे संस्कारमें पैठता गया। शिक्षित लोगोंका यह तत्त्वज्ञान कमजोर पड़ता गया कि दो प्रजाओंका भिन्न अविरोध संभव है। जिसमें शासक भी जान-अनजान कारण बनने लगे। पर यह सूत्र स्पष्ट हुआ कि भारत अब स्वराज्य मांगता है। देशाभिमान, त्यागभक्ति अुसके लिअे कष्ट-सहन, आदि गुण हवामें दाखिल हो गये।

अिस कालमें अेक बिन-गोरे अेशियाअी देश जापानका अुदय अिसमें आया। अुसने अेक बड़ी प्रेरणाका रूप ले लिया। सारे राष्ट्र साथ साथ चल सकते हैं यह वस्तु स्वाभिमानकी प्रेरणा देनेवाली सिद्ध हुअी।

और १९१४ की लड़ाअीका असर अिस पीढ़ीकी आखिरी बड़ी घटना मानी जायगी। अिसके पूरा होनेके साथ ही नअी पीढ़ी और नये युगका भी अुदय होता है। यह चौथी पीढ़ी है गांधीजीकी पीढ़ी अथवा गांधी युग। अिस पीढ़ीने स्वतंत्र होनेके लिअे स्वराज्य-यात्राकी अन्तिम मंजिल पूरी की और आगेकी पीढ़ीको स्वतंत्र देश सुपुर्द किया।

६

स्वातन्त्र्य-यात्राकी चौथी पीढ़ी

१

गांधीजी १९१५ में दक्षिण अफ्रीका छोड़कर भारत आये। अुस समय यूरोपीय विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया था। भारतमें आकर अुन्होंने जो काम हाथमें लिये अुनमें युद्धके लिअे रंगरूटोंकी भरती अुल्लेखनीय है। अुसीके साथ दूसरे काम भी १९१७ में शुरू हुअे। वे थे दो तीन अलग अलग सत्याग्रहोंके प्रयोग — चंपारन, खेड़ा, अहमदाबादकी मजदूर हड़ताल, वीरमगामकी नाकाबन्दी वगैरा। और अुसके साथ स्वातन्त्र्य-यात्राकी नअी — हमारे हिसाबसे चौथी पीढ़ी शुरू हुअी।

१९१५ या १९२० से गिनें तो यह चौथी पीढ़ी तबसे लेकर १९४८ तककी मानी जायगी। अर्थात् वह पूरी ३० बरसकी पीढ़ी है, जिसके बीच नअी पीढ़ी भी पैदा हुअी है। लेकिन अुस नअी पीढ़ीने अिस पिता-पीढ़ीके भीतर ही रहकर काम किया है; वह असी बलवान अथवा अपनी विशेष निष्ठा रखनेवाली नहीं थी कि कोअी नया रास्ता बना सके। अतः यह अेक संपूर्ण युग होनेके कारण अिसे गांधी-युग कहा जा सकता है।

अिस युगका अितिहास हमारे देशका अेक भव्य और अत्यन्त गौरवपूर्ण प्रकरण है। अुसका पूरा मूल्यांकन आगे आनेवाले अितिहासकार कर सकेंगे। अुसका असर सारे संसारके अितिहास-प्रवाह पर हो रहा है। अिसलिअे यह वस्तु संसारके अितिहासमें भी अेक नया पृष्ठ शुरू करनेवाली बन गअी है।

अिसस विदेशी राज्यकी गुलामी मिटकर भारतका स्वतंत्र अितिहास ही फिरसे जारी नहीं हुआ है, बल्कि समाजके अितिहासमें १९ वीं सदीमें जो साम्राज्य-युग और यंत्रोद्योगवाद आये, अुनमें भी अुसके फलस्वरूप बड़े परिवर्तन — महान क्रान्तिके बीज पैदा हुअे हैं।

अिस क्रान्तिसे अब नये प्रश्न और नया पृष्ठ समाजके अितिहासमें शुरू होते हैं। अुसकी पहली घटना भारतकी स्वतंत्रता है। अितनी बड़ी घटना गांधी-युगकी पीढ़ीने देखी, अुसमें भाग लिया और अुसे जन्म देनेमें मुख्य कारण यह पीढ़ी बनी। अब हम स्वराज्य-यात्राके विचारके क्रमविकासको संक्षेपमें याद करके अुसकी अिस चौथी पीढ़ीकी मुख्य बातोंका विचार करना शुरू करें।

हमने विभिन्न पीढ़ियोंकी अिस प्रकार चर्चा की है :

पहली पीढ़ी — राजा राममोहनराय।

दूसरी पीढ़ी — सिपाही विद्रोह और अुसके बादका पुनरुत्थान-काल।

तीसरी पीढ़ी — दाक्षित राष्ट्रसभाका युग। अुसकी दो शाखायें नरम और गरम दल।

आगे आनेवाली चौथी पीढ़ी — राष्ट्रकी समग्र शक्तिका समन्वय-युग।

२

अिस अर्सेमें देशकी मुक्ति प्राप्त करनेके लिअे जो प्रयत्न शुरू हुअे, अुनके प्रकार मोटे तौर पर देखें तो दो थे। अुन्हें अिस तरह गिनाया जा सकता है :

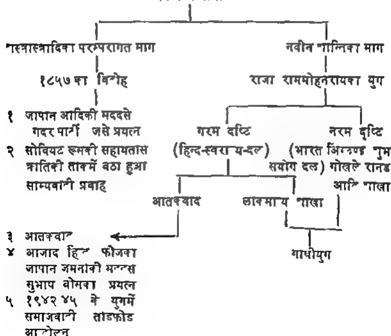
१ जनताके ज्ञान, समझ और सुधार तथा विकास वगैराकी शक्तिके आधार पर आगे बढ़नेका प्रयत्न। अिसे राजा राममोहनराय द्वारा शुरू हुआ कहा जा सकता है।

यह प्रकार आगे चलकर वैधानिक पद्धति वगैरा नामोंसे प्रसिद्ध हुआ, जो आगे गांधी-युगमें शान्त सत्याग्रहकी हद तक विकसित हुआ।

२ शस्त्रास्त्र और बाहरकी राजनैतिक सहायतासे लड़कर स्वतंत्रता प्राप्त करनेका प्रयत्न। अिस प्रयत्नका अितिहास १७५७ से १८५७ तकका अेक शताब्दीका अितिहास है। १८५७ के बाद हथियारबन्दी होने पर भी यह किसी न किसी रूपमें जारी रहा है और अुसका प्रवाह ठेठ १९४७ तक चलता पाया जाता है।

पहला प्रकार नया है, दूसरा प्रकार मानव-समाजके अितिहास जितना पुराना है। पहले प्रकारकी रीति-नीति अर्वाचीन है। यह हमने अंग्रेज प्रजाके अितिहास और असके साहित्य तथा अुसने भारतमें जो शासन-तंत्र चलाया असके अनुभवसे सीखा। सीखकर हम अुसे अपनानेमें लग गये और अपनाते भी गये। जिस रीति-नीतिको वैधानिक रीति-नीति कहिये या लोकशाही कहिये, अुसको अन्य स्वरूप या भिन्न प्रकार माना जाता है, असका कारण यह है कि असमें जनताकी शक्ति विद्रोह, शस्त्रास्त्र अथवा राजनीतिक दावपेंचके मार्ग पर नहीं, परन्तु असकी बुद्धिशक्ति, सदाचारिता अथवा दूसरे गुणों द्वारा काम करती है। अिसमें गांधीजीने सत्याग्रहका नया हथियार अुसके कल्याणक रूपमें जोड दिया।

स्वातंत्र्य-यात्राके प्रकार और विकास-संबंधी अिस विचारको संक्षेपमें अिस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है:



३

पाठक देखेंगे कि वंशवृक्षमें गरम और नरम दोनों दलोंको गांधी-युगमें सम्मिलित बताया गया है। अर्थात् गांधीजी गोखले और तिलक दोनोंकी पीढ़ियोंके उत्तराधिकारी थे। गांधीजीने अपना राजनीतिक परिचय अिस तरह दिया है कि गोखले मेरे राजनीतिक गुरु हैं। और यदि अिन दो दलोंके बीच कोअी मूल भेद हो तो वह यह है कि गोखले-शाखा यह मानती थी कि भारत और अिंग्लैण्डका संयोग आशीर्वादरूप वस्तु है; तिलक-शाखा यह मानती थी कि भारत स्वतंत्र राष्ट्र है और अुसका स्वराज्य स्वतंत्र ही हो सकता है। गांधीजी भारतमें १९१५ में आये तब वे पहले साम्राज्यवादी थे; फिर भी वे गोखले-शाखाकी राजनीतिक रीति-नीतिके अलावा सत्याग्रहके तरीकेमें विश्वास रखते थे और दक्षिण अफ्रीकामें अुस शस्त्रका सफल प्रयोग करके भारतमें आये थे। गांधीजीके व्यक्तित्व और प्रतिभाका यह अंग गोखले-राजनीतिमें मिलकर अुनके भारत सेवक समाजके द्वारा काम करनेमें बाधक हुआ। दूसरी ओर अिस बीचमें तिलक-राजनीतिकी शाखाको अपना गरम राजनीतिक धोरण बदलना जरूर पड़ा, फिर भी अिसकी अुग्रताके कारण अुन्हें अिसमें सहधर्मीपन और समानता मालूम हुआ। अिस प्रकार गांधी-युगके प्रारंभमें गांधीजीमें गरम और नरम दोनों दृष्टियोंका समन्वय दिखाओ देता है।

अितना ही नहीं, दोनों दलोंकी पद्धतियां बेकार होकर अेक अखंड कार्य-पद्धतिके रूपमें अुनके युगमें जन्म लेती है। अिस पद्धतिके लिये जिस प्रकारका नेतृत्व जरूरी था वह भी गांधीजीकी जीवन-प्रतिभामें मौजूद था।

अिससे देशकी राष्ट्रीय राजनीतिमें नये ही ढंगसे अेकदृष्टि, विविध प्रयत्नोंकी अेकवाक्यता और अेकनायक-नेतृत्व वगैरा अपने-आप पैदा होने गये। अब स्वराज्य-प्राप्ति समस्त जनताका पुरुषार्थ बन जाती है; जनताके अंग-अुपांगोंमें गहरे पैठ कर वह अपना असर करने लगता है। या कहिये कि शस्त्रास्त्रोंका परम्परागत हिंसक मार्ग छोड़कर प्रजा नवीन शान्ति-अहिंसाके मार्गका प्रयोग पूरी तरह आजमानेको तैयार हो जाती है। अिसीलिअे गांधीजीका असर जगतकी व्यापक राजनीति पर जो हुआ वह हो सका है। श्री गाल्वरेन गांधीजीका वर्णन करते हुअे कहा था कि अिस पुरुषमें भारतकी संस्कृति अपनी पूर्णकलाको पहुंची हुआी है। गांधीजी अपने कर्मसे सन् १९१५ से पहले किये हुअे अिस वर्णनको पूरी तरह सच्चा साबित करके बता देते हैं। केवल

राजनीतिमें ही नहीं, राष्ट्रकी जनताके समस्त जीवनमें नया प्रकाश, नयी दृष्टि, नयी भावना और नया चेतन अिस युगमें प्रकट होता है। भारतकी स्वातंत्र्य-प्राप्ति जनताके अिन सब दिशाओंमें हुअे बलप्रद कार्योंका समग्र फल हो गया है और असा होनेसे भारतके अितिहासमें अेक नया पन्ना खुला है।

दूसरे आलेखमें पाठकोंने देखा होगा कि परम्परागत हिंसामार्गका प्रवाह भी समयके अनुसार नये नये रूप लेकर १८५७ से ठेठ १९४५ तक जारी रहा है। अिस प्रवाहकी भी अपनी खूबियां और त्रुटियां रही हैं। स्वातंत्र्य-यात्राके अितिहासमें अुनका भी अेक अलग प्रकरण है। यह सच है कि अिस प्रणालीको अन्तमें जय नहीं मिली, यद्यपि अुसमें त्याग और बलिदानपूर्वक देशकी सेवामें स्वार्पण करनेवाले और स्वातंत्र्य-ज्योतिको जलती रखनेवाले देशभक्त थे।

आतंकवादी और क्रांतिकारी व्यक्तियोंको भी अिसमें गिनाया गया है क्योंकि अुनका प्रकार हिंसावादकी परम्परागत विचार-पद्धतिका था।

गांधी-युगका मध्य स्थान और सारी यात्रामें अुसका स्थान देखनेके बाद अब अुसकी मुख्य मुख्य बातें हम अगले प्रकरणमें देखेंगे।

७

गांधी-युगकी स्थापना

[स्वराज्य-यात्राकी १९१५ से १९३० तककी मंजिल]

१

गांधी-युगका आरंभ पहले विश्वयुद्धके दरमियान और अुसके व्यापक प्रभाव तथा पृष्ठभूमिमें हुआ। गांधीजी जब १९१५ में भारत आये तब युद्ध छिड़ चुका था। अुसमें भारतको विलायतके पक्षमें जोड़ दिया गया था।

गांधीजी अुस समय ब्रिटिश राज्यके शुद्ध हेतुओंमें आस्था रखनेवाले थे। अुस युद्धमें शरीक होकर भारतको अपनी वफादारी बताना चाहिये अिस विचारसे अुन्होंने फौजी भरतीका काम हाथमें लिया था। साथ ही सरकारने लोकमान्य जैसे लोकप्रिय नेताकी अवहेलना करके अुनका अपमान किया और अुन्हें युद्ध-परिषद्में नहीं बुलाया गया, अिसके विरुद्ध भी वे सरकारसे लड़े थे। अेक तरफ फौजी भरतीका काम हाथमें लेनेवाले गांधीजी

दूसरी तरफ राष्ट्रके सर्वमान्य नेताके अपमानको राष्ट्रीय अपमान समझकर अुसका विरोध करते हैं, यह अुनकी कार्य-पद्धति और प्रतिभाकी विलक्षणताका जीता जागता नमूना माना जायगा।

यह युद्ध यूरोपके राष्ट्रोंके बीच औपनिवेशिक झगडोंकी लगभग सौ वर्षकी शान्तिके बाद छिडा था। १८-१९वीं सदीमें यूरोपके राष्ट्रोंने पिछडे हुअे देशोंकी दुनियाका आपसमें बटवारा कर लिया था। अुसमें जर्मनी और रूस जैसे देश हिस्सेदार नहीं थे। पहले विश्वयुद्धमें जर्मनी अुस बटवारेमें हिस्सा चाहता हुआ आगे आया और अुसने अिंग्लैण्डको चुनौती दी।

अिंग्लैण्डके विरुद्ध खडे होनेवाले जर्मनीके प्रति अेक हद तक सहानुभूतिकी भावना भारतके लोगोंमें थी। नेपोलियनके जमानेमें जैसे टीपू सुलतानने जर्मनीके साथ साठ-गाठ करके अंग्रेजोंको छकानेका विचार किया था, वैसा कुछ अिस बीसवीं सदीमें संभव नहीं था। फिर भी कुछ गुप्त प्रवृत्तियाँ १८५७ की छायामें होती ही रहती थीं और अुन पर सरकारकी नजर बराबर रहती थी। भारतके गरम दलकी राजनीति पर भी अुसकी निगाह थी क्योंकि वे अंग्रेजोंको भारतसे निकालकर स्वतंत्र स्वराज्य चाहनेवाले थे।

२

१९१५ के अिस अरसेमें भारतमें जो प्रमुख राजनीतिक आन्दोलन हुआ वह 'होमरूल' का था। आयरलैण्डमें मुक्तिके लिये चल रहा आन्दोलन अिसका प्रेरक था। श्रीमती अेनी बेसेंट अिसकी प्रमुख नेता थीं। तिलक महाराजने दूसरा स्वतंत्र 'होमरूल लीग' स्थापित की थी। श्रीमती बेसेंटने अेक कानूनका मसौदा तैयार करके पार्लियामेंटमें पेश करानेकी व्यवस्था तक अपने आन्दोलनको पहुँचा दिया था। सरकारने अुन्हें नजरबन्द भी कर दिया था, जिसके विरुद्ध गांधीजीने अत्यन्त क्षुब्ध आवाज अुठाअी थी। लोकमान्यको भी सरकार सता रही थी।

अिसी अरसेमें अंग्रेज सरकारने राजनीतिक सुधारोंका नया संस्करण प्रकाशित करना आरंभ कर दिया था। १९०९ के मार्ले-मिण्टो सुधारोंके दस वर्ष बाद अुठाया जानेवाला नया कदम तैयार हो गया था। मॉण्टेग्यु चेम्सफोर्डने अैसे सोच निकाला था। नरम विचारोंका राजनीतिक दल अिससे कुछ संतुष्ट हो गया था। वह अिसे अपनानेको तैयार था, जब कि गरम दल अुसे नापसन्द करता था।

अिस स्थितिमें सन् १९१९ में अमृतसर कांग्रेस हुअी। अुसमें पहली बार गांधीजीका कायकुशलता देशकी गरम बौर राजनैतिक सम्यार्ग स्थानमें आअी। देशका गरम और नरम दोनों दृष्टियोंका अेकीकरण करके समन्वित कार्य-पद्धति निर्माण करनेकी गांधीजीकी प्रतिभा दर्शन हुअ। ये दल आपसमें लड़कर क्षीण होते रहते थे यह अेक दुखद वस्तु थी। राजनीतिमें कुछ असेंसे पस्त हो गअी थी। वह अिस युगमें गांधीजीके नेतृत्वसे दूर ही नहीं हो गअी बल्कि दोनों दल मिलकर अेक समन्वित शक्तिका रूप लेने लगे। परन्तु अितिहासका प्रवाह देशकी नावको दूसरी तरफ ले जा रहा था।

३

१९१८ में विश्वयुद्ध बन्द हुआ। अुसके बाद दो घटनायें असी हुअी जिनके कारण भारतकी राष्ट्रीय राजनीति अेक नअी ही भूमिका पर शुरू हुअी १ यूरोपमें खिलाफतका अंत २ भारत-सरकार द्वारा नियुक्त रौलेट कमेटी।

खिलाफतके सम्बन्धमें अंग्रेज सरकारने भारतके मुसलमानोंको जो वचन दिया था अुसका भंग होनेसे अनकी भावनाओंको भारी आघात पहुंचा। अिसलिअे वे अंग्रेज सरकारसे बहुत चिढ़ गये।

रौलेट कमेटी यह जांच करनेके लिअे नियुक्त की गअी थी कि भारतमें युद्धकालमें राजद्रोही हलचलें हो रही थीं या नहीं। अिस कमेटीने यह रिपोर्ट दी कि १८५७ की तरह तो नहीं फिर भी अेक तरहसे संगठित विद्रोह करनेके षड्यंत्र भारतमें हो रहे थे और यह सिफारिश की कि अिन सबको दबानेके लिअे अेक कड़ा कानून बनाना चाहिये। अिस सिफारिशके आधार पर अेक कानून भी बड़ी धारासभामें पास हुआ।

१८५७ की स्थितिके बाद हथियारबन्दीका जैसा व्यवस्थित कदम अुठाया गया असीसे मिलता जुलता यह कदम कहा जायगा। परन्तु १८५७ के बाद राष्ट्रको दबा देनेके लिअे जैसा प्रयत्न हो सका वैसा अिस समय नहीं हो सका। अिसका कारण गांधीजीका नेतृत्व था यह स्पष्ट देखा जा सकता है।

४

विश्वयुद्ध लड़ने समय भारतके लोगोंको दिये गये वचनोंका अनादर हुआ असा लोगोंको महसूस हुआ। यह भारतके स्वाभिमान पर गहरा प्रहार

था। खिलाफतके सम्बन्धमें भारतीय जनताको भारतीय मुसलमानोंका साथ देना चाहिये यह सब जातियोंके बीच भाओचारेका लक्षण है यह कहकर गांधीजीने असहयोगका नया हथियार देशके सामने पेश किया।

रौलट बाले कानूनका विरोध करनेके लिये धारासभाके वैधानिक प्रयत्न विफल हुओ। गांधीजीने असके विरोधमें अनेक अुपाय शुरू किये तथा हड़ताल और कानूनका सविनय भंग करनेकी घोषणा की।

अिन सब बातोंमें देशकी समस्त जनताको पसन्दका विरोध-पक्ष मिल गया और सहज ही सारे देशने यह नया साधन हाथमें ले लिया। सरकारको यह नयी ही चीज लगनेको मिली। वह अमृतसरमें जलियाँवाला बागके ल्याकाण्ड जैसा क्रूर काम कर बैठा। अिस अपमानकी जाँच करनेके लिये कांग्रेसने जाँच-कमेटी नियुक्त की। सरकारकी बनाओी हुओी हंटर कमेटीका बहिष्कार किया गया। जाँच-कमेटीमें गांधीजीने बड़ा महत्त्वका भाग अदा किया। सार यह कि भारतकी राजनीति अेकदम नयी ही भूमिका पर चली गयी।

५

भारतकी राजनीतिने अिस कालमें जैसा रूप लिया अुससे नया भारत — नयी शक्ति ही पैदा हो गयी। गांधीजी अंग्रेज सरकारके प्रति अब श्रद्धालु नहीं रहे और अिस प्रकार नरम दलकी मूल श्रद्धाका भारतके राजनीतिक लोक-मानसमें अन्त हो गया। अब असहयोग और सविनय कानून भंग अथवा सत्याग्रहका साधन देशने अपनाया। १९२० में नागपुर कांग्रेसने अिस महा परिवर्तन पर अपनी मुहर लगाओी। १९२१ में अहमदाबादमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ जिसमें पक्की बुनियाद पर नये युगका निर्माण आरम्भ हुआ। कौमी अेकता मजबूत होती जान पड़ी। हाँ, अिसी वक्त श्री जिन्ना कांग्रेससे हमेशाके लिअे अलग हो गये।

१९१६ में माननीय गोखले और १९२० में लोकमान्य तिलक स्वर्गवासी हुअे। नरम दल अिस कालमें कांग्रेससे अलग हो गया और १९१८ में अुसने अपना स्वतंत्र 'लिबरल फेडरेशन' स्थापित कर लिया। अ० भा० समाज परिषद् तथा अुद्योग परिषद् अपने बीसों वर्षोंके अितिहासके बाद अिस कालमें सदाके लिअे बन्द हो गयीं। १९०८की सूरत कांग्रेसमें बड़ा झगड़ा कर लड़नेवाले दो अलग दल अिस प्रकार दस वर्षोंमें अेक-दूसरेसे जुदा हुअे।

नरम विचारके नेताओंने अिसी प्रकार सरकारके नये सुधारोंके अनुसार विधान-सभाओंमें प्रवेश किया और महासभा या कांग्रेस अिसमें शरीक नहीं हुआ। जैसा पहले लाजपतरायने अेक जगह कहा था, सरकारके साथ असहयोग और स्वराज्य प्राप्तिके लिअे लड़ाअी भारतीय राजनीतिकी गाड़ी धक्कागाड़ी बन गयी। अिस प्रकार रौलट कमेटीकी रिपोर्टके आधार पर सरकारने राष्ट्रको दबा देनेका प्रयत्न किया, लेकिन अुसका अुलटा ही परिणाम आया! कारण स्पष्ट है: जनताके पास जो नया शस्त्र आया, अुसने अुसमें नया बल-संचार किया। भारतका राजनीतिक लोक-मानस नये ही मार्ग पर अग्रसर हुआ।

सरकार और जनताके लिअे यह नअी ही घटना थी। नेताओंके लिअे अिस बारेमें अपने अपने स्वभाव और वृत्तिके सम्बन्धमें सोचकर कुछ पक्का करनेका सवाल पैदा होता था। यह काम अगले दशकमें हुआ।

६

अंग्रेज सरकारके पास दूसरा क्या रास्ता होता? अेक ओर अुसने राजनीतिक सुधारोंको अमलमें लाकर प्रान्तोंमें द्वैध शासनवाली धारासभाअें शुरू कीं। भारतीयोंको ओहदे देनेकी नीति यहां तक पहुंचाअी गअी कि श्री सत्येन्द्रप्रसन्न सिंहाको लॉर्ड बनाया गया, सहायक भारत-मंत्री बनाया गया और गवर्नर भी बनाया गया। दूसरी ओर सरकारने दमन शुरू किया। १९२१-२२ में आम जेलभरतीका प्रयोग शुरू हुआ। लोगोंने अिसके द्वारा नवीन साहस प्राप्त कर लिया। जेल जाना तीर्थ-यात्राके समान पवित्र माना जाने लगा और वह राष्ट्रप्रेमका चिह्न बन गया। अिससे लोगोंकी हिम्मत टूटी नहीं, बल्कि बढ़ी। सरकारने मौका देखकर अंतमें गांधीजीको पकड़ लिया और राजद्रोहके अभियोगमें जेल भेज दिया। १९२४ में वे बीमारीके कारण छूटे।

कांग्रेसमें स्वराज्य-दलका अुदय हुआ। कुछ वर्गोंको लगा कि विधान सभाओंमें जाकर भी काम करना चाहिये। अिस प्रश्न पर कांग्रेसमें दो भाग होनेकी नौबत आअी। गांधीजीने अिस मुसीबतको टाल दिया और देशकी स्वराज्य-यात्रामें पड़नेवाली फूटसे देशको बचा लिया। परन्तु अुन्होंने अपनी कार्य-पद्धतिके अनुसार काम चालू रखा, देशके लिअे नया मार्ग बनाना शुरू कर दिया और अुसका विकास किया।

विधान-सभाओंका काम तो कुछ ही लोग कर सकते थे। परन्तु सारी जनता क्या करे? सरकारके साथ असहयोग करे, यह ठीक है; परन्तु अुसे आपसमें तो अेक हो जाना और सहयोग साधना चाहिये। नहीं तो अुसका असहयोग व्यर्थ होगा। अिस सहयोगके मार्ग क्या होने चाहिये? गांधीजीने चतुर्मुखी रचनात्मक कार्यक्रमकी खोज करके अिन प्रश्नोंका अुत्तर दिया।

ये चार रचनात्मक कार्य अिस प्रकार थे:

१ अस्पृश्यता-निवारण
२ खादी
३ कौमी अेकता और
४ राष्ट्रीय शिक्षा।

ये चार दीवारें चुन कर अुन्होंने जनताके सहयोगकी अिमारत खड़ी की। समाज-सुधार और स्वदेशी अथवा सभाओंके बहिष्कारके नाम पर जो फुटकर और अलग अलग विचार हुआ करते थे, अुन्हें गांधीजीने अिस प्रकार अेक राष्ट्रीय आह्वान और स्वराज्यकी पुकारका संगत रूप दिया। जो जनता शान्तिके साधनोंसे लड़ना चाहे, अुसे अपना सुधार या आत्मशुद्धि अपने ही बलसे करनी चाहिये। अिससे वह अपने बलका संगठन कर सकेगी, जिसके आधार पर अपने-आप स्वराज्य प्राप्त करने लगेगी। यह सिद्धान्त देशको मिला। और अुसका अनुसरण करके देशकी सारी जनता — अुसके सभी अंग — स्वराज्य-यात्रामें अपने आप शरीक हो सकें और अपना हिस्सा दे सकें, अैसी प्रबल संभावनावाली योजना भारतीय जनताको मिली।

रचनात्मक कार्यक्रम और धारासभाओंका कार्यक्रम — ये जो दो भाग आज पाये जाते हैं, अुनका प्रारंभ अिसी कालमें हुआ। अखिल भारतीय चरखा संघकी स्थापना हुआी। राष्ट्रीय विद्यापीठ स्थापित हुओ। अस्पृश्यता-निवारणके लिये संस्थायें बनने लगीं। दूसरी ओर विधान-सभाओंमें स्वराज्य दल भी काम कर रहा था। अिन दोनों शाखाओंको अेक सूत्रमें बांधकर कांग्रेस अुनका आधिपत्य अपने हाथमें रखे और दोनोंको आगे बढ़ाये, अैसी सफल नीति कांग्रेसने सब तरफ अपनाओ गओ। अैसा करके कांग्रेस अत्यन्त शक्तिशाली ही नहीं बनी, बल्कि भारतकी समस्त जनताका प्रतिनिधित्व भी करने लगी, और लोगों पर यह छाप पड़ती गओ कि राष्ट्रीय भारतका अर्थ है अुसकी कांग्रेस।

लगभग दस ही वर्षमें अपने धर्मानुयायियोंको यह चीज न केवल बहुत प्यारी हो गअी बल्कि जगतको भी मालूम हो गअी।

७

ये दो घटनाअें थीं : १ बारडोलीका सत्याग्रह, २ साअिमन कमीशनका बहिष्कार और १९१९ से आगेके नये राजनीतिक सुधारों पर विचार।

१९२४ से १९२८ तकमें गांधीजीने जो काम हाथमें लिये अुनसे कुछ राजनीतिक वर्गोंमें और बाहरके देशोंमें अेक अैसा खयाल पैदा हुआ कि गांधीजी निरे संसार-सुधारक जैसे बन गये हैं, अुनकी आग मानो बुझ गअी है! अिस भ्रमको मिटानेवाली घटना थी बारडोलीकी भूमिकर-वृद्धिके विरुद्ध किया गया सत्याग्रह। सच पूछा जाय तो अिससे देशको अिस बातका परिचय मिला कि लोकमतका महत्त्व स्थापित करनेके लिअे सत्याग्रहका व्यावहारिक अुपाय जनताके पास है। सत्याग्रह क्या चीज है यह १९२१–२२ में लोगोंको देखनेको नहीं मिला था, क्योंकि चौरीचौरा अित्यादिकी घटनाअें देखकर गांधीजीने अिस चीजको रोक दिया था। यह अब बारडोली सत्याग्रहमें देखनेको मिला। विधान-सभाकी शक्ति दिखाकर काम करनेके लिअे अमुक स्वराज्य-दलने भी अिस काममें हाथ बंटाया था। परन्तु अिसमें वह सफल नहीं हुआ और गांधीजीका तरीका सफल हुआ। अिस चीजने वैधानिक पद्धतिकी मर्यादा और सत्याग्रही पद्धतिकी व्यापकता सिद्ध करके दिखा दी, जैसी १९१९–२० में रौलट कानूनके विरोधके समय साबित हुअी थी। अैसा समझिये कि अेक दशकके बाद नये रूपमें फिर क्रांतिकारी परिस्थिति पैदा हुअी और गांधीजीने अुस परिस्थितिको [illegible] अच्छी तरह सम्भालकर राष्ट्रकी समग्र शक्तिको अेकीकृत किया और राष्ट्रके मुख्य मोरचे पर अटल खड़ा कर दिया।

विधान-सभामें काम करनेवाले स्वराज्य-दलने अिस समय जो अुल्लेखनीय कदम अुठाया वह था अेक निवेदन तैयार करना, जिसे अुसके नेता स्व० मोतीलाल नेहरू परसे 'नेहरू रिपोर्ट' कहते हैं। भारतको स्वराज्य देनेके लिअे १९१९ के बाद दस वर्षमें सुधारोंकी जो नयी किस्त आनेवाली है अुस समय सब दल मिलकर कोअी अेक विचार पेश करें तो अच्छा होगा, अिस विचारसे अेक सर्वदल सम्मेलन बुलाया गया और अुसकी तरफसे यह निवेदन तैयार हुआ। राजनीतिक विचारके विकासमें यह निवेदन अेक महत्त्वका मार्गस्तम्भ माना गया। साम्प्रदायिक अेकताकी दिशामें अिस पद्धतिसे १९१६

में जो लखनऊ समझौता हुआ था उसमें जिन्नाकी पूरी सह-कार्यवाही थी। परन्तु ऐसा लगता है कि अिस बार भी कुछ लोगोंने और ही निश्चय कर लिया था। मुस्लिम नेताओंने अुसके सम्मेलनमें नेहरू-रिपोर्ट पर विचार करके अुसके अनुसार मत नहीं प्रकट किया। दूसरी ओर सरकारने जिससे भी कठिन स्थिति पैदा कर दी जिसमें से भय ही ज्यादा अशान्ति अुत्पन्न हुआ।

८

अमृतसरके जलियावाला बागसे मिलती-जुलती अपमानजनक घटना जो हुआ वह था साइमन कमीशनमें केवल गोरोंकी नियुक्ति और भारतीय जनताकी अवहेलना। अिस कमीशनका बहिष्कार किया गया। मुस्लिम लीग नरम दल सब वाली जिसमें ऐकमत थे। गांधीजीके नेतृत्वमें सब बहिष्कार चलाया। जनताके प्रथम कोटिके नेता लाला लाजपतरायका जिसमें बलिदान हुआ जिसकी चिनगारी आगे चलकर श्री भगतसिंह और अुनके मित्रोंके प्रकरणमें प्रगट हुआ।

औपनिवेशिक स्वराज्य —डोमिनियन स्टेटस —का आदर्श लेकर नये सुधारों पर जो विचार किया जा रहा था अुस पर विचार करनेकी कांग्रेसने तैयारी बताई। अंग्रेज भारत-मंत्री लार्ड बर्कनहेडने जवाब दिया कि अिस आदर्श पर तो भारतमें कभीका अमल हो रहा है! अुसकी अिच्छापूर्ण हुकूमके सबबसे गांधीजीका अन्तिम भ्रम जिससे दूर हो गया और १९२९-३० में लाहौरमें कांग्रेसने अपना कलकत्ता-अधिवेशनका ध्येय बदलकर पूर्ण स्वराज्य का ध्येय सर्वसम्मतिसे निश्चित किया। अिस प्रकार भारतका नौजवान वर्ग और बुजुर्ग वर्ग दोनों ऐक हुए। पं० मोतीलाल नेहरूने कांग्रेसका नेतृत्व दूसरे साल श्री जवाहरलाल नेहरूको सौंपा। १९२० में आरम्भ की गई यात्रा दूसरे दौरमें अपना मध्य मंजिल तय करके पूर्ण स्वराज्यकी आखिरी मंजिल पार करनेको आगे अग्रसर हुई। लाहौरका स्वातंत्र्य प्रस्ताव स्वराज्य यात्राका महान मार्गदर्शक बना। अुसने भारतीय जनताको २६ जनवरी १९३० के दिन शपथ दिलाओ जिसके आधार पर हर साल अखिल निर्णय की जाना पड़ाओ होगा। यह प्रस्ताव आज भी याद करने जैसा है:

हम मानते हैं कि किसी भी अन्य प्रजाकी भांति भारतीय जनताको अपना शासन आप करनेका, अपनी मेहनतका फल भोगनेका और सामान्य सुख-शान्तिमें रहकर साधन प्राप्त करनेका तथा अुसी

करके अपना सम्पूर्ण विकास करनेका जन्मसिद्ध अधिकार है। हम यह मानते हैं कि कोअी भी राज्य किसी प्रजाके अिस जन्मसिद्ध अधिकारको छीनकर अस पर जुल्म करे तो अस प्रजाको अस राज्यको बदलनेका अथवा असका नाश तक करनेका जन्मसिद्ध अधिकार है। भारतमें ब्रिटिश सरकारने भारतीय जनताके स्वातन्त्र्यका ही अपहरण नहीं कर लिया है परन्तु अिसने करोड़ों गरीबोंको चूसकर अपना राज्य चलाया है और देशका आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सत्यानाश कर डाला है। अिसलिअ हम यह मानते हैं कि अब भारतीय जनताको अिस राज्यके साथ सम्बन्ध विच्छेद करके पूर्ण स्वराज्य अथवा सम्पूर्ण स्वातन्त्र्य लेना ही होगा।

अब यह देखें कि देशकी आर्थिक बरबादी कितनी हुअी है। हमसे जितना कर वसूल किया जाता है असकी तुलना हमारी आयसे करने पर वह बहुत बाहर मालूम होता है। हमारी सरकारी आय सात पैसे रोज है और हम जो भारी कर चुकाते हैं असमें २० प्रतिशत भूमिकरके रूपमें देते हैं जो गरीब किसानोंको चुकाना पड़ता है। और तीन प्रतिशत नमक-करके रूपमें देते हैं; यह कर भी गरीबोंके ही पेटमें से निकलता है।

कताअी जैसे गृह-अुद्योग देहातमें नष्ट हो गये हैं जिसके फलस्वरूप कृषक-वर्गको वर्षमें कमसे कम चार महीने बेकार रहना पड़ता है। कारीगरीके नाशके कारण अुनकी बुद्धि जड़ हो गअी है और जो अुद्योग नष्ट हो गये हैं अुनके स्थान पर अन्य कोअी अुद्योग दूसरे देशोंकी तरह यहां जारी नहीं किये गये हैं।

जकात और पैसेके सम्बन्धमें असा प्रपंच रचा गया है कि किसानोंका बोझ बढ़ता ही गया है। विलायतमें बना हुआ माल ही मुख्यतः हमारे देशमें आयात होता है। जकातका प्रबंध देखें तो पता चलेगा कि ब्रिटिश माल पर कमसे कम जकात है। अिसके अलावा जकातसे मिलनेवाला कर गरीबोंका भार घटानेके काममें नहीं आता परन्तु अत्यन्त खर्चीला शासन-तंत्र चलानेके लिअ असका अुपयोग होता है। विदेशी विनिमयकी दर अिससे भी ज्यादा मनमानी है। असमें असी युक्तिसे काम लिया जाता है कि परिणाम-स्वरूप करोड़ों रुपये देशमेंसे खिंचकर बाहर चले जाते हैं।

राजनीतिक दृष्टिसे भारतकी स्थिति आज ब्रिटिश सत्ताके अधीन जैसी हो गयी है वैसी पहले कभी नहीं थी। सुधारोंके नामसे जो मशहूर हैं उनसे जनताको सच्ची राज्यसत्ता बिलकुल नहीं मिली। किसी हुकूमतके आगे हमारे बड़ेसे बड़े आदमीको भी सिर झुकाना पड़ता है। स्वतन्त्रतापूर्वक विचार प्रगट करने और सभायें करनेके अधिकार हमसे छीन लिये गये हैं। हमारे देशवासियोंमें से बहुतोंको निर्वासन भुगतना पड़ रहा है और उन्हें देश आनेकी आज्ञा नहीं है। शासन चलानेकी शक्तिका हममें पूरी तरह ह्रास हो गया है और आम लोगोंके लिए कारकुन पटेल-पटवारी या मुनीम-गुमाश्तेके सिवा और कोई नौकरी नहीं रही।

संस्कृतिकी दृष्टिसे ब्रिटिश राज्यके असर पर विचार करें। हमारे देशकी संस्कृति कैसी थी जिसका मान भुलाकर नयी शिक्षाने हमें पश्चिमकी ओर देखनेवाला बना लिया है। और हमें तालीम ही इस प्रकारकी मिली है कि अपनी बढ़िया अवस्थाके बजाय हमें अच्छा लगने लगा है।

आध्यात्मिक दृष्टिसे देखें तो इस राज्यने जबरन हमसे हथियार छीन लिये हैं। जिससे हम नामर्द बन गये हैं और हमारे देशमें विदेशी सेना अड्डा जमाकर पड़ी है। इसने अन्याय और अत्याचारका विरोध करनेकी हमारी शक्तिका नाश कर दिया है और हममें ऐसी भावना भर दी है जिससे हम यह मानने लगे हैं कि विदेशियोंके बिना हम अपना आपसी व्यवहार नहीं चला सकते और विदेशी लोगोंके हमलेसे अपना बचाव नहीं कर सकते। इतना ही नहीं, चोर डाकू और दुष्ट मनुष्योंसे अपने घर और परिवारकी रक्षा भी हम नहीं कर सकते।

जिस राज्यने हमारे देशकी ऐसी चतुर्मुखी सत्यानाश कर डाली है उस राज्यके मातहत और अधीन रहनेमें हम मनुष्य और ईश्वरका अपराध करते ऐसा हमारा स्पष्ट मत है। परन्तु हम यह भी मानते हैं कि स्वातन्त्र्य प्राप्तिका हमारा असल कारगर तरीका हिंसाका नहीं परन्तु अहिंसाका है। इसलिए हम यथाशक्ति अपनी इच्छासे होनेवाला ब्रिटिश सरकारके साथका सहयोग छोड़कर इस राज्यसे मुक्त होनेकी तैयारी करेंगे और सविनय कानून भंग (जिसमें कर न

देनका समावेश होता है) भंग किये भी त्यारा करेंगे। हमें विश्वास है कि जिस राज्यसे हम स्वेच्छासे जो मदद देते हैं वह यदि बापस ले लें और सरकारको जोरसे अत्तजनका अधिकसे अधिक कारण मिलने पर भी हिंसा किये बिना अस कर देना बन्द कर दें तो जिस अमानुषिक राज्यका हम अवश्य अंत कर सकेंगे।

अिसलिअे हम आज सच्चे हृदयसे प्रतिज्ञा करते हैं कि पूर्ण स्वराज्य स्थापित करनेके लिअे कांग्रेस समय समय पर जो भी सूचनायें देगी अन पर हम अमल करेंगे।

१८८५ में कांग्रेस स्थापित हुओ तबसे लेकर १९२९ तक देशका जो अनुभव हुआ असका पूरा निचोड़ मानो जिस प्रस्तावमें आ गया। राष्ट्रने अेक स्वरसे असका स्वागत किया। यह सही है कि शिक्षित वर्गोंमें कुछ लोग अिसके विरुद्ध बोलते थे परन्तु अनकी आवाज नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज भी नहीं कही जा सकती।

१९१५ में गांधीजी भारतमें आये १९३ में अन्होंने भारतीय स्वातंत्र्य याआंत्रा माग साफ करके असकी स्पष्ट व्याख्या देश और दुनियाको दी। भारतमें अंग्रेजी राज्यका स्वरूप अेक महान प्रजाको सब तरहसे बरबाद करनेवाला है और मानव जगत पर अेक महा विपत्ति है अुसे शान्ति और न्यायके अुपायों द्वारा दूर करनेमें संसारकी और अंग्रेजोंकी भी अप्रत्यक्ष सेवा है — असी व्यापक बुनियाद पर गांधीजीने भारतीय स्वराज्यकी लड़ाओको रख दिया और असे अपनानेको सारी जनता अकाग्र बन गओ। १९३० से भारतीय अितिहासकी नाव स्वातंत्र्य-संग्रामकी मझधारमें पहुंच गओ।

८

आखिरी फैसला

[स्वराज्य-यात्राकी १९३० से १९३९ तककी मंजिल]

१

गोलमेज परिषद और नमक सत्याग्रह

साअिमन कमीशनकी युक्ति असफल रही। अिसलिअ नये सुधारोंके बारेमें विचार करनेके लिअ पार्लियामेण्टकी तरफसे दूसरा मार्ग घोषित किया गया। वह था गोलमेज परिषद् बुलानेका। लार्ड अर्विनने भारतके वाअिसरायके नाते अक्तूबर १९२९ के अन्तमें घोषणा की कि अिंग्लैण्ड और भारतके प्रतिनिधियोंकी अेक परिषद् बुलाओ जायगी और अुसमें राजनीतिक सुधारोंके बारेमें विचार किया जायगा। अुसके ध्येयके रूपमें डोमिनियन स्टेटस मान्य किया गया। परन्तु यह कदम भी कामयाब साबित नहीं हुआ।

अिस घोषणाके बाद अेक मौके पर बोलते हुअ ब्रिटिश पार्लियामेण्टके भारत मंत्री लॉर्ड बर्कनहेडने यह कहा था कि अिस स्टेटस के आधार पर भारतका शासनकार्य तो कभीका चलने लग गया है। अिससे भारतको कुदरती तौर पर आश्चर्य हुआ। अिसीलिअ जैसा हमने अूपर देखा, १९३० की पहली जनवरीको हिन्द कांग्रेसने लाहौरमें साफ कह दिया कि हमें पूर्ण स्वराज्य चाहिये।

अिस प्रकार कांग्रेस गोलमेज परिषदके विचारमें शरीक नहीं हुआी। दूसरी ओर नरम दलके नेताओंने अिस नये ढंगको पसन्द किया और अुन्होंने अुसमें शामिल होनेमें प्रसन्नता प्रगट की। कांग्रेसके सिवा और सब दल अुसमें सम्मिलित हुअे।

ब्रिटिश सरकारने यह युक्ति सफल करनेके लिअ दूसरी तरहसे दांव लगाया। अुसने भारतके प्रतिनिधि नियुक्त करनेमें बड़ी होशियारी दिखाओ। भारत विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं आदिसे छिन्नभिन्न अेक जनसमूह है, अिस मान्यताको अुसने अच्छी तरह पोषण किया था। भारतके प्रतिनिधि चुननेमें अुसने अिसका आधार लिया और अुसके द्वारा अिस मान्यताको

गोलमेज परिषदकी रचनामें मूर्तिमान बनकर दिखाओ वाली होशियारी और सावधानी रखी।

कांग्रेसने लाहौरके स्वातंत्र्य प्रस्तावके अनुसार स्वराज्यकी लड़ाओ लड़नेकी ओर अपनी शक्ति लगाओ। दांडी-कूच और नमक-सत्याग्रह अुसके प्रतीक बने। देशभरमें जोरोंसे सत्याग्रहकी लड़ाओ शुरू हुआ।

यह लड़ाओ मार्चकी १२ तारीखको दांडी-कूचसे शुरू हुआ तब तो सरकारने असे हंसीमें अुड़ा दिया था। परन्तु थोड़े ही समयमें वह सावधान हो गओ। गांधीजी पकड़े गये और देशभरमें दमनका दौरदौरा यथाविधि शुरू हो गया। पहली गोलमेज परिषद नवम्बर १९३० में लिण्डनमें हुओ तब देशकी प्रजा पूर्ण स्वराज्यकी लड़ाओमें लगी हुआ थी। परिषदका स्थान लंदन होनेके कारण ही वह शामिल नहीं हो सकी। परन्तु प्रतिनिधियोंके रूपमें गये हुओ लोगोंकी दशा अवश्य विचित्र हो रही थी।

अिस लड़ाओका नाम आखिरी फैसले की लड़ाओ रखा। असके आरम्भमें गांधीजीने हिंसावादी गुप्त दलोंसे अपील की थी कि आप शान्त रहकर मेरे तरीकेको अपना काम करनेका मौका दीजिये। अुन लोगोंने अस अपीलका आदर किया और कुछ तो अिस लड़ाओमें शरीक भी हुओ।

गोलमेज परिषदकी सब मिलाकर तीन बैठकें हुओ। अुनमें से पहली बैठकमें काफी विचार विमर्श हुआ। परन्तु कांग्रेसका प्रतिनिधित्व न होनेके कारण वह दूल्हे बिना बरात जैसी मालूम होती थी। अिसलिओ दूसरी बैठकमें कांग्रेसको लानेके लिओ सप्रू और जयकरने प्रयत्न किये। अिसके परिणामस्वरूप गांधी-अिर्विन समझौता हुआ और १९३१ में कराचीमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ। भारतके प्रतिनिधियोंके रूपमें ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंने युक्तिपूर्वक जो पचरंगी शतरंज जमाओ थी अुसके गर्भित अुत्तरके रूपमें कांग्रेसने दूसरी बैठकमें अकेले गांधीजीको अपने प्रतिनिधिकी हैसियतसे भेजनेका निश्चय किया।

अिस समय भी देशके शासकोंका मानस कैसा था यह बतानेवाली अेक घटना यहां देने जैसी है। भगतसिंह और असके साथियोंको जो मृत्युदण्ड दिया गया था अुसे माफ करनेकी बात गांधीजीने सारे देशकी आवाजके बल पर कही। फिर भी वाअिसरायने असे नहीं माना और कराची-कांग्रेसके समय ही अुन लोगोंको फांसीके तख्ते पर चढ़ा दिया। गांधीजीके अद्भुत

ननीजेके कारण ही उसने यह कड़वा घूंट पी लिया और उसके अकमात्र प्रतिनिधिके रूपमें वे विलायत गये।

अितिहास प्रवाह यहां तक पहुंचा जिस वक्त अनिश्चित स्थान पर विलिंग्डन वाअिसराय बनकर भारत आ गये थे। यह उल्लेखनीय है कि गांधीजी और जिन्ना दोनों अुनसे परिचित थे — वे बम्बअीमें गवर्नरके पद पर थे तबसे। श्री जिन्ना जिस अरसेमें विलायत चले गये और गांधीजीको दूसरी गोलमेज परिषदमें विलिंग्डनने भेजा तो सही लेकिन बादमें १९३२ से फिर दमन-युग आरंभ करके अन्होंने अुन्हें जेलमें डाल दिया। तीसरी गोलमेज परिषद हुअी तब पहली परिषदकी तरह गांधीजीको फिर जेलमें पकड़ा लिया गया था।

दूसरी गोलमेज परिषदमें कांग्रेसके शामिल होनेसे वह पहलीकी अपेक्षा अपने आप बड़े महत्त्वकी बन गअी। परन्तु परिणामकी दृष्टिसे वह असफल रही। अिस अपमानका कड़वा आखिरी प्याला पीना पड़ेगा यह समझ कर ही गांधीजी लन्दन गये थे। कांग्रेसके लिअे भी यह अनसोचा अथवा कल्पनाके बाहर नहीं था। कांग्रेसके कुछ नेता तो यह समझकर ही चल रहे थे। वे सरकारके साथ अपने व्यवहारमें पहलेकी तरह ही साफ बात करते थे। जिसलिअे गांधीजी विलायतमें थे अुस समय भी सरकारने अुनके दमनका सामान्य नियम जारी ही रखा था। जिस प्रकार गांधीजी १९३२ के प्रारम्भमें भारत लौटे तब वातावरण क्षुब्ध था। सरकारने जवाहरलाल और अब्दुल गफ्फारखांको पहलेसे जेलमें डाल दिया था।

गोलमेज परिषदमें गांधीजीने कांग्रेसके नाम पर यह दावा किया कि वे सारे देशके — मुसलमानों और अछूत जातियोंके भी — प्रतिनिधि हैं। अुन्होंने यह भी कहा कि भारतसे बाहर शायद यह दावा अुचित न लगे परन्तु भारतमें जाकर अिसका सवाल किया जा सकता है। अिसके विरुद्ध डा० आम्बेडकरने अछूत जातियोंके नाम पर और आगाखां वगैराने मुसलमानोंके नाम पर अिस दावेको चुनौती दी। फिर भी गांधीजी अपने अिस दावे पर डटे रहे और अुन्होंने साफ शब्दोंमें कहा कि कांग्रेस राष्ट्रवादी मुसलमानोंको बुलाया नहीं गया है। बात तो सच थी। अुन्हें बुलाया जा सकता था परन्तु सरकारके बुलाये हुअे मुसलमान प्रतिनिधियोंने अिसका बहुत विरोध किया। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ अपनी—आम तौर पर अनुसार

सुधारोंका क्या असर होता है। अिसके मानी यह अक प्रयोगकी बात थी अिसलिअ यह अपना नया कदम पूरा नहीं परन्तु डर डर कर आगे रखा था।

नये सुधारोंके दो भाग थे (१) प्रान्तीय स्वराज्यका भाग जिसमें पिछले सुधारोंकी द्वैध शासनकी प्रणाली रद्द करके प्रान्तीय मंत्रियोंको शासनका सब काम सौंपनेकी योजना थी। (२) केन्द्रीय सरकारमें भी सघ शासन — फेडरेशन — जिसमें देशी राजा भी रहें। दूसरा भाग तुरन्त अमलमें न आये पहले पहला भाग आये और असके बाद दूसरे भागका आरम्भ अुचित समय देखकर हो — असी व्यवस्था कानूनमें थी। दूसरा भाग अमलमें कार्यान्वित नहीं हुआ और भारतकी प्रगति दूसरे ही मार्ग पर हुआ जिसमें १९४७ में देशके दो भाग होने पर भी पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो गअी।

प्रान्तोंमें १९३५ के नये सुधारोंके अनुसार चुनाव हुअे। नया कानून बनानेवाले ब्रिटिश भारत-मंत्री सर सेम्युअल होरको अपनी योजनाके बारेमें यह विश्वास था कि कांग्रेसको चुनावमें शायद ही अच्छी विजय मिलेगी। परन्तु चुनावका परिणाम यह आया कि देशके ११ प्रान्तोंमें से लगभग ९ प्रान्तोंमें वह अच्छी तरह सफल हुआ। ९ प्रान्तोंमें से ५ में वह निश्चित बहुमतमें आअी, ४ में असकी सबसे बड़ी दल-संख्या रही और सिंध तथा पंजाबमें वह अल्पमतमें रही। ब्रिटिश कूटनीतिकी गाड़ीकी चाल अिस प्रकार शुरूमें ही गड़बड़ा गअी। जाहिर है कि कांग्रेसको १९३३–३५ के बीच दबा देनेकी अुम्मीद रखनेवाले ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंको देशकी जनताने अिस जवाबसे मुश्किलमें डाल दिया। परन्तु अब अिस मामलेमें वे कुछ कर नहीं सकते थे। कांग्रेसने अपने कार्यको आगे बढ़ाना शुरू किया।

१९३४ के बाद गांधीजी कांग्रेसके चार आना सदस्य भी नहीं रहे। फिर भी अनकी सलाह तो कांग्रेसका मिल्की ही थी। अितना ही नहीं बिहारमें भूकम्पकी महाविपत्तिसे देशको धीरजसे पार अुतारनेके बाद पटनामें कांग्रेस महासमितिकी जो बैठक हुअी अुसमें गांधीजीने देशकी भावी नीतिके सम्बन्धमें अेक बड़ा सूत्र धोषित किया कि अब हमें यह समझना चाहिये कि देशमें पार्लियामेंटरी कार्यक्रम घर कर रहा है। १९२४–२५ में अिस कार्यक्रमका अस्वीकार किया गया था। अुसकी तुलनामें यह सूत्र साफ बताता है कि देशका कार्य अेक दशकमें किस प्रकार आगे बढ़ रहा था। अिसीके परिणाम-स्वरूप १९३५ के कानूनके अनुसार होनेवाले चुनाव कांग्रेसने

अच्छी तरह जात न्यि और दगव साम्प्रदायिक दल तथा अुनकी पीठ ठाक्ता रहनवाली ब्रिटिश सरकारकी राजनीतिज्ञ मडली भी अिस घटनास चन गया।

४

समाजवादी और सर्वोदयी दृष्टि

जिन वर्षोंमें काग्रसका नतृत्व जवाहरलालजीके हाथोमें चला गया। अुन्होंन समाजवादी रवया सावजनिक रूपमें जाहिर करके काम किया। १९२४ में काग्रसन अ० भा० चरखा सघ बनाया था अुसक बाद १९३२–३३ में काग्रसक जल्में होन पर भी देशन हरिजन-सेवक-सघकी* रचना की और १९३४ में जो नया कदम अुठाया गया वह था ग्रामोद्योग सघकी स्थापनाका। अिसके बाद गाधीजी काग्रसकी नियमित सदस्यतासे अलग हो गय। जिस दिशामें और आग जो कदम अुठाया गया वह था गाधी सवा-सघकी रचना (१९३४ ३५)। अुसके दो वर्ष बाद हिदुस्तानी तालीमी सघकी स्थापना हुअी।

अिन सब कार्योंके द्वारा गाधीजी अपनी कल्पनाक स्वराज्यकी रचना करनेकी दिशामें कदम अुठा रह थ। जवाहरलालजी अिसमें साथ दे रह थे परन्तु अुनकी श्रद्धा भिन्न थी —वे समाजवाद और अुसक तरीकोंमें श्रद्धा रखत थे। जब वे लखनअू काग्रसक अध्यक्ष बन तब यह चीज साफ तौर पर सामन आ गअी। अितना ही नही अिस पद्धतिस दशकी पुनरचनाका काम करनक लिअ काग्रसन १९३६ में प्लानिंग कमेटी बनाअी। वह काम जवाहरलालजीकी अध्यक्षतामें हुआ जिसके परिणाम-स्वरूप स्व० क टी० शाह्न कुछ पुस्तकें तयार करके प्रकाशित की।

यह भद १९५५ की अवाडी-काग्रसक बाद अब मूल तौर पर असर कारक साबित हो रहा है। अुस देशन हुअ अुपरान्त १९५५-४० के बादकी घटनायें विशद अल्लेखनीय हो जाती ह। और अब काग्रसका अध्यक्षपद दो-तीन वष तक प्रधानमत्रीके पदक साथ सयुक्त रहनके बाद श्री जवाहरलालजी अब गाधाजाकी रीति-नीतिमें विश्वास रखनवाले श्री ढबरको सौंपन हैं

* जिस कामको जल्में रहकर भी गाधीजीन जारी और वग दिया और १९ ३ में सारदमें अुसके लिअ दौरा किया। अिस दौरेमें पूनामें बम फटा जो अब चिह्नरूपमें अुल्लेखनीय है।

यह भी अेक अैसी गंभीर घटना — १९५४ में अैतिहासिक दृष्टिसे हुअी — माना जायगा। १९५५ में प्रधानमंत्री पं. जवाहरलालजीने पार्लियामेंटमें समाजवादी पद्धतिको प्रमाणित ही नहीं कराया है, कांग्रेसने भी अुसके अनुसार प्रस्ताव पास किया है। अिसलिअे अब नासिकके सम्मेलनकी हमारी आवश्यकता अधिक तीव्र हो जाती है। आज कांग्रेस सत्तारूढ़ है और जवाहरलालजी अुसके प्रधानमंत्री हैं। अेक समय गांधी ग्रामोद्योग आदिकी सर्वोदय-नीति और प्लानिंग कम्युनिटी प्रोजेक्ट और यंत्रोद्योगोंकी समाजवादी नीति — अिन दो दृष्टियोंमें निहित सूक्ष्म तत्त्व स्पष्ट हो रहे हैं और अिनमें रहे मतभेदोंका निराकरण चाहते हैं।

गांधीजी १९३५ से कांग्रेसकी राजनीतिसे अलग होकर सच्चा स्वराज्य निर्माण करनेके कार्यमें लग गये थे। वे काम गांवोंमें जाकर लोगोंके द्वारा और लोकशक्तिके बल पर करते थे। जवाहरलालजीने जिस पद्धतिका थोड़ा-बहुत आरंभ किया वह थी 'प्लानिंग कमेटी' बनानेकी। अिसमें कांग्रेसी प्रान्तोंके मंत्रि-मंडलोंने सहयोग दिया और रुपयेकी मदद दी। यह काम सरकारी और अनेक रुपयेसे करनेकी बात सोची जाती थी। समाजवादी पद्धतिका यही लक्षण है जिसे हम अिस समय स्पष्ट देख रहे हैं। दोनों पद्धतियोंमें सत्य है। दोनोंको अब राजनीतिक स्वतंत्रता आ जानेसे खूब वेग मिल सकता है और मिलना चाहिये। अिसका मार्ग क्या है यही हमें खोजना है। अुस समय गांधीजीकी कही हुअी यह बात अुल्लेखनीय है कि यदि सरकारें ग्रामोद्योग संघके मेरे नये काममें सहयोग दें तो मैं अेक चमत्कार करके दिखा दूं। यह सहयोग अब मिल सकता है क्योंकि अुस समय सरकार पराअी थी और आज हमारी है। परन्तु अैसा होनेसे पहले अुपरोक्त दो पद्धतियोंमें निहित सूक्ष्म भेद दूर होना चाहिये और दोनोंके बीच समन्वय स्थापित होना चाहिये। अुस समय देश आजादीके लिअे लड़ रहा था अिसलिअे जवाहरलालजीने कहा था कि मैं कभी कांग्रेससे अलग नहीं होअूंगा क्योंकि दोनों पद्धतियोंके भेदका प्रश्न अिस समय अप्रस्तुत है। जिस प्रकार अुन वर्षोंमें कांग्रेसने अेक बनकर स्वातंत्र्य-यात्राका कदम अपने प्रान्तीय मंत्रि-मंडल बनाकर आगे बढ़ाया। और अुस समय अुसने यह घोषणा भी की कि सुधारोंका दूसरा भाग वह बिलकुल नापसन्द करती है और अुसे रद्द करानेकी कोशिश करेगी।

और भारतमें साम्प्रदायिक दलोंके और अन्य विरोधोंके जिनका अपयोग अंग्रेज-भाग्यनायकोंने आपसमें ... कर रखा था मौलिक अपायके रूपमें यह भी ज़ाहिर किया गया कि भारतके प्रश्नका हल अुसकी जनता वयस्क मताधिकारके आधार पर अपनी प्रतिनिधियोंकी संविधान-सभा बनाकर ही कर सकती है। यह विचार हमने यूरोपके अितिहाससे लिया और असा करके सुधारोंका विचार करनेके लिओ ब्रिटिश कमीशनों और कमेटियोंकी पद्धतिको आखिरी जवाब दे दिया।

कांग्रेसकी अिस प्रगतिका असर दूसरे राजनीतिक दलों पर पड़े बिना कैसे रहता? परन्तु यह अेक अलग प्रश्न है।

९

दूसरा विश्वयुद्ध और प्रांतीय स्वराज्यका अंत

ब्रिटिश पार्लियामेंटने बहुत ही सावधानीसे सोच विचार कर १९३५ में प्रान्तीय स्वराज्यके सुधारोंका कदम अुठाया था। फिर भी अुसमें कांग्रेसने कुल ११ में से ७ प्रान्तोंमें अपने मंत्रि-मंडल बनाकर शासनका काम हाथमें लिया यह हम देख चुके हैं।

जुलाओ १९३७ से यह काम शुरू हुआ और अक्तूबर १९३९ में वह बिलकुल अकल्पित रूपमें खतम हो गया। जिसका कारण १९३९ का दूसरा विश्वयुद्ध बना। अिसलिओ १९३० में शुरू हुओ 'आखिरी कदम' का पूर्वरंग १९३९ में पूरा हुआ और अुसका अंतिम रंग अुस युद्धके दौरानमें और अुसीकी भूमिकामें शुरू हुआ और युद्ध समाप्त होनेके बाद दो वर्षमें अुसकी पूर्णाहुति हो गअी।

अपने दो वर्षके कार्यकालमें कांग्रेसने कैसा काम किया अिसका अंदाज लगाने बैठनेकी जरूरत नहीं। फिर भी सरकारके साथ हमेशा लड़ना ही आओी - मस्थान १९३७ में सरकारी सत्ता पर आकर शासनका काम कैसे सभाला यह अुल्लेखनीय तो है ही।

कांग्रेसमें अेक दल अैसा था जो यह मानता था कि हम प्रान्तीय सरकारों पर कब्जा करके अनके द्वारा १९३५ के राजनीतिक सुधारोंके कानूनको अनुचित सिद्ध करके अुस तरह डाक्नकी शान्ति करनेकी चेष्टा करें। १९२४ के स्वराज्य-दल-युगकी विचारसरणीके अनुसार जैसा दलाल करनेवाले लोग अिस समय भी मौजूद थे। स्व० श्री विठ्ठलभाओ पटेल अिसके अुल्लेख नीय नेता थे। वे केन्द्रीय विधान-सभाके अध्यक्ष थे। अेक हैसियतसे अन्होंने कांग्रेस तथा भारतीय जनताकी शक्तिका अंग्रेजोंको अच्छा परिचय कराया था। भारतीय प्रजा अपना काम स्वयं संभाल सकती है यह साबित करनेमें अैसी बातोंने स्वतंत्रताके अितिहासमें बड़ा भाग लिया है। राजनीतिक क्षेत्रमें ही नहीं, साहित्य ज्ञान-विज्ञान पांडित्य अित्यादि अनेक क्षेत्रोंमें आन्तर राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त करानेवाली शक्ति रखनेवाले नर-नारी भारतमें अुत्पन्न होते ही रहे हैं, जिनके कारण भारतके बारेमें दुनियाका मत अूंचा अुठता गया है। अस्तु।

परन्तु कांग्रेसमें गांधीजीके नेतृत्वमें अेक और ही दृष्टि रही थी। वह यह कि भारतके लोक-जीवनके अनेक क्षेत्रोंमें सुधार करनेमें विदेशी राज्य बाधक होता है अिसलिअे हमें स्वतंत्रता चाहिये। अतः यह महसूस होने पर कि राज्यसत्ता प्राप्त करनेका यह प्रयोजन प्रान्तीय स्वराज्यके द्वारा कुछ हद तक पूरा हो सकता है, देशमें दो-तीन काम शुरू हुअे। वे थे (१) शराबबन्दीका कानून, (२) शिक्षामें बुनियादी पद्धतिका सुधार। ये दो चीजें अखिल भारतीय पैमाने पर गांधीजीके नेतृत्वमें शुरू की गअीं। परन्तु यह विचार रखनेवाला दल भी यह जानता था कि अन्तिम क्रान्ति तो अभी करनी बाकी है।

फिर भी कांग्रेसका शासन केवल शासनके रूपमें देखा जाय तो सफल सिद्ध हुआ और अंग्रेज गवर्नरोंने भी अुसकी काफी तारीफ की। देशके अन्य राजनीतिक दल विरोधी दलके नाते कोअी अैसी बात न कर सके जिससे अुन्हें बड़ी कीर्ति मिले। विरोधी दलोंके रूपमें हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग गणनापात्र थे। तीसरा लिबरल (नरम) दल लगभग छिन्न भिन्न स्थितिमें था। अुसमें कुछ नामांकित व्यक्ति थे, जो व्यक्तियोंकी हैसियतसे देशमें मान-सम्मान प्राप्त करते थे। अिसलिअे अिस कालमें अेक सुसंगठित दलके रूपमें अुसकी गिनती शायद ही की जा सकती है। और अिस

दलकी सबसे बड़ी मुश्किल यह रही है कि १९०९ और १९१९ के दो अनुभवोंके बावजूद अन्त तक अुसके नेता नरम राजनीतिकी क्रान्तिकारी दृष्टिको समय रहते न समझ सके और न अपने लिए माना हुआ प्रौढ़ता, सयानेपन और समझदारी तथा सच्ची प्रगतिकी नीतिके विषयमें रहा करण अतिश्रद्धाके बारेमें अुन्हें कभी शंका पैदा हुआ। वे यह समझकर चले मानो देशमें केवल सुराज्य स्थापित करनेका ही सवाल हो। अुन्होंने क्रान्तिकी यह शिक्षा शायद ही समझी कि स्वराज्यके बिना सुराज्य संभव नहीं है, अिसलिए पहले स्वराज्य प्राप्त करना चाहिये; तब फिर अुसे अपनानेकी बात तो दूर रही। १९४७ में जब क्रान्ति हो गयी तब यह दल अंतिम रूपमें विसर्जित हो गया।

२

परन्तु अकेले प्रान्तीय स्वराज्यका यह प्रयोग लम्बे समय तक चल सकनेवाला नहीं था। केन्द्रीय सरकारके सुधारसे सम्बन्ध रखनेवाले १९३५ के कानूनका महत्त्वपूर्ण भाग अभी तक खटाअीमें पड़ा हुआ था। वह अमलमें न आये तब तक प्रान्तीय स्वराज्यकी सीढ़ी आगे ले जानेवाली नसैनीकी सीढ़ी नहीं बन सकती थी। केवल अितना ही हो सकता था कि चाहें तो अुस सीढ़ी पर बैठ रहें। पर कांग्रेसने यह स्थिति अिस धारणासे स्वीकार किया था कि अुस पर चढ़कर आगे बढ़ा जा सकेगा — केन्द्रीय सरकारकी रचनामें लोकहितकी दृष्टिसे वांछनीय परिवर्तन करनेके लिए जनबल प्राप्त कर सकेंगे।

ब्रिटिश पार्लियामेण्ट अिस विचारसे रुक गयी थी कि चूंकि भारतको अपने साथ रखनेके तरीके पर सुधार करनेमें हमने पहली ही मंजिल पर मार खाअी, अिसलिए अब आगे बढ़नेमें जल्दी करना ठीक नहीं होगा। अिसका दूसरा और अधिक बड़ा कारण शायद यह हो कि यूरोपमें जर्मनीके कारण अैसी परिस्थिति पैदा होती जा रही थी जिससे तुरंत लड़ाअी छिड़ जाय। अैसी स्थितिमें भारतका शासन कांग्रेस जैसी स्वतंत्र संस्थाको सौंप दें और लड़ाअी छिड़ने पर भारतसे वांछित सहायता न प्राप्त की जा सके तब क्या हो? कांग्रेसका प्रान्तीय स्वराज्यका प्रशंसनीय कारबार देखकर तो यह डर और भी अधिक सही माना जायगा — अंग्रेजोंकी नजरमें। अिसलिए अधिक साहसका कदम अुठानेमें लाभ नहीं, अैसा पार्लियामेण्टने मनमें सोच रखा था। लॉर्ड

लिनलिथगो वाअिसरॉय थे। वे जरूरी मामलोंमें अुनसे बातें करनेमें बुलाते थे।

३

यूरोपमें लड़ाअीका डर सच्चा निकला। अुसकी आगाही लगभग अेक सालसे होती हो रही थी। श्री सुभाषचन्द्र बोस जर्मनीमें थे। वहाँसे स्वदेश आनेके बाद अुन्होंने लगभग यह चेतावनी दे दी थी कि १९३९ में युद्ध होगा। अिस परिस्थितिमें भारतमें किस ढंगसे काम करना चाहिये अिस बारेमें मालूम होता है अुन्होंने अपने मनमें कोअी योजना बना रखी थी।

१९३९ की कांग्रेसके अध्यक्षपदके प्रश्नने बड़ी खींचतान पैदा कर दी। डा. पट्टाभि सीतारामय्या और सुभाषबाबू अुसके लिअे खड़े हुअे। दोनोंमें दो विचारधाराओंमें रस्साकशी शुरू हुअी। सुभाषबाबू कुछ मतोंसे जीते। गांधीजीने घोषणा की कि पट्टाभिकी हार मेरी हार है। कांग्रेसके प्रतिनिधि अिससे चौंके और अुन्हें भान हुआ कि सारा मामला कितना गंभीर है। सुभाषबाबूको थोड़े ही समयमें मालूम हो गया कि वे अध्यक्ष तो बन गये हैं परंतु कांग्रेसके बड़े और महत्वपूर्ण भागका अुन्हें साथ नहीं है। अुन्होंने अिस्तीफा दे दिया और राजेन्द्रबाबूको अध्यक्षपद सौंपा गया।

सुभाषबाबूकी नीति क्या है अिसका थोड़े ही समयमें पता चल गया। बंगाल कांग्रेसकी अेक जिला परिषद हुअी। अुसने कांग्रेससे यह सिफारिश की कि ब्रिटिश सरकारको छह महीनेका नोटिस दिया जाय कि भारतको स्वराज्य दो, नहीं तो हम सामूहिक सत्याग्रह शुरू करेंगे। अिस प्रकार बंगाल कांग्रेस गरमागरम वातावरण पैदा कर रही थी। अन्य कुछ प्रान्तोंमें भी अिसका असर था। सुभाषबाबू अपनी अिस नीतिको ताकतसे बंगालमें आजमा रहे थे। बात यहाँ तक पहुँची कि बंगाल कांग्रेसके अध्यक्षके नाते सुभाषबाबूने अपनी सोची हुअी नीतिको आगे चलाना शुरू कर दिया। कांग्रेस कार्यकारिणीने अिसके विरुद्ध अनुशासनकी कार्रवाअी करके अुन्हें संस्थासे अलग कर दिया।

यह घटना छोटीसी नहीं थी। यूरोपमें लड़ाअी आ रही है अुस समय भारत किस ढंगसे काम करेगा यह प्रश्न अिसमें निहित था।

सुभाषबाबू कांग्रेस संस्थासे निकल जानेके थोड़े समय बाद भारतसे गुप्त रूपमें भागकर जर्मनी गये और अंग्रेजोंके शत्रुओंके साथ मिलकर भारतको स्वतंत्र करनेकी सशस्त्र योजना बनानेमें लग गये। कांग्रेसने अपनी अहिंसक

और सत्याग्रही नीतिसे ही आगे बढ़कर अपने सिद्धान्तको बड़े भारी आंतरिक संकटसे बचा लिया और फिरसे गांधीजीके सक्रिय नेतृत्वमें काम करना शुरू किया।

४

१ सितम्बर १९३९ के दिन यूरोपमें युद्ध छिड़ गया और दो ही दिन बाद ३ सितम्बरको अंग्रेज सरकारने बड़ी विधानसभासे या लोकनेताओंसे पूछताछ या बातचीत किये बिना घोषित कर दिया कि भारत अंग्रेजोंके युद्धमें अुनके साथ शरीक होता है।

भारतमें राजनीतिक सुधार करनेके बारेमें अससे क्या पूछा जाय ऐसा सोचकर साअिमन कमीशन नियुक्त करनेमें जो गलती की गअी थी अससे भी गंभीर यह गलती हुअी। परन्तु यह गलती अनजानमें नहीं हुअी थी। भारतसे पूछा जाय और वह हां ना या आनाकानी करे तो क्या हो? और लड़ाअी जैसे तेज मामलेमें शुरूमें ही ऐसा हो तो काम कैसे चले? भारत युद्ध-सामग्री और सैनिक बलका अक्षय खजाना ठहरा। वह किस पक्षमें जायगा अिस बारेमें अूहापोह पैदा करनेके बजाय अुसे स्वीकार [illegible] काम लेना अंग्रेज सरकारको ज्यादा मुनासिब मालूम हुआ और भारतकी तरफसे अुसने ऐसी घोषणा कर दी। अुनसे साथ देनेकी बात पूछना बादके लिअे छोड़ दिया।

गैरसरकारी वर्गोंसे तो नहीं ही पूछा गया, परन्तु कांग्रेस अिस समय आठ प्रान्तोंमें राज्य कर रही थी। अुन प्रान्तोंके मन्त्रिमंडल भारत सरकारके महत्त्वके अंग थे, पर अुन्हें भी विश्वासमें नहीं लिया गया। यह तो कोअी छोटा-मोटा अपमान नहीं था।

५

३ सितम्बरको युद्धकी घोषणा करनेके बाद लॉर्ड लिनलिथगोने गांधीजीको मिलनेके लिअे बुलाया। भारतके स्वराज्यकी आगेकी चर्चा अिस प्रकार फिर शुरू हुआ जो अन्तमें १९४७ में पूरी हुअी। परन्तु अुससे पहले अुसमें जबरदस्त परिवर्तन और अुथल-पुथल हो गअी थी। अुसका अत्यन्त रंगभरा अितिहास कांग्रेसकी अन्तिम कसौटी साबित हुआ। अिसमें से वह सफलतापूर्वक पार हुअी और गांधीजीकी बनाअी हुअी जो नीति १९२०–३० के दशकमें अुसने अनुभवसे अपने लिअे निश्चित की थी अुसे सफल बनाकर दिखा दिया

और भारतकी स्वतंत्रताका सवाल लगभग दो सौ वर्षमें हल किया। ऐसा करते हुअे अुसकी कमजोरियां और अुसकी नीतिमें रही त्रुटियां भी आखिरी फसलमें आ गअीं। यह सब अनिवार्य था। फिर भी सारे रूपमें वह नीति सफल हुअी। जिस कांग्रेसमें फिरसे स्थापित करनेके लिअे १९३९ में पूनामें अपने चुने हुअे अध्यक्षके साथ अुसे झगड़ना पड़ा था। अिस तरह झगड़ने पर भी कांग्रेस अपनी नीतिके प्रति वफादार रही यह अुस वर्षके बन्द बड़े संकटकी विशेष अुल्लेखनीय घटना है। परन्तु मुख्य काम तो यह निश्चित करना था कि अब युद्धकी स्थितिमें किस तरह काम करके भारतीय स्वराज्यकी यात्राको आगे बढ़ाया जाय। अब हम अिस अितिहासकी मुख्य मंजिलोंको देखेंगे।

६

गांधीजी वाअिसरायसे अेक व्यक्तिकी हैसियतसे मिल सकते थे, क्योंकि वे १९३६ से कांग्रेसमें नहीं थे, न अुसकी कार्यसमितिने अुन्हें कोअी सत्ता देकर मुलाकात करनेको कहा था। गांधीजीने वाअिसरायके सामने यह चीज स्पष्ट की और कहा कि वे अंग्रेज सरकारको बिना शर्त मदद करेंगे, परन्तु अपनी अहिंसाकी नीति पर डटे रहकर और अुसकी मर्यादामें रहकर। अर्थात् जो सेनामें भरती होना चाहें वे खुशीसे हों, युद्धकोषमें रुपया देना चाहें वे दें, परन्तु कांग्रेस अैसा करने देनेकी जिम्मेदारी नहीं लेगी। कांग्रेस देशकी आन्तरिक शक्ति अच्छी तरह संभालेगी, युद्धमें अंग्रेजोंके पक्षको वफादारीके साथ नैतिक सहायता देगी और अिस प्रकार अिस युद्धमें भारतीय जनताको अडिग खड़ा रखकर आगे बढ़ायेगी।

अंग्रेज गांधीजी जैसे महान नेताके नैतिक और बिलाशर्त समर्थनकी अिस बातसे राजी हो जायं यह स्वाभाविक था। गांधीजीकी अिस बातके जवाबमें वाअिसरायकी तरफसे यह कहा गया कि युद्धकार्यमें केन्द्रीय सरकार अेक युद्ध समिति नियुक्त करे। वह युद्धकार्यमें देशका कारबार देखे, प्रत्येक प्रान्तका मुख्यमंत्री अुसका सदस्य रहे और वाअिसराय अुसका अध्यक्ष हो। अिस प्रकार तात्कालिक प्रबंध कर लिया जाय और युद्ध जीतनेमें भारत कमर कसकर शरीक हो।

परन्तु कांग्रेसकी कार्यसमिति गांधीजीकी अिसी शुद्ध अहिंसा-नीति माननेको तैयार नहीं थी। यदि अंग्रेज सरकार पूर्ण स्वराज्य देनेका

बात करना तो कुछ कांग्रेसी युद्धमें रुपया और आदमियोंकी बाबत ...ानको भी उत्सुक रहे थे। सरदार वल्लभभाअीने घोषणा की कि विलायतको साथ दिया ही नहीं जा सकता। राजाजी अिसमें सहमत थे। और जवाहरलालजी शायद ही कोअी नया मार्ग ग्रहण करनेवाले थे। शुरू १९३० के गांधी-अर्विन-समझौतेके जमानेसे गांधीजीकी संधिवार्ता और राजनीतिज्ञताके बारेमें बहुत भरोसा शायद नहीं था — फिर भी अद्वितीय नेताके रूपमें गांधीजीके प्रति अुनकी श्रद्धा अटल थी। अिसलिअे कांग्रेसने यह प्रस्ताव पास किया कि अंग्रेज सरकारको अपना युद्ध-नीतिके अुद्देश्य घोषित करने चाहिये और अुनके अनुसार भारतमें स्वराज्य देनेको तैयार होना चाहिये तथा अुसकी पूर्वभूमिकाके तौर पर भारतके केन्द्रीय शासनमें भी अनुरूप सुधार करने चाहिये।

गांधीजीने अिस प्रस्तावके संबंधमें कहा कि मैं चाहूं अुस हद तक कांग्रेसकी कार्यसमिति अहिंसा-नीतिको न माने तो अुसे असा निर्णय करना चाहिये और जिसमें औचित्य है अिसे समझकर अिंग्लैंडको यह प्रस्ताव स्वीकार करके चलना चाहिये। भारत जैसे महान राष्ट्रको युद्धमें शरीक करना हो तो अुसे विश्वासमें लेना चाहिये और जिस लोकतंत्रके सिद्धान्तकी रक्षाके लिअे युद्ध आरंभ किया गया माना जाता है अुस सिद्धान्तको अिंग्लैंडको भारतमें अमल करके चलना चाहिये।

७

अिस प्रकार गांधीजीकी बात अेक तरफ रही और कांग्रेसने व्यवहारको समझकर अपना अलग पासा फेंका। ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंको अब गांधीजीके साथ नहीं, कांग्रेसकी कार्यसमितिके साथ काम लेना था। विलायत अहिंसक सहकारकी नैतिक भूमिका परसे बात राजनीतिज्ञता पर आ गअी थी। अिसके विरुद्ध ब्रिटेनने अपनी पुरानी भेदनीतिका पासा फेंका। वाअिसरॉयने अपनी सत्ताके आधार पर माने हुअे भारतके बावन नेताओंको मिलनेके लिअे बुलाया। दूसरे नेता भी मिलनेको तैयार थे। परन्तु अितनी संख्याको काफी मानकर ब्रिटिश कूटनीतिका अुत्तर तैयार हुआ कि कांग्रेस-दल अकेला ही नहीं, दूसरे अनेक प्रभावशाली दल भारतमें हैं जो अुससे भिन्न बात करते हैं। जिसलिअे समझमें नहीं आता कि क्या किया जाय। और अिस समय युद्धकालमें यह झंझट क्यों मोल ली जाय? कांग्रेस जैसी महाप्रबल संस्था अैन वक्त पर असा अड़ंगा पैदा करके युद्धमें बाधा खड़ी करे यह अुसे शोभा नहीं देता।

कांग्रेसने जो अुदार रुख रखा था अुसका असा अुत्तर आने पर अुसका मार्ग स्पष्ट हो गया — अुसके लिअे अब दूसरा रास्ता नहीं रहा। अुसने प्रस्ताव पास किया कि प्रांतीय मंत्रि-मंडल नवम्बर (१९३९) के पहले सप्ताहमें पहले अेक खास प्रस्ताव पास करके अपने पदसे अलग हो जाय।

प्रस्तावमें स्पष्ट किया गया कि अंग्रेज सरकार भारतका सहयोग चाहे तो अुसे अल्पसंख्यकोंके लिअे अुचित संरक्षणकी व्यवस्था करके लोकतंत्रका तत्त्व भारतकी राजनीतिमें दाखिल करना चाहिये और स्पष्ट अैलान करना चाहिये जिससे भारतकी प्रजा खुद अपना संविधान बना ले तथा अुसके अनुसार तत्काल भारतके शासनमें भी सुधार करने चाहिये। परन्तु चूंकि अंग्रेज सरकार असा नहीं मानती अिसलिअे प्रजा अुसके युद्धमें साथ नहीं दे सकती।

सातों प्रान्तोंमें यह प्रस्ताव पास करके कांग्रेसी मंत्रि-मंडलोंने त्यागपत्र दे दिये। सरकारने सुधारोंके कानूनकी ९२ धाराके अनुसार प्रान्तोंका शासन गवर्नरोंको सौंप दिया और अिस प्रकार दूसरे महायुद्धके कालमें १९वीं सदीमें भारतमें जैसा निरंकुश अंग्रेजी राज्य था लगभग वैसा ही राज्य अंग्रेजोंके शासनके अंतिम कालमें अकल्पित रूपमें शुरू हुआ।

अिस नाजुक स्थितिमें कांग्रेसको अपने आगेके कामका विचार करना था। यह दूसरे प्रकरणमें हम देखेंगे।

१०

युद्ध निषेधका सत्याग्रह

ब्रिटिश शासकोंने यह सफाअी नहीं की कि विश्वयुद्धके भारत-संबंधी अुद्देश्य तथा हेतु क्या हैं, अिसलिअे कांग्रेसी मंत्रि-मंडलोंने त्यागपत्र दे दिये। और भारतमें धारा ९२ का निरंकुश अंग्रेजी राज्य सब जगह स्थापित कर दिया गया। देशमें कोअी राजनीतिक दल असा नहीं था जो अिस स्थितिमें प्रसन्न हो। असी स्थितिमें अंग्रेज सरकारका यह सन्तोष रखकर या मानकर चलना तो कैसे संभव होता कि सब ठीक चल रहा है?

दूसरी तरफ युद्धमें अिंग्लैंडके पक्षकी स्थिति भी बिगड़ती जा रही थी। जर्मनीकी सेनाअें तेजीसे आगे बढ़ती जा रही थीं, चिंताका कारण बनता जा रहा था। अिसलिअे भारतके लोकमतकी नग्न अवज्ञा करनेसे भी कैसे काम चल सकता था?

अिसलिअे अंग्रेजोंने भारतमें राजनीतिक सुधार करनेकी बात जारी रखी। जिम्मेदार अंग्रेजोंने भारतके सम्बन्धमें अेक ही बात फिरसे अुठाअी —सब कौमें अेक होकर कोअी निश्चित बात न करें तब तक कैसे समझमें आये कि क्या किया जाना चाहिये? यह अजीब बात थी, क्योंकि कांग्रेसने तो युद्धके हेतुके रूपमें भारतकी स्वतंत्रताके बारेमें पूछा था और कहा था कि अिसके बारेमें निश्चित बात करनेके बाद सब कौमें आपसमें मिलकर काम करनेकी बात सोच सकेंगी।

अंग्रेजोंने अिस सवालको पलटकर जुदा ढंगसे कहा कि कौमोंमें मेल न हो तब तक आपको स्वतंत्रता देनेकी बात कैसे सोची जा सकती है? आप काम तो ऐसे करते हैं कि कौमोंके बीच किसी तरह मेल न हो सके और अूपरसे यह कहते हैं कि कौमोंमें मेल न हो तब तक क्या किया जा सकता है। अिसका अर्थ है आपकी नीयत साफ नहीं है —असा प्रत्युत्तर देनेका कोअी अर्थ नहीं था, क्योंकि अंग्रेज यह सुननेको भला क्यों तैयार होने लगे? १९०५ में कौमी झगड़ोंकी गरजकी सफल चाल अुन्होंने शुरू की थी।

कांग्रेसने मार्च १९४० में रामगढ़में अधिवेशन करके प्रस्ताव पास किया कि अुसे आखिर फिर सत्याग्रहके मार्ग पर चलना पड़ेगा। परन्तु कांग्रेसकी भीतरी स्थिति तुरन्त लड़ाई छेड़नेकी नहीं थी। देशमें अिसके लिअे आवश्यक वातावरण भी नहीं था।

अिस अरसेमें कांग्रेस कार्यसमितिने सरकारके साथ फिर अेक बार समझौतेका प्रयत्न किया। अुसके नेता राजाजी और सरदार थे। कार्यसमितिने सरकारको युद्धमें अमुक शर्तों पर सहयोग देनेकी बात कही। अुसकी बातचीत चली, मगर सरकार अुसमें नहीं फंसी और समितिका यह प्रस्ताव असफल रहा। अंग्रेज प्रजाका युद्धनेता चर्चिल था। वह भारतके प्रति कभी भली नीति रखनेके दृढ विचारवाला था, यह किसीसे छिपा नहीं है।

अिस प्रकार कार्यसमितिने गांधीजीकी नीतिसे अलग होकर जो कुछ किया जा सकता था वह कर देखनेका प्रयत्न किया। अुसमें वह असफल रही। अंग्रेजोंने अिसमें भूल की या नहीं यह प्रश्न अप्रस्तुत है। परन्तु अुनके अिस रुखने भारतीय स्वराज्यकी खातिर लड़नेके लिअे गांधीजी और कांग्रेसको, जो अिस नीतिके सिलसिलेमें अेक-दूसरेसे अलग हो गये थे, फिर अिकट्ठा कर दिया। गांधीजीको फिर सत्याग्रहका नेतृत्व सौंपा गया। कुछ समय पहले

आ राजन्द्रबाबूने अक व्याख्यानमें अिस नाजुक स्थितिके बारेमें जो कुछ कहा था वह देखने योग्य है

स्वातन्त्र्य-युद्ध लड़नेके लिअ अहिंसाको जरूर स्वीकार किया गया था। लेकिन लोगोंके मनमें अिस बारेमें छिपी हुआ मर्यादाओं तो थी ही। अिसलिअ जब विश्वयुद्ध शुरू हुआ और यह सवाल उठा कि अंग्रेजोंको मदद दी जाय या नहीं तब गांधीजी और कांग्रेसके बीच मतभेद पैदा हो गये। गांधीजीने कहा कि हिंसामें मेरी आस्था नहीं है अतः वह मुझे मंजूर नहीं। दूसरे लोग अिस विचारके थे कि युद्धके कारण अंग्रेज लोगोंके साथ मौका करनेका बड़ा अच्छा मौका मिला है। परन्तु ब्रिटिश लोगोंने कांग्रेसकी मददवाली बात नहीं मानी। अिसे आप अनकी समझदारी समझिये या और कुछ मानिये। परन्तु हमें वापस गांधीजीके पास जाना पड़ा।

(अ० आओ सी० सी० रि० १५-४-५५ पृ० १७)

सरकारने पुराना कौमी अकताकी बात कही। अिसलिअ मुस्लिम लीगका महत्त्व बढ़ गया। असने सरकारसे कहा कि आप हमसे पूछे बिना कुछ न करें। कांग्रेसी मंत्रि-मंडल जिस दिन पदसे हट अस दिनको अुसने आगे चलकर मुसलमानोंका मुक्ति-दिवस बताया और असको अत्सव मनाया। प्रान्तोंमें कौमी दंगे भी छिड़ गये। सरकारने आगे चलकर यह बात अठाओ कि प्रान्तोंमें भी मिश्र मंत्रि-मंडल बनाकर काम किया जाय। जिससे लीगके नखरे के भाव और भी अूंचे चढ़ गये।

जिन नरम विचारके लोगोंकी कोशिश सरकार और कांग्रेसके दो दलोंमें बीच-बचाव करनेकी हो रह गओ थी वे भी अिस स्थितिमें थक गये और यह मानकर पीछे हट गये कि अिस मामलेमें अब कुछ नहीं किया जा सकता। जो सज्जन गांधीजीसे कहते कि आप जिन्नासाहबके साथ बात कीजिये। गांधीजीने कहा कि जब तक अन्होंकी बात न मान ली जाय तब तक जिन्ना साहब किसी बातसे नहीं बदलेंगे और मनका मैल नहीं धोयेंगे अतः अिससे कोओ नतीजा निकलता नहीं दीखता।

फिर भी गांधीजी अपने ढंगसे तो अकताका प्रयत्न कर ही रहे थे। अिस अर्सेमें अन्होंने हिन्दी हिन्दुस्तानीके प्रचारके लिअ अक सम्मेलन किया। जो पुरुषोत्तमदास टंडनने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी वर्षों पुरानी नीतिमें साम्प्रदायिक दृष्टिसे फेरबदल किया अिसलिअ गांधीजीने असमें अलग होकर

नआ संस्था स्थापित की। अुसके लिअे जो सम्मेलन किया गया अुसमें मौलाना अब्दुल हक आये। परन्तु ये सब प्रयत्न सूचक चिह्नसे अधिक आगे नहीं बढ़ सकते थे। देशके सामने बहुत बड़ा सवाल था। अब तो कांग्रेसकी हस्ती और अुसके स्वाभिमानका ही सवाल सामने था। अुसे हानि पहुंचानेके लिअे सरकारने कौमी अेकताके नाम पर जो वातावरण पैदा किया अुससे निबट कर कांग्रेसके सामने फिर अपनी स्वराज्यकी लड़ाअीको प्रमुख स्थान देनेका सवाल था।

अिस अर्सेमें अेक और अुल्लेखनीय घटना हुआ। वह थी सुभाष बाबूका भारतसे खिसक कर जर्मनी पहुंच जाना। अुनकी नीति दूसरी थी। अुनके लिअे भारतमें स्थान न देखकर वे अंग्रेजोंके विरोधी देशमें पहुंच गये। जिससे सरकारके मनमें अेक नया डर पैदा हो गया कि यदि युद्ध भारत तक आ जाय — और वह आता दिखाअी दे रहा था — तो अुस समय भारतमें लोग विद्रोह तो नहीं कर देंगे?

लीगके मन्त्रि-मंडल दो-तीन प्रान्तोंमें सत्ता पर आरूढ़ थे। वे अपना काम किसी भी रुकावटके बिना चला रहे थे।

अैसी विषम स्थितिमें गांधीजीको रास्ता निकालना था। अैसे मौके पर वे हमेशा अपने अन्तरकी गहराअीमें डुबकी लगाया करते थे। अिस बार भी अैसा ही हुआ। अुन्होंने कांग्रेसको व्यक्तिगत सत्याग्रह करनेका सुझाव दिया। कांग्रेस-तंत्रको अुसके अनुकूल पुनर्गठित किया गया। कांग्रेस युद्ध सत्याग्रह संस्थाके रूपमें बदल गअी।

गांधीजी भारतके प्रश्नको केवल राजनीतिक स्वराज्यकी नजरसे नहीं देखते थे। वे तो सब कुछ विश्वयुद्धकी भूमिकामें ही सोचते थे। अिस दावानलमें भारत किस ढंग पर काम करे? अुनकी यह मान्यता थी कि अंग्रेजोंका युद्ध न्यायपूर्ण है। अुसमें वे विशुद्ध नैतिक (मटीरियल नहीं) सहायता देनेको राजी थे। परन्तु यह बात तो अब रहा नहीं, क्योंकि अंग्रेजोंने अैसा व्यवहार नहीं किया जिससे देश स्वाभिमानपूर्वक सहयोग दे सके। अुल्टे कौमी द्वेष और आपसी मनमुटावको आदत देकर अुन्होंने कांग्रेसको झूठा सिद्ध करके विफल करनेकी चाल चली। पाकिस्तान जिस अर्सेमें यह कहा कि भारत देशमें यह कौम अितनी संख्यामें है यह कौम अितनी संख्यामें है हरिजन अितने हैं वगैरा वगैरा। ये सब

कांग्रेससे अलग है। फिर कांग्रेस है क्या और किसका है? यह अजीब बात जैसे पर नमक छिड़कने जैसी थी।

अिस अर्थमें गांधीजीने हिन्दुस्तान और अंग्रेज प्रजाको शान्तिके लिअे पत्र लिखे। परन्तु वे तो अितना ही जाननेके लिअे कीमती है कि गांधीजीका मन किस तरह काम कर रहा था क्योंकि अन पत्रोंको कौन माननेवाला था! परन्तु गांधीजीके लिअे यह वास्तविक बात थी। भारतको अपना वजन स्वाभिमानपूर्वक शान्तिके पक्षमें डालना चाहिये यह अन्हें दीयेकी तरह स्पष्ट दिखाओी दिया। और चारों ओर घने अंधकारमें अुन्होंने विनोबाको पहले और जवाहरलालजीको दूसरे सत्याग्रहीके रूपमें निश्चित करके युद्ध-निषधक सत्याग्रह आरंभ किया। दोनों व्यक्तियोंका चुनाव गांधीजीकी अुस समयकी मानसिक दशा और नये सत्याग्रहका तरीका अच्छी तरह बताता है। यह सत्याग्रह शुद्ध आध्यात्मिक शक्तिसे लेकर भारतके लिअे स्वराज्यका प्रश्न हल करने तककी गर्भित शक्ति रखता है यह अिससे स्पष्ट होता था।

रचनात्मक काम करनेवालोंको अपने काम जारी रखकर दृढ़तापूर्वक डटे रहनेको कहा गया। जो कांग्रेसके पार्लियामेंटरी कामोंमें ही दिलचस्पी रखनेवाले थे, वे लोग जेल जाने लगे। परन्तु वे यही मानते थे कि अिसमें से सामूहिक सत्याग्रह पैदा हो तभी यह सार्थक होगा। गांधीजी असा करेंगे अिस आशाके सिवा अुन्हें शायद ही कोओी आश्वासन था। और कोओी रास्ता नहीं था अिसलिअे कांग्रेसने अपने सेनापतिको जैसा सूझे वैसा व्यूह रचने देनेकी तैयारी बताओी थी। हां अपवादके रूपमें कहें तो कांग्रेसके गरम दल — समाजवादी साम्यवादी आदि — कहा करते थे कि बड़ा आन्दोलन छेड़ना चाहिये। और वे अिसीका आग्रह किया करते थे।

गांधीजीके लिअे असा आग्रह बेकार था। वे आन्दोलन छेड़नेकी तैयारी या वातावरण देशमें देख ही नहीं रहे थे। फिर भी कुछ न करते तो स्वराज्य और स्वाभिमानकी भारतकी लड़ाओी ही अंग्रेजोंने (मुस्लिम लीगके साथ मिलकर) जो चालबाजी चली थी असके कारण खतम हो जाती। यह तो कैसे होने दिया जाता?

युद्ध-निषधक सत्याग्रह अिस प्रकारकी बंधनोंसे मुक्ति देनेके लिअे था। और अिसमें वह सफल हुआ। देशके लोगोंमें फिरसे यह भावना पैदा हुआ कि हम कुछ न कुछ कर रहे हैं और कुछ नहीं किया जाता असी लाचारी

या परेशानीका जो गूढ़ हानिकारक असर देशके लोक-मानस पर पड़ता अुससे देश बच गया।

अिस प्रकार व्यक्तिगत सत्याग्रहकी लड़ाई सफल हुअी। अुसने लोक-मानसको आश्वासन दिया और धीरज बंधाया और अंग्रेजोंने कांग्रेसकी अेकताके नाम पर जो शस्त्र फेंका था वह असफल रहा। दूसरी ओर युद्ध भी दुर्भाग्यसे अुनके विरुद्ध जा रहा था। जापानने अेशियामें बड़ा जबरदस्त लड़ाअी छेड़ा था और जिस बातकी भी अंग्रेजोंको चिन्ता बनी रही थी कि सुभाषबाबू अुसमें हैं। अिस स्थितिमें चर्चिल यह हठ पकड़कर नहीं रह सकते थे कि भारतमें अिस समय युद्धके दौरानमें कुछ नहीं किया जा सकता। अमरीका और चीनका लोकमत भी अुन पर दबाव डाल रहा था कि भारतके बारेमें कुछ न कुछ करना चाहिये। अिसलिअे फिरसे जो नया कदम अुठाया गया वह था क्रिप्स मिशन का। अिस प्रकार भारतीय प्रजाके साथ समझौतेकी बातोंका युग आरम्भ हुआ जो १९४७ में भारतकी विजयसे पूरा हुआ।

११

क्रिप्स मिशन

१

अब यह कथा भारतकी स्वातन्त्र्य-यात्राकी आखिरी मंजिल पर पहुंच रहा है। अिसके प्रारम्भमें अिंग्लैंडके प्रधानमंत्रीके पद पर चर्चिल जैसा कट्टर साम्राज्यवादी था। १९४० के मअी मासमें चेम्बरलेनके चले जाने पर वह अिस पद पर आये और १९४५ में युद्धको सफल बनाकर अलग हुअे — विलायतके लोगोंने चुनावमें हराकर अुन्हें विदा किया।

परन्तु विधाताका संयोग असा हुआ कि जिन चर्चिलने यह खुली घोषणा की थी कि मैं ब्रिटिश सम्राटके साम्राज्यका सफाया करनेको प्रधानमंत्री नहीं बना, अुन्हीं चर्चिलको भारतके साम्राज्य छोड़नेसे सम्बन्ध रखनेवाली समझौतेकी बातचीत मनसे या बेमनसे शुरू करनी पड़ी। अितने पर भी अुसमें तिलभर झुकनेको अुनका मन तैयार नहीं था। अलबत्ता युद्धकी सारी परिस्थिति अुन्हें दूसरी तरफ खींच रही थी। अुसके आगे झुकनेकी

समझौतेकारी अपील निकाली। परन्तु जब तक शासन-सत्ता पकड़कर रखा जा सके तब तक पकड़ रखनेकी ही अनकी अिच्छा थी।

अपने मंत्रिमंडलमें भारत-मंत्रीके रूपमें चर्चिलने अपनी ही राजनीतिमें श्रद्धा रखनेवाले अेमरी नामक अेक कट्टरपंथीको रखा था। और १९४३ में लॉर्ड लिनलिथगो वाअिसराय-पदसे निवृत्त हुअे कि अनके स्थान पर अेक विभाग पाये सेनानी जनरल वेवलको अस जगह पर बिठा दिया। अिसलिए गांधीजीको चर्चिल-अेमरी-वेवलकी त्रिपुटीके कार्यकालमें ही अपनी समाधानकी प्रवृत्तियाँ आरंभ करना पड़ीं। यह सही है कि वे सफल हुअीं अिस त्रिपुटीके सत्तासे हटनेके बाद ही।

२

अिसमें प्राचीन किस्सामें सफल हुआ अिस गतिविधानका आरंभ अेक मिशनसे हुआ जिसे सामान्यतः क्रिप्स मिशन नाम दिया गया था। सर स्टैफर्ड क्रिप्स ब्रिटेनके मजदूर-दलके अेक नेता थे। अनके भारत-सम्बन्धी विचार अदार थे। वे पं० जवाहरलालजीके मित्र थे। चर्चिलने अन्हें थोड़े ही समय पहले रूसके साथ संधि करने जैसे विषम कार्यके लिअे मास्को भेजा था। युद्धमें यदि रूसके साथ मित्रता हो जाय तो जर्मनीकी हार संभव हो सकती है, विश्वयुद्धका अुल्टा बहनेवाला प्रवाह सीधा होकर मित्रराष्ट्रोंकी जीत हो सकती है, यह दृष्टि अिसमें थी। और अिस कार्यमें क्रिप्सको सफलता मिली। अिसके बाद चर्चिलने अन्हें अपने मंत्रिमंडलमें बड़ा पद दिया और भारतकी कठिन गुत्थी सुलझानेके लिअे अन्हें भारत भेजनेकी घोषणा की। चर्चिलने कहा कि जापानी आक्रमणके कारण भारतका मामला अितना गंभीर हो गया है कि अिस देशकी रक्षाके लिअे अुसका सारा बल अिस आक्रमणके विरुद्ध लगा देनेके लिअे अिकट्ठा करना चाहिये।

३

२२ मार्च १९४२ को क्रिप्स दिल्ली पहुंचे। अिस समय वाअिसराय पद पर लॉर्ड लिनलिथगो थे। दिल्ली पहुंचते ही तुरन्त क्रिप्सने अपना काम शुरू कर दिया और चर्चिल-सरकारने जो घोषणा करनेका काम अन्हें सौंपा था वह अन्होंने प्रकट कर दी। अुसका सार यह था:

१. विश्वयुद्ध खतम होनेके बाद तुरंत भारतका नया संविधान तैयार करनेके लिअे अेक संविधान-सभा चुनी जाय। अुसमें देशी राज्य भी भाग

कि अुसमें असी व्यवस्था रखी जाय। अिस प्रकार जो संविधान तैयार हो अुसका अमल करनेकी जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार ले। अुसमें कुछ शर्तें रहेंगी। वे ये हैं कि कोअी प्रान्त यदि अिस संविधानमें सम्मिलित न होना चाहे और वर्तमान स्थितिमें रहना चाहे तो रह सकता है और बादमें शामिल होना चाहे तो हो सकता है। अथवा वे प्रान्त अपने ढंग पर ही अपना अलग संविधान बनाना चाहें तो वैसा कर सकते हैं।

२ विश्वयुद्ध खत्म हो जाय और नया संविधान बन जाय तब तक भारतका संरक्षण-कार्य तो ब्रिटिश सरकारको ही करना होगा। हाँ, यह संरक्षण सफल रीतिसे करनेके लिअे जनतामें जो काम करने चाहियें, वे भारत-सरकार और अुसकी प्रजा जरूर करे, अुन्हें करनेकी जिम्मेदारी अुनकी होगी। अिसलिअे ब्रिटिश सरकार भारतीय जनताके मुख्य समूहोंके नेताओंका सहयोग चाहती है। सार यह है कि वे केन्द्रीय सरकारकी कार्यकारिणीमें शरीक किये जायँ।

४

अुपरोक्त धाराओंमें हमारे टुकड़े करनेका बीज साफ दिखाअी देता है। हिन्दू और मुसलमान दोनों अेक बनकर न रहें तो असा होना अनिवार्य था। अिससे यह स्पष्ट है कि अंग्रेज लोगोंकी फूट डालकर राज्य करनेकी भेदनीति भी सफल हो सकता था। अर्थात् हमारे प्रजा-शरीरकी साम्प्रदायिक दुर्भावकी कमजोरियोंका लाभ अंग्रेज राजनीतिज्ञों द्वारा अुठा सकनेका जो मौका था अुसे क्रिप्स द्वारा वांछित स्वाभाविक रूपमें पेश किया।

और तत्काल शासन-तंत्रकी सत्ता सौंपनेके सिलसिलेमें यह कहा गया कि अुसे ब्रिटिश सरकार छोड़ नहीं सकती। और मान लीजिये कि वैसा किया जाय तो भी अुसके लिअे वैधानिक सुधारोंका कानून बनाना पड़ेगा। लेकिन अभी लड़ाअी खत्म हुअे ना यह सम्भव होता नहीं और लड़ाअीके बाद वैसा कानून बनानेकी व्यवस्था अिसमें है ही।

अिसके अलावा देशी राज्योंका संविधान तैयार करनेमें भाग लेनेको बुलाया जायगा। अर्थात् किसे बुलाया जायगा? अुनके राजाओंको या प्रजाको? —यह प्रश्न भी अस्पष्ट था।

समझदारी अपनाने लगाओगी। परन्तु जब तक गांधीजीका नेतृत्व रहा जा सके तब तक पकड़ रखनेका शासन अटल रहा था।

अपने मंत्रिमण्डलमें भारत-मंत्रीके रूपमें चर्चिलने अपनी ही मान्यताओंमें श्रद्धा रखनेवाले अमरी नामक अेक कट्टरपंथीको रखा था। और १९४३ में लार्ड लिनलिथगो वाअिसराय-पदसे निवृत्त हुअे कि अुनकी जगह अेक विभाग पात्र सेनानी लार्ड वेवलको अुस जगह पर बैठा दिया। अिसका कारण चर्चिल-अमरी-वेवल त्रिपुटीके कार्यकालमें ही अंग्रेजोंका गधियानामें आरम्भ करना पड़ा। यह कही है कि यह गफलत हुआ अिस त्रिपुटीके हाथोंसे लन्दनसे बाद ही।

२

अन्तमें गेलीन विस्तारमें सफल हुआ अिस मजबूरीका आरम्भ अेक मिशनसे हुआ जिस समयमें क्रिप्स मिशन नाम दिया गया था। सर स्टैफर्ड क्रिप्स विलायतके मजदूर-दलके अेक नेता थे। अुनके भारत-सम्बन्धी विचार अुदार थे। वे पं. जवाहरलालजीके मित्र थे। चर्चिलने अुन्हें थोड़े ही समय पहले रूसके साथ संधि करने जैसे विषम कार्यके लिअे मास्को भेजा था। युद्धमें यदि रूसके साथ मित्रता हो जाय तो जर्मनीको हराना संभव हो सकता है, विश्वयुद्धका अुलटा बहनेवाला प्रवाह सीधा होकर मित्रराष्ट्रोंकी जीत हो सकती है, यह दृष्टि अिसमें थी। और अिस कार्यमें क्रिप्सको सफलता मिली। असके बाद चर्चिलने अुन्हें अपने मंत्रि-मंडलमें बड़ा पद दिया और भारतकी कठिन गुत्थी सुलझानेके लिअे अुन्हें भारत भेजनेकी घोषणा की। चर्चिलने कहा कि जापानी आक्रमणके कारण भारतका मामला अितना गंभीर हो गया है कि अिस देशकी रक्षाके लिअे अुसका सारा बल अिस आक्रमणके विरुद्ध लगा देनेके लिअे अिकट्ठा करना चाहिये।

३

२२ मार्च १९४२ को क्रिप्स दिल्ली पहुंचे। अिस समय वाअिसराय पद पर लार्ड लिनलिथगो थे। दिल्ली पहुंचते ही तुरन्त क्रिप्सने अपना काम शुरू कर दिया और चर्चिल सरकारने जो घोषणा करनेका काम अुन्हें सौंपा था वह जाहिर कर दी। असका सार यह था :

१. विश्वयुद्ध खतम होनेके बाद तुरत भारतका नया संविधान तैयार करनेके लिअे अेक संविधान-सभा चुनी जाय। असमें देशी राज्य भी भाग

दे सकें ऐसी व्यवस्था रखी जाय। जिस प्रकार भी संविधान तैयार हो अुसको अमलमें लानेकी जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार ले। अुसमें कुछ शर्तें रहेंगी। वे ये हैं कि कोअी प्रान्त यदि अिस संविधानमें सम्मिलित न होना चाहे और वर्तमान स्थितिमें रहना चाहे तो रह सकता है और बादमें शामिल होना चाहे तो हो सकता है। अथवा वे प्रान्त अलग ढंग पर ही अपना अपना संविधान बनाना चाहें तो वैसा कर सकते हैं।

२ विश्वयुद्ध खत्म हो अुसके बाद और नया संविधान बन जाय तब तक भारतका संरक्षण-काम तो ब्रिटिश सरकारको ही करना होगा। हां, यह संरक्षण सफल ढंगसे करनेके लिये जनतामें जो काम करने चाहिये वे भारत-सरकार और अुसकी प्रजा जरूर करे, अुन्हें करनेकी जिम्मेदारी अुनकी होगी। निःसन्देह ब्रिटिश सरकार भारतीय जनताके मुख्य समूहोंके नेताओंका सहयोग चाहती है। सार यह है कि वे केन्द्रीय सरकारकी कार्यकारिणीमें शरीक किये जायें।

४

अुपरोक्त घोषणामें भारतके टुकड़े करनेका बीज साफ दिखाओ देता है। हिन्दू और मुसलमान कौमें अब बराबर न रहें तो ऐसा होना अनिवार्य था। अिससे यह स्पष्ट है कि अंग्रेज लोगोंको फूट डालकर राज्य करनेकी नीति भी पसन्द हो सकती थी। अर्थात् हमारे प्रजा शरीरको साम्प्रदायिक सद्भावकी कमजोरीका लाभ अुठाने राजनीतिज्ञों द्वारा अुसे मसलना जो मौका था अुसे जिन्ना द्वारा अविभक्त दस्तावेजके रूपमें पक्का किया।

और तत्कालीन शासन-तन्त्रकी सत्ता सौंपनेके सिलसिलेमें यह कहा गया कि अुसे ब्रिटिश सरकार छोड़ नहीं सकता। और मान लीजिये कि ऐसा किया जाय तो भी अुसके लिये बाकायदा पार्लामेंटका कानून बनाना पड़ता। लेकिन अभी लड़ाई चलते हुअे तो यह संभव होगा नहीं और लड़ाईके बाद ऐसा कानून बनानेकी व्यवस्था अिसमें है ही।

अिसके अलावा देशी राज्योंको संविधान तैयार करनेमें साथ लिया जायगा। अर्थात् किन्हें बुलाया जायगा? अुनके राजाओंको ही या प्रजाको भी? — यह प्रश्न भी अस्पष्ट था।

५

अिस प्रकार असली सत्ताका सूत्र हाथमें रखकर अंग्रेज निकल जाना चाहते थे यह बात अिस प्रस्तावमें स्पष्ट था। जिसके सिवा आगे चलकर जब संविधान बने तब देशी राजाओं तथा मुस्लिम लीग जिन्होंने मिलकर उसकी रचनामें विविध विवाद और बाधा पैदा करनेका पूरा सामग्री भी अुसमें मौजूद था। अिसलिअे गांधीजीने तो दिल्लीके अिस प्रस्तावको भविष्यमें भननेवाला गरमियानी चेक बताया।

कांग्रेस और बादमें मुस्लिम लीगने फौरन अिस प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया और अिस प्रकार यह मंत्रिवार्ता यहीं अटक गअी।

यह साफ हो गया कि अिस असफलताका मूल कारण था चर्चिल सरकारकी भारतको सत्ता सौंपनेकी तैयारी न होना। माना जाता है बात चीनको रोककर अचानक सर क्रिप्स ता० १२-४-४२ के दिन मंत्रिवार्ता सफल न हो सकनेकी घोषणा करके बिलायत चले गये।

परन्तु अिस समयसे अेक बात जरूर चल पड़ी कि जो प्रांत टूटकर करके अलग रहना चाहे वह असा कर सकता है। और राजाओंका अिजन तो अंग्रेजोंके हाथमें थी ही। अिस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पाकिस्तानकी मांगका बीज और देशी राजाओंका सवाल दोनों सामने पहली ही बार अेक राजनीतिक दस्तावेजमें दर्ज हुअे। अंग्रेज राजनीतिज्ञ ताम भारतके नेताओंके साथ अपना बाजी खेलनेके लिअे जो सुरपका अिक्का था वह अिस प्रकार नाचे अतारा गया जिससे बाहरके बाहर दिखाओ दे। अिससे अेक बात तो तुरंत हुअी चर्चिलको युद्धकालमें [कुछ न करके केवल बातें बनानेका साधन मिल गया। परंतु भारतके लिअे तो वह सचमुचका खेल था। अुसका तो आगे बढ़ सिवा काम] चल ही नहीं सकता था।

१७

'भारत छोड़ो' की लड़ाई

१

किन्तु मित्रगण असफल होनेका असर पर बिना कम रहना? भारतके सभी वर्ग और दल जिस चिन्तामें पड़ गये कि अब क्या किया जाय जिससे अंग्रेजोंका पता भी चुका यह राजनीतिक गत्या मुल्य'

जिस प्रकार चिन्तामें पड़े हुए सब दलोंको हमें दो विभागोंमें गिनाये जा सकते हैं

१ राष्ट्रीय दृष्टिसे आगे विचार करके चलनेवाले नानिवार जो दल

(१) काग्रेस।

(२) समाजवादी जैसी पक्षरहित मनावृग।

२ जनन हितोंकी मुख्य दृष्टिसे काम करनेवाले बाकी सब साम्प्रदायिक दल

(१) मुस्लिम लीग।

(२) हिन्दू महासभा तथा सिक्ख।

(३) आम्बेडकरवादी हरिजन-दल।

ऐसा राजाजी जिस समय कुछ नहीं पसन्द था व सो सर्वोपरि अंग्रेजी राज्यके हाथमें थे। जबकि जिस समय भारतके जिस मांगको धार करना नहीं चाहते थे।

अंग्रेज सरकारको तो कोई खास चिन्ता नहीं थी क्योंकि उसने मान लिया था कि साम्प्रदायिक झगड़ोंका पत्थर फेंक दिया है और युद्धकालका मौका है जिसलिये भारतको सारी दुनियाके लिहाजसे तथा बाहर मदद बनकर भारतमें सरकारको लड़ाकी चाह रखा जा सकता। जिसलिये उसने तो एक जैसा बातका रुख अपनाया और उसमें गाड़ दिलदिया है कि भारतके सभी प्रमुख दल एक होकर कोई निश्चित सर्वसम्मत बात करें तो हम उसके अनुसार काम करनेको तैयार हैं।

२

अग्रजोंका यह भाव कुछ गलत हुआ माना जायगा। श्री गांधीजी और श्री राजा यह मानकर कि अिस प्रान्तको कौमी अरना पन्त करो हमें अग्रजोंके पास पहुंचना चाहिये मविधानी करना बारेमें सोचने लगे।

अखंड भारतके स्वराजके विरोधी साम्प्रदायिक दलोंको यह अच्छा मौका मिला। जिन दलोंमें मुख्य थी मुस्लिम लीग अगरेजोंकी अनुकरण करके जनोंके आवन्दरसन्लन किया। दोनों जिस स्थितिमें लाभ उठाने लिये अपनी मांग पेश करने लगे। जिनके सामने बिल्कुल न झुकनेकी बात कहनेवाले विरोधी साम्प्रदायिक दल थे हिंदू महासभा और सिक्ख। मुस्लिम लीगके साथ बात करनेवालोंसे वे साफ कहते थे कि जरा भी झुकोगे तो हम तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे।

जिस प्रकार अक बार तो अग्रेज सरकारका भेदवाली दाव खूब चल गया। सच्चा दुःख और गहरी परेशानी तो बापूको थी। अक तरहसे कहें तो १९४ में अुनकी जो दशा थी वैसी फिर नये और गंभीर रूपमें पैदा हो गयी। १९४० में युद्ध निषेधके व्यक्तिगत सत्याग्रह द्वारा काम लिया गया। जिस बार असरसे भी बढ़ चढ़ कर कदम अुठाया गया और वह था भारत छोड़ो की चुनौती देना।

३

क्रिप्स मिशनके जानेके बाद गांधीजीका आत्म-मंथन खूब बढ़ गया। अुन्होंने सारी परिस्थितिका असा निदान किया कि अभी जो कुछ हो रहा है वह निरा निरंकुशताका व्यवस्थित अधर्म है असे व्यवस्थित अधर्मको जारी रखनेवाली अंग्रेजी सत्ताका हमारे बीचसे निकल जाना बहतर है। भले ही असिसे देशमें अराजकता फैल जाय यह अराजकता अंग्रेजी शासनके योजनाबद्ध अधर्मसे अधिक स्वागतयोग्य होगी क्योंकि अिसमें देशके मुख्य नेता आपसमें मिलकर अपना पसन्दका हल खोज सकेंगे। आज अंग्रेज अपना रंग रागमें बसी हुअी भेदनीतिका सहारा लेकर भारतीय जनताका सत्व हरण कर रहे हैं यहां तो अक महान राष्ट्रके साथ असके जीवनका खिलवाड़ किया जा रहा है। यह स्थिति मिटनी ही चाहिये। जिसका अकमात्र मार्ग यह है कि अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायं असा अनसे साफ कह देनेका समय आ गया है।

अिस विचारको गांधीजी अपने 'हरिजन' पत्रोंमें विस्तारसे कह रहे थे और भारतकी जनता अनकी अिस चर्चाको चुपचाप ध्यानपूर्वक पान कर रही थी।

लीग लोगोंको जितना अच्छा मौका हाथमें आया तो था, जितने उसने अपने लाभकी सत्ता बांधा जमा ली। पंजाबमें श्री सिकन्दर हयातका अिस अरसेमें गुज़र गये। अनके सामने लीगको कुछ दबना पड़ता था। अब ऐसी स्थिति नहीं रही। अिस प्रकार अंग्रेज सरकारकी तरह मुस्लिम लीगकी भी अिस समय खूब बन आयी।

४

६ जुलाई १९४२ को कांग्रेसकी कार्यसमिति वर्धामें मिली। अुसने सारी परिस्थितिका चारों तरफसे अन्दाजा लगाकर यह प्रस्ताव पास किया कि अब तरहसे लगते हुअे ब्रिटिश राज्यसत्ताको तुरंत भारतसे हट जाना चाहिये। तभी साम्प्रदायिक सवालोंका और युद्धमें जीतनेका भी सच्चा हल निकल सकेगा। ऐसा होने पर भारतका जिम्मेदार नेतावर्ग मिलकर अपने देशका कारोबार सम्हालनेकी सच्ची कोशिश करेगा और अुसके प्रश्नोंका हल कर सकेगा। युद्ध जीतनेके लिये भी वे मित्र राष्ट्रोंके साथ बराबरीकी हैसियतसे विचार कर सकेंगे। यदि ऐसा न हुआ तो गांधीजीके नेतृत्वमें राष्ट्रव्यापी शांत लड़ाई छेड़ दी जाय।

कांग्रेसका यह प्रस्ताव प्रकाशित होते ही चारों तरफ सब दल अुसके विरुद्ध अपना मत प्रगट करने लगे। श्री राजाजीने कांग्रेस छोड़ दी। श्री सप्रू, जिन्ना वगैरा लोगोंने शुरूसे ही कांग्रेसकी अिस मुक्ति पुकारको असमान रूपमें गिराया था। परन्तु आम जनताने अिस पुकारका हृदयसे स्वागत किया। और ८ अगस्त १९४२ को आज़ादीकी यह अंतिम लड़ाई शुरू हो गयी।

सरकारने अुसी दिन गांधीजी वगैरा कांग्रेसी नेताओंको तथा दूसरे अनेक लोगोंको पकड़कर जेलमें डाल दिया। और आग बबूला होकर निर्लज्जताके साथ गांधीजी पर यह अिल्जाम लगाया कि आपने छिपे तौर पर जापानी शत्रुकी सहायता देनेके लिये यह तूफान खड़ा किया है। अिसमें अुसका यह मतलब तो स्पष्ट था कि बाहरके देशोंमें गांधीजीकी प्रतिष्ठा पर धब्बा लगाया जा सके और भारतमें चल रहा स्वतन्त्रताका जज़्बा दबाया जा सके। अिस अिल्जामको झूठा साबित करना ज़रूरी था। यह काम गांधीजीने जिम्मे ले लिया।

गांधीजीने सरकारके अिस अिल्जामका कड़ा विरोध किया और अपनी निर्दोषताके बारेमें २१ दिनका अपवास करके सारा भ्रम मिटाया, जिसमें वे सहीसलामत बचे। परन्तु कस्तूरबा बीमार हो गअीं और वहीं अुनका अवसान हो गया। अिस प्रकार आखिरमें गांधीजीको सरकारकी तरफसे शारीरिक और मानसिक व्यथा सहनी पड़ी।

लड़ाअी छिड़नेके थोड़े ही दिन बाद कार्यकर्ता कुछ लोगोंने — खास तौर पर समाजवादी विचारधाराके लोगोंने — देशभरमें तोड़फोड़का तरीका अख्तियार किया। जिसके विरुद्ध गांधीजीने जेलमें और बाहर आकर भी अपना मत प्रकट किया कि यह हिंसा ही थी, अुसे अहिंसक कदम नहीं कहा जा सकता।*

५

जेलमें गांधीजीने लार्ड लिनलिथगोके साथ पत्रों द्वारा बातचीतका साधन जारी रखा था, परन्तु अुससे कोअी खास लाभ नहीं हो सका। वाअिसरायने कुछ भी न करनेकी लगभग गांठ बांध ली थी, क्योंकि यह वृत्ति चर्चिलने धारण की थी। अिसलिअे लिनलिथगो जो केन्द्रीय सरकारमें निरंकुश शासन जारी करनेका विशेष ध्येय लेकर सात वर्ष पहले भारत आये थे, अिस दिशामें कुछ भी कर न सके और ता० २०-१०-४३ को वापस चले गये। अुनकी जगह लार्ड वेवल वाअिसराय बनकर आये। भारतमें अिस समय वैसा ही निरंकुश शासन जारी था जैसा कम्पनी सरकारके जमानेमें अंग्रेज गवर्नर करते थे। अपवाद-स्वरूप मुस्लिम लीगकी सत्तावाले तीन चार प्रान्त थे।

कांग्रेसकी अिस लड़ाअीसे अधिकारियोंकी सब बातें दब गअीं और अेक बात स्पष्ट हो गअी कि भारतका प्रश्न मूलमें विदेशी सत्ताको बदलनेका ही है, और यदि अंग्रेज अिसे न समझें तो भारतकी जनता अुनकी भ्रमणाओंमें फंसकर अिस मूल बातको भूल न जाय। अिससे भारतका राजनीतिक वातावरण साफ हुआ और राजनीतिक सत्ताके परिवर्तनका मूल प्रश्न सामने लाया जा सका।

---

* ७ दिसम्बर १९४५ को हुअी अपनी बैठकमें कांग्रेस कार्यसमितिने भी अपने अेक प्रस्तावमें अिस नीतिका निषेध किया था।

१३

लडाअीका अंत और नअी ब्रिटिश सरकार

लॉर्ड वेवलके वाअिसरॉय-पद पर आने ही तुरंत भारतके प्रश्नने और अुसको हल करनेकी बातचीतने नया रंग नहीं पकड़ा। भारतकी गुलामीकी कुंजी चर्चिलके पास थी। वह न घूमे तब तक वाअिसरॉय क्या करे? तब तक अुस प्रचलित नीतिका ही रटन करनी थी। और वेवलने शुरूमें यही किया। अन्होंने गांधीजीके साथ जेलमें जो पत्र-व्यवहार हो रहा था अुसमें बताया कि आप पहले यह स्वीकार कीजिये कि आपकी लड़ाअी भूलभरी है अिसके बाद कुछ हो सकता है। और कुछ भी कर सकनेके लिअे सबको अेकमत पर तो आना ही चाहिये। नहीं तो अंग्रेज सरकार अिस कठिन युद्धकालमें भला क्या कर सकती है?

दूसरी ओर लीगकी तरफसे श्री जिन्नाने अब तक अपनी बाजी जमा रखी और कांग्रेसके 'भारत छोड़ो' सूत्रको सुधार कर लीगकी तरफसे (दिसम्बर १९४३) घोषित किया — 'देशका विभाजन करो और चले जाओ!'

फिर भी अपने मनमें वेवल स्वयं जो सोचने लगे वह यह था कि अब युद्ध समाप्त होता दिखाअी देता है। अिसलिअे युद्ध खतम होनेके बाद ब्रिटेनको कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। तो फिर अुसका थोड़ा-बहुत अंदाज अभीसे लगाना क्यों न शुरू कर लिया जाय?

यह विचार पक्का करनेके लिअे वेवलने अगस्त १९४४ में सब गवर्नरोंकी परिषद् दिल्लीमें बुलाअी और अुसके सामने यह विचार रखा। सब गवर्नर अिससे सहमत हुअे। यह तय किया गया कि भारतके विविध दलोंके नेताओंसे मिलकर अंतरिम कालकी कामचलाअू सरकार बनानेके बारेमें अनसे चर्चा की जाय। यह अगर बनाअी जा सके तो वर्तमान कानूनके मातहत रह कर बनाअी जाय। दूसरी ओर स्वतंत्र भारतका संविधान तैयार करनेके लिअे संविधान-सभा बनानेका प्रयत्न किया जाय। प्रांतोंमें लोकप्रिय मंत्रिमंडल फिरसे बनाये जा सकते हैं या नहीं, अुसकी भी जांच की जाय।

अिस प्रकार युद्धकालमें सब नागरिकोंकी सह-सम्मतिके साथ स्वतन्त्र अपने विचारकी रूपरेखा भारत-मंत्री श्री अमरीके पास भेजी। अमरीको यह योजना अच्छी नहीं लगी। अुसने अपनी दूसरी योजना बनाओ। जो वेवेलको बहुत पसन्द नहीं आओ।

सरकारी क्षेत्रोंमें खानगी तौर पर यह सब हो रहा था। अितनेमें श्री सप्रू फिर कुछ स्वतन्त्र दलके भारतीय नेताओंको मदद साथ ले और योजना सार्वजनिक रूपमें पेश की। अिन सबका तुरन्त कोओ परिणाम नहीं निकला। परन्तु अेक बात अंग्रेज लोग जरूर निश्चित कर चुके कि भारतीय नेताओंके अेकमत पर आनेकी जिम्मेदारी अुन्हीं पर छोड़कर अपनी नीति बदलने रहनेसे अब काम नहीं चलेगा। अुसके बजाय अब ब्रिटेनको यह दिखाना होगा कि भारतके सम्बन्धमें सचमुच कुछ करनेका अुसका अिरादा है। अिस लिअे भारत-मंत्री श्री अमरीने यहां तक विचार किया कि अैसी नीति घोषित करके आगे बढ़ा जाय कि भारतको ब्रिटेनकी बराबरीका दर्जेवाला औपनिवेशिक राज्य बनाकर अुसे अपना कारबार खुद चलानेकी स्वतन्त्रता देनी चाहिये। जिसके बिना यह समस्या सुलझ नहीं सकती।

ब्रिटिश शासकोंका यह विचार भारत छोड़ो सम्बन्धी गांधीजीके विचारकी नैतिक विजय मानी जायगी।

दूसरी ओर लीगका भी बोलबाला बढ़ा। श्री जिन्नाने असी निरंकुश सत्ता प्राप्त की कि मुसलमानोंकी तरफसे वे जो कहें वही हो। गांधीजीने जिन्नाके साथ समझौतेकी बातचीत की, वह असफल रही। और यदि तुरन्त सत्ता परिवर्तन करना हो तो मुसलमानोंको आधोआध सत्ता देनी चाहिये अैसा दावा लीगने युक्ति-प्रयुक्तिसे खड़ा कर लिया।

केन्द्रीय विधान-सभामें कांग्रेस-दल और लीग-दल थे। अुनके नेता श्री भूलाभाओ देसाओ और श्री लियाकतअली खान भी मिलकर समस्याके हलका अेक रास्ता सोचा। परन्तु जहां हलकी आशा ही नहीं थी वहां यह सारा प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होनेके सिवा और क्या होता?

फिर भी अिस सबमें से यह सार जरूर निकला कि भारतका प्रश्न निपटाये बिना अब काम चल ही नहीं सकता।

अिसलिअे मार्च १९४५ में वेवेल भारत-मंत्रीसे मिलने लन्दन पहुंचे। दो महान बातें ता० ७-५-४५ को जर्मनीका पतन हुआ, जापान बाकी रह

गया था या उसका तो पतन समाप्त हुआ था। इससे सरकारको लगा कि भारतीय समस्याको और भी तत्परतासे हल करना चाहिये।

८ जून १९४५ को लार्ड वेवल भारत लौटे और शिमलामें अन्य भारतीय नेताओंका एक सम्मेलन बुलाया। उसका मुख्य प्रयोजन वाइसरायकी नई कार्यकारिणी बनाना था जिसमें सब दलोंका प्रतिनिधित्व हो। पहलेकी तरह इस परिषदसे भी कुछ काम लायक परिणाम नहीं निकला। लीगने हठ पकड़ा कि उसका यह दावा स्वीकार किया जाय कि वही एकमात्र मुस्लिम प्रतिनिधि-संस्था है। इसे कांग्रेस कैसे मान सकती थी? इसलिए बात वहीं अटक गई। कौमी एकताके मौकेपर काम करनेमें कांग्रेस और लीग तैयार न हो सकीं। लीगने ऐसा करके भी अपना भाव और बढ़ा लिया।

अब आगे क्या किया जाय यह सवाल तो खड़ा ही था। इतनेमें दो बातें नई हुईं। जिससे फिर गुत्थी सुलझानेका रास्ता निकले या उसे आजमा कर देखनेकी संभावना पैदा हुई। वे दो बातें थीं (१) इंग्लैंडमें नया चुनाव हुआ जिसमें चर्चिल-दल हारा और एटलीका मजदूर-दल जीता (२) जापान पर ता० ६–८–४५ को अणुबम गिराया गया। नौ दिन बाद ता० १५–८–४५ को जर्मनीके पश्चात् जापान भी शरणमें आ गया। अब लड़ाईके बहाने भारतका प्रश्न स्थगित या ठंडे बस्तेमें नहीं रखा जा सकता था। बल्कि यह तय हुआ कि अन्तरिम सरकार बनानेकी बात तो टाल अब भारतके स्थायी हलका विचार करना चाहिये। अंतमें चर्चिलका दबाव भी नहीं रहा। यह भी स्थितिमें बड़ा परिवर्तन हुआ माना जायगा।

ब्रिटेनकी मजदूर-दलकी सरकारने अविलंब तत्काल भारतके विषयमें विचार शुरू किया। उस सरकारमें सर स्टैफर्ड क्रिप्स एक प्रमुख मंत्री थे। उन्होंने सुझाया कि भारतमें अब नया चुनाव हो जाय। उसके आधार पर आगे बढ़ना आसान होगा। केन्द्रीय विधान-सभाओंका १९३४ में और प्रान्तीय विधान-सभाओंका १९३७ में चुनाव होनेके बाद दूसरा चुनाव हो नहीं सका था। भारतने आगामी चुनावकी बातका स्वागत किया ताकि युद्धकालका निरंकुश अफसरी राज्य हटे और भारतके राजनीतिक क्षेत्रमें कुछ नई और शुद्ध हवा बहने लगे।

अुसके अनुसार वाअिसरॉयने घोषणा की और यह भी कहा कि यह सारा भारत-मंत्रीसे मिलकर निश्चय किया जायेगा।

ता० २१-८-४५ को यह घोषणा करके २८ को वह विलायतके लिअे रवाना हुअे। बादमें १६ सितम्बरको लौटे। और नअी ब्रिटिश सरकारसे बात करके १९ तारीखको यह घोषणा की गअी कि चुनाव खतम होनेके बाद संविधान-सभा बनानेकी कार्रवाअी की जायगी ताकि वह भारतका स्वतंत्र संविधान तैयार करे।

अिस बीच लेबर सरकारको भारतमें भी अुचित ढंगसे संभालना जरूरी था। अिसलिअे चुनाव-कार्य पूरा होनेके बाद भारतके प्रमुख राजनीतिक दलोंके समर्थनवाली नअी कार्यकारिणी भी बनाना जरूरी था। अपनी नेक नीयत प्रगट करनेको कि यह काम ब्रिटेन सचमुच करना ही चाहता है, मजदूर सरकारने पार्लियामेण्टके १० सदस्योंका अेक प्रतिनिधि मंडल भारतीय नेताओंसे मिलनेके लिअे भारत भेजा। वह जनवरी १९४६ में भारतका भ्रमण करके गया। चुनावका समय होनेके कारण अुसे प्रत्यक्ष देखनेको भी काफी मिला।

अिसलिअे देशकी राजनीति चुनाव पर केंद्रित हुअी। कांग्रेसने संपूर्ण स्वाधीनताके आधार पर यह काम आरंभ किया और लीगने पाकिस्तानकी मांग पर। अिन दोनों दलोंके बीच कोअी समझौतेका मार्ग न निकलनेसे कठिनाअी स्पष्ट थी। शासनने अिसके लिअे फिरसे प्रयत्न किया लेकिन वह बेकार रहा। लीग अब अपनी पाकिस्तानकी नीति पर अधिकाधिक दृढ़ होती गअी। अिसके सिवा अुसने जनतामें दंगों तकके आंदोलन चलानेका काम छेड़ दिया। मतलब यह कि जब तक जिन्ना साहब लीगके नेता रहे तब तक कौमी अेकताकी बात मुश्किल ही थी।

१४

अंतरिम सरकार

विधान-सभाओंके चुनावका परिणाम कांग्रेस और लीगकी मानी हुई जीतके अनुसार आया। पहला चुनाव केन्द्रीय विधान-सभाका हुआ। १०८ के अंतमें अुसके परिणाम मालूम हो गये। अुसमें १०२ बैठकोंमें से कांग्रेसने ५७ और लीगने ३० बैठकें जीती थीं। दोनोंने अिस परिणामसे धन्यता अनुभव की। दोनोंके बीच साफ गहरी खाअी है यह और भी स्पष्ट हुआ।

ता० २८-१-४६ को केन्द्रीय विधान-सभाकी पहली बैठक हुअी। वाअिसरायने अुसके सामने भाषण देते हुअे आगेकी नीति फिरसे बताअी और कहा कि अब अंतरिम सरकार बनाने और संविधान-सभा बुलानेका काम होगा।

लोगोंको आशा बंधी कि चर्चिल-राज्यमें जो गाड़ी गड्ढेमें फंसकर अटक गअी थी वह अब गड्ढेसे बाहर निकलकर चलने लगेगी।

प्रान्तीय विधान-सभाओंके चुनाव बादमें पूरे हुअे। अुनके परिणाम लगभग अुपरोक्त ढंग पर ही आये। अुसी आधार पर मंत्रि-मंडल भी वहां बने। यों तो लीग पांच प्रान्तोंको अपना मानती थी, परन्तु अुसके मंत्रि-मंडल केवल सिंध और बंगालमें ही बने और सब जगह कांग्रेस-सरकारें सत्तारूढ़ हुअीं।

लॉर्ड वेवलने अब आगे बढ़नेमें अुपरोक्त दो बातोंके सिवा प्रान्तोंमें कांग्रेस-लीग-सहयोगको संभव बनानेकी कोशिश करनेका तीसरा काम भी मनमें सोच लिया था। सारा सवाल कांग्रेस और लीगके दो दलोंको किस तरह मिलाकर भारतका राज्य अुन्हें सौंपनेका था।

ब्रिटिश सरकारने अब समस्याको हल निकालनेके लिअे मंत्रि-मंडलके ही तीन सदस्योंका मिशन भारत भेजनेकी घोषणा की (ता० १९-२-४६)। पार्लियामेंटमें दूसरे महीनेमें जो चर्चा हुअी अुसमें प्रधानमंत्री श्री अेटलीने कहा कि भारतका प्रश्न बड़ा गंभीर है, अुसे हल करना ही होगा। कोअी अेक अल्पसंख्यक दल अड़ंगा लगायेगा तो अब असे नहीं चलने दिया जायगा।

कैबिनेट मिशन ता० ४-५-४६ को दिल्ली आया। पूरे तीन माह यह दिल्लीमें रहा। दोनों मुख्य दलोंमें मिलकर अेक राह निकालनेकी कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली। अिसलिये ता० १६-५-४६ को मिशनने अिस बातचीतके फलस्वरूप किसे निश्चय पर पहुंचा अिस सम्बन्धमें अपनी अपनी धारणा प्रगट की।

यह घोषणा वार्ताका मार्ग बतलाने और सविधानका मुख्य दस्तावेज बना। जिसमें अुसने साफ घोषित किया कि (१) मिशन दलोंका भाग करके स्वतंत्र दो राज्य बनानेकी सिफारिश नहीं कर सकता। (२) देशी राज्य अंग्रेजी साम्राज्यमें आनेसे पहले जैसे आजाद थे असी स्थितिमें रहेंगे यद्यपि देशका सविधान तैयार करनेमें वे जरूर भाग लेंगे और अुसमें भरसक सहयोग देंगे। (३) नया सविधान तैयार करनेमें मुख्य कौनसी बातें ध्यानमें रखना होगी अिस बारेमें यह निर्णय किया गया कि ब्रिटिश भारत और देशी राज्य मिलाकर अेक संयुक्त-राज्य बनेगा। अनेक प्रांत मिलकर अपने अुप-समूह राज्य बनाना चाहें तो बना सकेंगे जिनकी विधान सभा कार्यकारिणी आदि अलग बनाओी जा सकेंगी। (४) सविधान तैयार करनेका काम करनेवाली सविधान-सभा किस ढंगसे बनाओी जाय अिसकी स्पष्टता की गओी और वह किस पद्धतिसे अपना काम करे अिसका भी अुसमें निर्णय किया गया। भारतमें राज्यसत्ता लोगोंके हाथमें जाय तब अुससे पैदा होनेवाले कुछ मामलोंके बारेमें सविधान-सभाको ब्रिटेनके साथ अेक संधि करनी होगी। तथा (५) यह काम होने तक बीचके समयका सारा प्रबन्ध सभी दलोंके जरिये भारतके मुख्य दलोंकी बनी हुआ कामचलाअू सरकार बनाओी जायगी जिसे गवर्नर जनरल और ब्रिटिश सरकार पूरा सहयोग और सहायता देंगे।

और अिस प्रकार काम आगे बढ़ानेका प्रयत्न लॉर्ड वेवलने प्रारंभ कर दिया। पहला काम अंतरिम सरकार बनानेका था। सविधान-सभाका चुनाव भी शुरू करना था। नअी सरकार बनते ही सविधान-सभा बुलाओी जानेवाली थी जिसे सविधान बनानेका काम शुरू करना था।

अंतरिम सरकार बनानेका काम शुरू हुआ। परन्तु अिसमें वेवलको तुरत या वांछित सफलता नहीं मिली। अेक या दूसरा अेतराज अुठाकर लीग अुसमें आनेसे अिनकार ही करती रही। पहले अुसने मिशनकी ता० १६

मओवाली घोषणा स्वीकार की थी। बादमें बदलकर अुसे अस्वीकार कर दिया। ब्रिटिश सरकारके लिअे यह बड़ा कठिन प्रश्न हो गया कि क्या कांग्रेससे जिसने यह घोषणा स्वीकार की है सरकार बनानेको कहा जाय? अिस पर लीग क्या रवैया अपनायेगी?

अिस परेशानीका हल अेक अैसा निकाला जिससे आगे बढ़नेमें मदद मिले। और ता० ६-८-४६ को लार्ड वेवलने कांग्रेसको सन्देशा भेजा कि वह अंतरिम सरकार बनानेमें मदद करे। यह सरकार कितने आदमियोंकी हो, अुसमें विभिन्न जातियोंको किस हिसाबसे कितना प्रतिनिधित्व मिले, अुनके नाम कौन बताये आदि तरह तरहके सवाल जिसके साथ जुड़े हुअे थे।

लार्ड वेवलने अेक बार तो कार्यकारिणीके सदस्योंके नाम वगैरा कांग्रेसके साथ मिलकर तय कर लिये और अुन्हें ता० २-९-४६ को पद पर बैठा दिया। जिससे मुस्लिम लीगके क्रोधका पार नहीं रहा। अुसने सीधी कारवाओ छेड़नेका प्रस्ताव पास किया था। देशमें — खास तौर पर बंगालमें — साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो गये। लीगने अपना उद्देश्य पूरा करनेके लिअे हद कर दी। यों कहिये कि देशकी जनता और सरकारके विरुद्ध खुला विद्रोह करनेका फरमान निकाला!

अंतरिम सरकार जैसे सत्तास्थानसे लीग वंचित रह गयी जिससे अुसे बड़ा आघात हुआ। लार्ड वेवलके साथ कुछ बातचीत करनेके बाद श्री जिन्नाने अुसमें अपने पांच सदस्य भेजनेकी तैयारी दिखाओ और ता० २६-१०-४६ को वे ले लिये गये।

अिस प्रकार अंतरिम सरकार सब दलोंके सदस्योंको लेकर सरकार बनी। स्पष्ट है कि अब मंत्रिमंडलके रूपमें अिन दलोंके सदस्योंको अेक जमात बनकर काम करना चाहिये था और लीगको संविधान-सभाके आगेके काममें सहयोग देना चाहिये था। अर्थात् अुसे कैबिनेट मिशनकी १६ मओकी घोषणाको फिरसे स्वीकार करना चाहिये था। अिस प्रकारकी स्पष्टता भी वेवलने लीगके सदस्योंको लेते समय जिन्नाके साथ कर ली थी। परन्तु लीगने अिनमेंसे अेक भी वचनका पालन नहीं किया और अंतरिम सरकारमें भी झगड़ा सीमा पर पहुंच गया। सरकारी व्यवस्था-तंत्र और सेना तकमें यह भेद पड़ गया।

दूसरी ओर देशमें मुस्लिम लीगकी सीधी कारवाओके दंगे और प्रदर्शन होते रहे। सारी परिस्थितिमें संतोषकी बात अितनी ही थी कि देशकी

स्थानोंमें दोनोंके बीच झगड़ा शुरू होने पर भी चल रही थी। सारे मुल्कमें सांप्रदायिक राजनीतिकता और अुन्मत्त साम्प्रदायिकता आग बढ़ाता था। परन्तु अिसके अलावा मन्त्रिमण्डलमें काम करनेवाले लीग मुसलमानोंके नाम पर तो कांग्रेसको अपनी जिद पूरी करने पर तुला हुआ था। अिसलिये पग पग पर अराजकता जड़ी हो रहती थी। ब्रिटिश सरकार सच मन होने हुअे भी आगे करना चाहती है अिस विश्वासमें भारतीय जनता सारी घटनाओंको देख रही थी। अिस तरहका विश्वास-भंग असी कठिन परिस्थितिमें भी बड़ी भारी चिन्ता थी। ब्रिटिश सरकार अिस तरहका किसी भी तरह आंच आने देगी तो असकी सारी गाड़ी अुलट जाती और फिरसे भारतीय जनताके लिअे स्वाधीनता मांग लेनेका मौका आ जाता यह स्पष्ट था।

१५

संविधान-सभा सम्बन्धी गतिरोध

अंतरिम मिश्र सरकार ता. २६-१०-४६ को बन गअी थी। बादमें असे संविधान सभा बुलानेका काम करना था। मुस्लिम लीग अिस मामलेमें आनाकानी करने लगी। कैबिनेट मिशनका घोषणापत्र स्वीकार करनेके बारेमें असने लापरवाही दिखाअी और संविधान सभाको फिलहाल स्थगित रखने तककी बात कही।

ता. ९-१२-४६ को संविधान सभाकी पहली बैठक करनेका विचार किया गया था। अगर वह तारीख टल जाती तो अुसका असर लोगों और जनता पर खराब पड़ता, अितना ही नहीं मिशनने जो काम हाथमें लिया था असके बारेमें लोगोंको शंका होने लगती। अिसलिये ब्रिटिश सरकार रुक तो सकती ही नहीं थी। परन्तु असा मालूम होता था मानो वह लीगको तरह तरहकी मीनमेख निकालनेके लिअे प्रोत्साहन दे रही हो। क्योंकि चर्चिल-दल, ब्रिटिश आअी० सी० अेस० दल वगैरा जमातें भीतरसे और बाहरसे लीगके साथ मिलकर अुत्तेजना फैलाती थी।

लीग संविधान सभाका काम चलानेके लिअे किसी भी तरह नहीं थकी। अंतमें वाअिसरायने ता. २०-११-४६ को संविधान-सभाके सदस्योंको

सभाके निमंत्रण भेज दिये। जिससे लीग खूब चिढ़ गयी और उसने दिया कि उसके सदस्य उस सभामें न जायं। उसने यह भी बता[या कि] मिशनकी घोषणा लीगने स्वीकार नहीं की है और २७ जुलाईका बम्बईवाला प्रस्ताव ज्योंका त्यों कायम रहता है।

इसके बावजूद लीग अंतरिम सरकारमें तो बादमें आ गयी थी उसमें रहना भी चाहती थी। फिर भी कैबिनेट मिशनकी वह घोषणा उसे स्वीकार नहीं करना था जिसके अनुसार वह अंतरिम सरकारमें सकती और रह सकती थी। जल्दी देशमें उसकी ओरसे सीधी कारवा[ई] दंगे वगैरा भी हो रहे थे। और उनमें सरकारी नौकर भी साम्प्रदा[यिक] [illegible] अख्तियार करके काम करते थे तथा उनके मंत्री उन्हें खुला प्रोत्सा[हन] देते थे। या कहिये कि लीगने सरकारमें रहकर मानो उसके विरुद्ध बगावत ऐलान कर दिया था। जिससे अंग्रेज सरकार कुछ करती हो नहीं या कु[छ] कर नहीं सकती या करना नहीं चाहती — ऐसा ख्याल लोगोंमें पैदा हो[ने] लगा। १९४२–४५ की अवधिमें गांधीजी और कांग्रेसके कामोंमें रुकावट डालनेवाली [illegible] यह भी पूछा गया कि अब ब्रिटिश सरकारकी नीतिके विरु[द्ध] खुला विद्रोह घोषित करनेवाली लीगको कुछ कहा क्यों नहीं जाता?

इसके विरुद्ध लीगने अपने बचावमें कांग्रेसके विरुद्ध इल्जाम लगाकर कहा कि वह भी तो मिशनका घोषणापत्र पूरी तरह नहीं मानती है। इसके जवाबमें कांग्रेसने स्पष्टता की कि कांग्रेस उसे पूरी तरह मानती है। और उलटकर उसने यह सवाल पूछा कि लीगके साथ मिलकर ब्रिटिश अधिकारी अभी तक भारतीय स्वराज्यके मामलेमें भेदनीति चला रहे हैं या नहीं?

सारी बातोंका सार यह निकलता था कि लीग ब्रिटिश सत्ताके साथ मिलकर पाकिस्तानकी मांग तो पक्की नहीं कर रही है? ऐसी हालतमें कांग्रेसने कहा कि या तो लीग सरकारमें रहकर शान्तिपूर्वक काम करे नहीं तो उसमेंसे हट जाय। यदि ऐसा न होगा तो कांग्रेस सरकारको छोड़कर देशमें फिरसे अपने रास्ते पर चलनेको निकल पड़ेगी।

इस गतिरोधको सुलझानेके लिए ब्रिटिश सरकारने प्रमुख दलोंके चुने हुए नेताओंको लन्दन बुलाया। वे गये परन्तु कोई हल नहीं निकला। वे जैसे गये थे वैसे ही वापस लौट आये।

ता० ९-१२-४६ को संविधान-सभाकी पहली बैठक हुअी। लीगके सदस्य अुसमें अुपस्थित न हुअे। सभाने डा० राजेन्द्रप्रसादको सर्वसम्मतिसे अपना अध्यक्ष चुना। पंडित जवाहरलालने संविधानके ध्येयसे संबंध रखनेवाला मुख्य प्रस्ताव रखा। यह काम अधूरा रखकर ता० २०-१-४७ को फिर मिलनेका निश्चय करके सभा स्थगित कर दी गअी। अिसमें विचार यह था कि अिस बीच लीगके सदस्य सभामें आनेको राजी हो जायं तो अच्छा।

लीगने जो आपत्ति अुठाअी थी वह कुछ प्रान्तोंकी समूह रचना सम्बन्धी थी। अिसमें पेंच यह था कि अिस ढंगसे लीग अपने पाकिस्तानके ध्येयको प्राप्त कर सकती थी। कांग्रेसने कहा कि प्रान्त किसी भी भागको किसी प्रकारका संविधान जबरदस्ती स्वीकार नहीं करना पड़ेगा यह सारी योजनाका मूल आधार है। समूह रचनाके बारेमें भी यही सिद्धान्त लागू होगा। कोअी प्रान्त या अुसका महत्त्वका भाग समूहमें जाय ही अिस प्रकारकी चीज अुस पर लादना ब्रिटिश सरकारकी घोषणासे बाहर है।

ब्रिटिश सरकारने अिस झगड़ेमें लीगका पक्ष लेकर कहा कि कैबिनेट मिशनकी घोषणाका अर्थ लीग जो समझती है वही होता है। अिससे लीगको बल मिला।

अिस परिस्थितिमें देशका काम न रुके अिस दृष्टिसे कांग्रेसने यहां तक कह दिया कि हम अैसा समझकर भी आगे बढ़नेको तैयार हैं परन्तु अितनी बात स्पष्ट है कि किसी भी भागको कोअी जबरदस्ती न सहना पड़े और अुसे मजबूरन संविधान स्वीकार न करना पड़े — कैबिनेट मिशनके अिस स्वीकृत सिद्धान्तको ध्यानमें रखकर हम चलेंगे।

स्वाभाविक रूपमें लीगको अिससे संतोष नहीं हुआ। वह तो यही चाहती थी कि अुसके अपने सोचे हुअे ढंगसे काम हो। और अुससे अुसने ब्रिटिश सत्ताके तीसरे दलका बल काममें लेनेका रास्ता अपना रखा था। लार्ड वेवलको अिसमें कोअी आपत्ति नहीं मालूम होती थी।

संविधान-सभाकी बैठक ता० २०-१-४७ को फिर हुअी। अुसमें ध्येयका प्रस्ताव सभाने पास किया। कुछ महत्त्वकी बातोंके लिअे समितियां नियुक्त कीं। अुनमें कुछ स्थान लीगके लिअे खाली रख गये।

लीगकी कार्यकारिणी समितिकी बैठक ता० २९-१-४७ को हुअी। अुसने अब यह प्रस्ताव पास किया कि कैबिनेट मिशनकी घोषणा व्यर्थ सिद्ध हुअी है अिसलिअे अुसे रद्द किया जाय और संविधान-सभाको बिखेर दिया

जाय। और यह स्पष्टता की कि सीधी कारवाओ का अुसका प्रस्ताव कायम है।

अिस प्रकार गतिरोध पैदा हो कर रहा। अब क्या किया जाय यह बडा सवाल बन गया। अन्तरिम सरकारके कांग्रेसी और गैर-मुस्लिम अल्पमतवाले सदस्योंने वाअिसरायको लिखित सन्देश भेजा कि अब लीगके सदस्योंसे त्यागपत्र मांगना चाहिये क्योंकि लीगने गतिरोध पैदा कर दिया है। अिसने कैबिनेट मिशनकी घोषणा और संविधान-सभा दोनोंको निकम्मा ही नहीं माना है, बल्कि वह खुले तौर पर विद्रोहकी भाषा रही है। ता० १३–२–४७ को लीगके बयानके बाद विरोध पत्र लिखकर जवाहरलालने अिस मामलेको तुरन्त हल निकालनेकी जरूरत पर जोर दिया।

अिस स्थितिमें ब्रिटिश कैबिनेटको बीचमें पडना पडा और ता० २०–२–४७ को प्रधानमंत्रीने ब्रिटिश पार्लियामेण्टमें फिर अेक बडी महत्त्वपूर्ण घोषणा की। अुसमें कहा गया कि जून १९४८ से पहले ब्रिटिश सरकार अपनी भारतीय हुकूमत शान्तिसे योग्य हाथोंमें सौंपकर भारत छोड देगी अर्थात् सबको स्वीकार्य संविधान बननेके बाद अुसके अनुसार जो सत्तायें स्थापित होंगी अुन्हें वह सारी हुकूमत सौंपेगी। परन्तु यदि सन् १९४८ तक असा न हो सका तो भी सत्ता तो निश्चित तारीखसे पहले सौंप ही दी जायगी। देखना यही होगा कि वह किसे सौंपी जाय।*

अिस घोषणासे गांधीजीकी 'भारत छोडो' की मांगकी संपूर्ण सार्थकता और सफलता साबित हुआ। तब तक कांग्रेस दल बीचमें रहे और सब सलाना

* अिस सम्बन्धमें अुपरोक्त घोषणापत्र (पैरा १०) के शब्द अिस प्रकार थे :

परन्तु यदि यह दिखाओ दे कि अुपरोक्त पैरा ७ में बताये गये समय (अर्थात् जून १९४८) से पहले असा संविधान पूरी तरह प्रतिनिधित्व रखनेवाली संविधान-सभा न बना सके तो ब्रिटिश सरकारको यह विचार करना पडेगा कि निश्चित तारीख पर भारतकी केन्द्रीय सरकारकी सत्तायें किसे सौंपी जायं — ब्रिटिश भारतके लिअ किसी प्रकारकी केन्द्रीय सरकारको अेक रूपमें सौंपी जायं अथवा कुछ भागोंमें मौजूदा प्रान्तीय सरकारोंको सौंपी जायं अथवा बादमें अन्य किसी असे ढंगसे यह काम किया जाय जो सबसे अधिक समझदारीका लगे और जिसमें भारतीय जनताका अुत्तम हित हो।

रहे तब तक भारतकी सीमा समस्या हल हो न सकती थी। यद्यपि अुसने जोर पर ध्यानमें न रख दोष पर अपना मत बिना पहलेका बाद ही नीग रहे रहा था। और यह ब्रिटिश अनुभव रहे तथा अपना भारतीय नौकरशाहीका समर्थन था। अनमें यह सब पहुँचना था ब्रिटिश सरकारके पास दो ही माग रह जाते थे (१) भारतको आजादी देकर सम्बन्ध रखनेवाली मिशन-योजनाके अनुसार किया बगैर सब कुछ मन्त्रियों भेंट करके प्रजाका स्वीकार शासन किया जाय या (२) अुसे बलसे दृढ़तासे आगे बढ़ाया जाय। अुसने दूसरा रास्ता अपनाया और जिससे लिअे सारी दुनियाने अुसे सराहा था।

दूसरा काम अुसने यह किया कि लार्ड वेवलको वापस बुला लिया और लार्ड माअुण्टबेटनको अपना ४ था और अंतिम वाअिसराय बनाकर भारत भेजा। अिन दोनों कार्रवाअियोंका वांछित प्रभाव पड़ा भारतीय जनता —लीग भी— समझ गअी कि आखिरी फैसला अब नजदीक है अब ढील या जिद बहुत दिनों तक नहीं चल सकेगी।

१६

आजादीकी नाव किनारे लगी !

१

भारतकी स्वातन्त्र्य-यात्रा पूरी होनेकी अंतिम घड़ी अब आ पहुंची। यह बात अेक प्रकारसे अुल्लेखनीय मानी जायगी कि अुस समय अेकके बाद अेक जो दो वाअिसराय आये वे दोनों योद्धा थे और विश्वयुद्धके प्रमुख सेनानी थे। मानो भारतका सवाल भी युद्धका अेक भाग हो अिसी ढंगसे सारा काम हो रहा था। दोनोंको युद्धके मोर्चेसे ही अुठाकर भारतकी आजादीके मोर्चे पर लगा दिया था। वेवलको चर्चिलने पसन्द किया था। अुन्होंने पूरी तरह चर्चिलकी नीतिके अनुसार काम किया। अुस नीतिकी छायामें मुस्लिम लीगका जोर खूब बढ़ गया। चर्चिल-सरकारको अिसमें आपत्ति नहीं थी कदाचित यह स्थिति अुसे वांछनीय लगती हो। यह सब अुसने किया अिस सुन्दर बहानेसे कि ब्रिटिश प्रजाने भारतके अल्पसंख्यकोंकी रक्षा करनेकी जिम्मेदारी ली है अिसलिअे अिस बारेमें अितमीनान करनेके बाद ही वह

भारतकी सत्ता भारतीयोंके हाथमें सौंप सकता है। जिसका अब अन्तमें यह हो गया कि लीग जैसे नचाये वैसे नाचना पड़ेगा। वक्र रूपमें ऐसा ही हुआ। धीरे धीरे बात यहां तक पहुंची कि संविधान-सभाका काम हो न चल सके सिवा इसके कि लीगको पूर्व और पश्चिम भारतके प्रान्तोंकी समूह रचनासे सम्बन्धित प्रान्तिक संविधान-सभाओंमें अलग स्थान सौंप दी जाय। ये दो समूह थे यानी पूर्वमें बंगाल और आसाम प्रान्त तथा पश्चिममें पंजाब सिंध और सीमाप्रान्त। इन जिलोंमें मुसलमान [illegible] बहुमतमें काम न सकें तो फिर हिन्दू अथवा अल्पसंख्यक कौमें दब जायं। लीग ऐसा ही करना चाहती थी। कांग्रेस इसके विरुद्ध यह मुद्दा उठाया कि किसी भी समूह अथवा प्रान्तको (चाहे वह पूरा प्रान्त हो या उसका भाग हो) जबरन् भारतके संघ-संविधानमें नहीं रखा जा सकता।

जिस मुद्दे पर गतिरोध पैदा करके लीगने संविधान-सभामें न जानेका निश्चय किया और आगे बढ़कर यह कहा कि संविधान-सभा व्यर्थ है इसे तोड़ दिया जाय।

इसी बीचमें लीगने भी जनतामें कांग्रेसके [illegible] उपयोग किया था। उसने कहा कि सम्पूर्ण संविधान-सभा ही हिन्दू बहुमतवाली होनेके कारण हिन्दू राज्य ही स्थापित करेगी जिसमें हमें जबरदस्ती शरीक होना पड़ेगा। फलस्वरूप उसमें हम उपस्थित ही नहीं रहेंगे।

लेकिन जब कांग्रेसने यह मुद्दा प्रान्तिक संविधान-सभाओंकी कार्य-पद्धतिके बारेमें उठाया तब उसके विरुद्ध लीगने यह आरोप किया कि खुद कांग्रेस भी कैबिनेट मिशनकी धारणाको नहीं मानती।

जिसका हल निकालनेके वास्ते और आगेका निर्णय कांग्रेसने कहा कि कैबिनेट मिशनकी कार्य-पद्धति हमें स्वीकार है परन्तु किसी पर बहुमतका जबरदस्ती लादा नहीं जा सकता जिस जनतन्त्रके सिद्धान्तको ध्यान रखकर काम किया जायगा।

और इसके अनुसार पंजाब और आसाममें अल्पमतोंकी रक्षाके लिए तीसरा ही नीतिका आश्रय लिया गया। कांग्रेसने बताया कि प्रान्तिक संविधान-सभाएं भारत संघमें पूरी स्वतन्त्रता न [illegible] ना उस अंशमें अनुस्थित लगे रहेंगे।

अिस सिलसिलेमें सब बातोंपर चर्चा चली। अुसमें ऐसा भी मानना पड़ा कि पंजाब तथा बंगालके मामले सारे नहीं निपट सकते। अिन दो प्रान्तोंमें से जो भाग पूरब अथवा पश्चिम समूहोंमें न जाना चाहें अुन्हें अलग करनेका हक दे दिया जाय। अर्थात् अिन दो प्रान्तोंका बंटवारा करना होगा। यह विचार अुन प्रान्तोंने भी अपने सम्बन्धित मण्डलों द्वारा मान्य किया।

अिस बीच माअुण्टबेटनने ऐलान किया कि सत्ता किस तरह सौंपी जाय। ब्रिटिश कैबिनेटकी २० फरवरीकी घोषणा ऐसी थी कि छोटे छोटे अनेक राज्य खड़े करके भी अंग्रेज सत्ता सौंपी जा सकती थी। वे सार्वभौम बनते तो भारतके टुकड़े-टुकड़े हो जाते। सबके सब देशी राज्य तो सार्वभौम बन ही रहे थे। अिस पर यदि ब्रिटिश भारतके प्रान्तोंमें भी अनेक सार्वभौम सत्तायें खड़ी हो जातीं तो भारतकी अखण्ड शान्ति और संगठनका सम्पूर्ण राजनीतिक नाश हो जाता। अिन कठिनाअियोंसे बचने हेतु सत्तात्यागकी योजना ब्रिटिश सरकारको बनानी थी। अिसमें से अनेकके बजाय दो राज्य — भारत और पाकिस्तान — और अुनकी अलग संविधान सभायें बनाने और अंग्रेज सत्ता सौंपनेका विचार अुत्पन्न हुआ। दो राज्योंको कुछ बातोंके लिअे (खास तौर पर पंजाब बंगाल आसामके लिअे) समान नियंत्रण करने होंगे यह भी स्पष्ट दिखाअी दिया।

अिन सब विचारोंका समावेश करनेवाला कानून ब्रिटिश पार्लियामेण्ट बनाये और अुसका आधार यह रखा जाय कि भारत तथा पाकिस्तानको ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलमें दो नये औपनिवेशिक स्वतन्त्र राज्योंका दर्जा दिया जाता है। अिन नये राज्योंकी संविधान सभायें ठीक समझें वैसा संविधान बना सकेंगी। अिस मामलेमें ये सभायें सम्पूर्ण स्वायत्त होंगी। तब तक राजकाज चलानेके लिअे १९३५ के कानूनको नअी परिस्थितिके अनुरूप बनानेकी दृष्टिसे अुसमें आवश्यक सुधार करके अुसे जारी रखनेकी व्यवस्था पार्लियामेण्ट अपने कानूनमें करे। अिस प्रकार दो राज्य अलग बनानेके लिअे भारतकी शासन सेना और अर्थतन्त्र सम्बन्धी बंटवारा भी करना होगा। अिस बातकी भी अुचित व्यवस्था कानूनमें सोची जानी चाहिये।

अिन सारी बातोंका विचार करके अब योजना शब्दबद्ध की गअी और अुसे माअुण्टबेटनने मुख्य मुख्य भारतीय नेताओंको खानगी तौर पर बताया। अिसमें विभिन्न दलोंकी काफी सम्मति देखी तो अुसे लेकर वाअिसराय

गुरु ता० १८–५–४७ को लन्दन रवाना हो गये और अुसे केबिनेटके सामने रखा। केबिनेटने असे मंजूर किया और यह निश्चय किया कि अुसके अनुसार तुरंत घोषणा की जाय और बादमें पार्लियामेण्ट भरसक जल्दी ही अेक कानून बनाये।

माअुण्टबेटन ता० ३१–५–४७ को दिल्ली लौटे। ता० २–६–४७ को अुन्होंने नअी योजनाके सिलसिलेमें पूछनेके लिअे कांग्रेस, लीग और सिक्ख जातिके मुख्य नेताओंका निश्चित सम्मेलन बुलाया और अुन्हें योजनाकी नकलें देकर कहा कि अिस बारेमें आप अपनी राय मुझे दीजिये, ताकि मैं केबिनेटको दूसरे दिन अुसके बारेमें तार दे सकूं। तीनों दलोंके कुछ मिलाकर अनुकूल मत होनेसे ३ जूनको केबिनेटने भारत-संबंधी अपनी अन्तिम घोषणा की, जिसमें देशके टुकड़े करके अुनकी दो अलग संविधान-सभाओंको हुकूमत सौंपनेका अन्तिम फैसला किया गया। अिस सम्बन्धमें सारे प्रान्तोंसे भी पूछा गया और मुस्लिम लीगने भी अपनी स्वीकृति बताअी। अिस प्रकार अन्तमें भारतीय नेता अेक निर्णय पर पहुंचे। जिसका श्रेय व्यक्तिगत रूपमें लार्ड माअुण्टबेटनको और समूहके रूपमें भारत तथा ब्रिटेनके नेताओंको मिला।

अन्तमें ता० ४–७–४७ को भारतीय स्वतंत्रताका कानून अपराह्न रूपमें तैयार होकर पार्लियामेण्टमें पेश हुआ। १५ जुलाअीको आम-सभाने अुसे पास किया, दूसरे दिन अुमराव-सभाने अुसे पास किया और १८ जुलाअीको अुस पर राजाके स्वाक्षरित हस्ताक्षर हुअे। अुसमें सत्तात्यागकी तारीख १५–८–'४७ निश्चित की गअी थी। तदनुसार अुस तारीखको भारत और पाकिस्तानकी अलग अलग संविधान-सभाओंको माअुण्टबेटनने वह ब्रिटिश हुकूमत जो पार्लियामेण्टने १८५७ के कानून द्वारा ग्रहण की थी, ९० बरस बाद भारतको वापस सौंप दी। अिस प्रकार भारतका ब्रिटिश साम्राज्य खतम हुआ और अुसके शासनके राज्यके दो नये स्वतंत्र अुपनिवेशोंका जन्म हुआ। भारतने अुन्हें पहले गवर्नर जनरलके रूपमें माअुण्टबेटनको पसन्द किया और अुन्होंने यह पद स्वीकार किया। पाकिस्तानने अुस पदके लिअे जिन्ना साहबको चुना। अनको अुस पद पर नियुक्ति हुअी। लोगोंके हृदयोंमें जनतामें आनन्द था, परन्तु यह सही है कि वह विशुद्ध आनन्द नहीं था। साधारण रूपमें जो कहा जाता था कि स्वराज्य आ गया लेकिन जिसे मैं पूर्ण स्वराज्य समझता हूं वह अभी आना बाकी है।

कांग्रेसके नेतृत्वमें १९२० से भारतीय जनताने अंग्रेजी हुकूमतको गद्दीसे हटानेका जो बीडा अुठाया था अुसे अुसने अपने अहिंसक नायक नेताके नेतृत्वमें १५ अगस्त १९४७को पूरा किया। और अुसे राष्ट्रपिताका प्यारा नाम दिया। ब्रिटिश जनताके साथ समझौता किया यह बड़ी गौरवकारी बात थी। अिस अैतिहासिक घटनाको जगत हमेशा याद रखेगा।

१७
भूतकालके गर्भसे

विज्ञानशास्त्री कहते हैं कि पृथ्वीके भीतर आग है, ठण्डक और जीवन तो अुसकी सतह पर ही है। क्या प्रजाओंके अितिहासके बारेमें भी यही बात सच होगी? सामूहिक वैरभाव और विरोधकी आग अुनके भूतकाल-रूपी अन्तरमें दबी रहती है और जो कुछ अच्छाअी, मिठास और मानवतापूर्ण संस्कृति होती है वह क्या अुसकी वर्तमान सतह बन जाती है? क्योंकि कभी-कभी ज्वालामुखीकी भांति अिस सतहको चीरकर भूतकालमें छिपी आग फूट निकलती है। भारत स्वतंत्र हो रहा था अैसे समय अुसकी संस्कृतिके अूपरी पतले स्तरको फाड़कर साम्प्रदायिक वैरकी आग सारे देशमें फूट गअी।

३ जून १९४७ की ब्रिटिश घोषणासे अुसके पहले जो कटुता और कौमी जहर फूट रहे थे वे मिट गये थे। लोगोंको अब शान्ति हो गअी थी कि पाकिस्तान मिलेगा और अुसका संविधान अुसीके प्रतिनिधि जैसा चाहें वैसा निश्चिन्ततासे तैयार कर सकेंगे। अिसलिअे १४ जुलाअीको जब फिर संविधान-सभाकी बैठक हुअी तो अुसमें लीगके सदस्य अुपस्थित रहे थे। अब मूल संविधान-सभामें से पाकिस्तानी भाग अलग अस्तित्वमें आनेवाला था।

भारतके मानस पर भी अैसा ही अच्छा असर हुआ था। भारतके देशी राजाओं पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा था। अब अपनी सेना और सत्ता द्वारा अुनकी रक्षा करनेवाले अंग्रेज नहीं रहेंगे, अुनके स्थान पर जनताके नेताओंकी बनी लोकतांत्रिक सरकार आयेगी, अतः भारतमें अुसकी सरकारके साथ मिलकर रहना ठीक है यह समझ अुनमें अच्छी तरह पैदा हो सकनेकी भूमिका तैयार हो गअी थी। भारतके कुशल संगठनकर्ता और चतुर शासकके

रूपमें प्रसिद्ध सरदार वल्लभभाओने अपने सचिव श्री वी० पी० मेननकी सहायतासे हैदराबाद, काश्मीर और काठियावाड़के दो तीन मुस्लिम राज्योंके सिवा सब देशी राज्योंके साथ अुचित समझौते करके अुन्हें भारतके अेकतासूत्रमें पिरो लिया। माअुण्टबेटन, गांधीजी और कायदे आजमके सम्मिलित हस्ताक्षरसे प्रजाके नाम शान्ति-संदेश प्रकाशित करा सके थे। ३ जूनकी घोषणाके अिस शुभ असरमें काम हो रहा था। अितनेमें पंजाबका विभाजन किस प्रकार किया जाय अिसका रैडक्लिफ निर्णय प्रकाशित हुआ। पंजाबके मुस्लिम लोगोंने तुरन्त अिसके खिलाफ आवाज अुठाओ और अपने प्रान्तके मुस्लिमेतर लोगों पर हाथ अुठाया। अधिकतर मुस्लिम पंजाबमें रहनेवाले सिक्खों और हिन्दुओं पर अमानुषिक, बर्बर और नीचतापूर्ण हमले शुरू हुअे। परिणाम-स्वरूप अुन लोगोंने पंजाब छोड़कर भारतकी सीमाकी ओर भागना शुरू किया। भागनेवालोंको भी नहीं छोड़ा गया। अुनमें स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों पर भी दया नहीं की गओ, बल्कि वे बेचारे अुनके हमलेके पहले शिकार होते थे।

अिन समाचारोंने भारतीय मानसमें भरी हुआी कौमी आगको भड़काया और बरसोंकी अग्नि बदलेमें अब भारतीय मुसलमानोंको अपनी ज्वालामें लपेटा। दिल्ली तक और अुसके पार अुत्तर प्रदेश तक तथा देशके कुछ दूसरे शहरों तक यह आग पहुँची। पूर्वमें भी अुसका असर हुआ। जिससे भारतके मुसलमानोंकी भगदड़ पाकिस्तानकी तरफ शुरू हुआी। अिस सारे प्रदेश पर दारुण दुःख और नीच अमानुषिकता मानो साक्षात् ताण्डव कर रही हो, अैसा वह भयंकर दृश्य था।

अिससे अेक बार तो अैसा लगने लगा था कि पूर्व पंजाबकी और दिल्लीमें बैठी हुआी भारतकी नयी सरकारका सिंहासन भी डोलने लगेगा। यों कहिये कि नयी सरकार और भारतीय सज्जनोंकी शक्तिकी यह अग्नि-परीक्षा हो रही थी। गांधीजी अिसमें बराबर जूझ रहे थे और भारतके सज्जनोंका आह्वान करके अुन्हें अिस कठिन परिस्थितिका सामना करनेकी प्रेरणा दे रहे थे। नेहरू और सरदारकी मंत्रणावाली सरकार अपनी भावना द्वारा सम्हाल कर रही थी। अन्तमें भारतकी नयी सरकार अिस आगमें से सही सलामत बाहर निकली।

परन्तु भूतकालके गर्भमें पूर्वसे प्रज्वलित की जाती रही साम्प्रदायिक आग भारतके नव जीवनकी अूपरी सतह पर आ गओ। नया राज्य सब हिन्दू

राज्य होना चाहिये असा आग्रह शुरू किया। धर्मान्ध हिन्दू महासभाअियोंमें असी भावना थी कि गांधीजी अिसमें पक्षपाती रहे और बाधक बनते गये। अिस भावनाके वश होकर अुनमेंसे अेकने ३० जनवरी १९४८ के दिन दिल्लीकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीकी हत्या कर डाली। अन्ततोगत्वा भारतमें आमूल युग परिवर्तन करनेवाले महापुरुषका अंत अुनके योग्य ही हुआ। अिस बलिदानने भारतकी नअी स्थितिको निश्चित कर दिया। तय हुआ कि भारतकी भूमि पर सब जातियाँ, सब धर्म, सब सम्प्रदाय मिल-जुलकर अेक मानव-कुटुम्बकी भाँति साथ-साथ रहेंगे। धर्म व्यक्तिगत वस्तु है, राज्य अुसके आधार पर खड़ा नहीं हो सकता — मगर पाकिस्तान अिस्लामी राज्य बन गया।

भारतके अितिहासमें हिन्दू-मुसलमानोंका अैक्य करनेके प्रयत्न लगातार होते रहे थे। अनेक आपसी सम्बन्ध औरंगजेबके बाद बिगड़ते बिगड़ते अिस कदर बिगड़े कि मुसलमानोंके विरुद्ध हिन्दुओं और सिक्खोंकी भावनाअें अितनी तीव्र बन गअीं। अंग्रेजोंने अिस साम्प्रदायिक भेदका अुपयोग करके अपना राज्य कायम रखा। अिस भेदनीति पर गांधीजीने कायम तौरसे विजय प्राप्त की। अुनके नेतृत्वमें सब कौमें भारतीय प्रजाके स्वराज्य और स्वातन्त्र्यके अेक मंचके नीचे अेक होती गअीं। कायदे आजमकी लीग अिसमें अपवाद रही। गांधीजीकी अहिंसा अैसी भी निराली सबकी थी। आवश्यकतः अल्पसंख्यक जातियोंके सम्बन्धमें यही ढंग अपनाना चाहा था, परन्तु अुसमें गांधीजीको जीत हुआ। वहीं गांधीजी अुनके सामने हार गये। कारण यह है कि गहराअीमें अुतर कर देखें तो हिन्दू मानसमें हरिजन अेक जातिके रूपमें अलग नहीं थे, परन्तु मुसलमानोंके लिअे अैसा नहीं कहा जा सकता। यह मनका गहरा भेद था, अिसलिअे गांधीजीकी अहिंसा हिन्दू मानसके हार्दिक समर्थनके अभावमें जितना चाहिये अुतना सफल नहीं बन सकी, अैसा अितिहासको कहना चाहिये।

अिसमेंसे लीगकी मांग देशका विभाजन करनेकी ही थी और भारतीय नेताओंको मजबूर होकर अुसे अपनाना पड़ा। अुन्होंने ज्ञानपूर्वक और साहसके साथ यह मांग अपनायी। गांधीजीने अुसका समर्थन किया। अिस प्रकार भारत दो भागोंमें आजाद हुआ।

विभाजनके दंगे शांत हुअे और निराश्रितोंको फिरसे बसानेका भगीरथ कार्य सामने आया। फिर भी अुससे कुछ शांति मिलने पर संविधान

सभाका काम शुरू हुआ और १९४९ के अन्त तक पूरा हुआ। अुसके अनुसार २६ जनवरी १९५० के दिन भारतमें सार्वभौम प्रजासत्ताक राज्य स्थापित हुआ। अुसकी आदि-शपथ यह है :

हम भारतके लोगोंने प्रतिज्ञापूर्वक संकल्प किया है कि भारतको सर्वसत्ताधारी लोकतांत्रिक गणराज्य बनाया जाय और अुसके सब नागरिकोंको —

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय मिले;
विचार, वाणी, मान्यता, धर्म और अुपासनाकी स्वतंत्रता मिले;
दर्जे और अवसरकी समानता मिले;
तथा प्रत्येक व्यक्तिका गौरव और राष्ट्रकी अेकता सुरक्षित रहे

अैसे प्रकारका बंधुता प्राप्त हो।

अिसके लिअे हम अपनी संविधान-सभामें अैसी धारणा करके यह विधान स्वीकार करते हैं, जिससे कानून बनाते हैं और अपने आपको वह अर्पण करते हैं।

अिस प्रकार जन्म लेनेवाला भारत मानवता और वसुधैव-कुटुम्बकी सेवामें अजर अमर रहे।

अुपसंहार

१

देशका विभाजन होता है

अितिहासकी दृष्टिसे तो भारतके मध्यकालका आरम्भ हुआ और अनेक हिन्दू राज्य बने। अुन सबको युद्धमें अलग करके अकबरने मुगल राज्य स्थापित किया और अुसमें रक्षा की नीति और सब मजहबोंकी भावना ग्रहण करके अुसने सारी कौमोंके प्रति अेकताकी अुदार राष्ट्रीय राजनीति अपनाओ। परन्तु औरंगजेबने अुस नीतिमें रद्द कर दिया। फिर भी शक्ति बढ़ने अपने अकबरके राज्यका अपना बड़ा राज्य जमाया। परन्तु बहुत स्थिर राज्य नहीं टिका। जिससे मुगल सत्ता नष्ट हो गई। तरह तरहके हैदराबादका निजामवंश अलग बना, मराठोंने अलग राज्य स्थापित किया, राजपूत जाट और सिक्ख राज्य पनपे, बंगालका

नवाब अलग हो गया। मतलब यह कि केन्द्रीय सरकारका बल नष्ट हो जानेके साथ ही अेक राज्य अनेक टुकड़े हो गये।

फिरसे केन्द्रीय शक्ति अुत्पन्न होती तो ये सब राज्य फिर अेक हो जाते। परन्तु यह शक्ति मुगलोंमें नहीं थी। मराठे अपना राज्य स्थापित कर सकते थे, परन्तु शिवाजीके आदर्शके अनुसार नीति और व्यापक दृष्टि अुन्होंने नहीं दिखाओ। अुनके राज्यमें विभाजन हो गया — गायकवाड़, होल्कर, सिंधिया, भोंसले। और दूसरोंकी बात तो छोड़ दें, ये सब भी पेशवाकी अेकछत्र नीतिमें नहीं रह सके।

अिन परिस्थितियोंमें अंग्रेज व्यापारियोंने पश्चिमसे धीरे धीरे अपना शासन स्थापना की। अुन्होंने राजाओंको अपने अधीन किया अथवा अपने पक्षमें कर लिया। तबसे अेक सत्ताका जन्म हुआ जो देशी राज्यों पर अपनी सर्वोपरि सत्ताके नामसे पुकारी गयी। जैसा कुछ समाचारपत्र लोग भ्रममें डालनेके लिअे कहते हैं, अैसी अेकता कभी ब्रिटिश ताजकी सामियन नहीं थी।

अिस प्रकार १८५७ तक राजाओंके विदेशी सत्ताके अधीन हो जानेके बाद धीरे धीरे भारतीय जनता अपने विदेशी शासकोंके विरुद्ध जाग्रत हुअी। वह परराज्य नहीं चाहती थी। अिसलिअे अुसे वशमें रखनेके लिअे पुलिस और सेनाके साथ अुसमें जो बड़ा साम्प्रदायिक पिछड़ा हुआ वर्ग — अल्पसंख्यक मुसलमानोंका — था अुसे खुश रखनेका भेदचक्र शुरू हुआ। अलग मत, अलग बैठकें, अलग कौमी नौकरियाँ वगैरा शुरू करते करते अन्तमें यह सारी गाड़ी पाकिस्तान तक पहुँचा दी गयी। हमारा कहना यह नहीं है कि अिसमें फलाँ वाअिसरायकी बदनीयती अथवा करामात है। बात यह है कि पाकिस्तान अेक सौ साल पुरानी अंग्रेज राजनीतिका अंतिम नतीजा है। अिसीलिअे विभाजनकी नीति (सचमुच मान लीजिये कि) माअुण्टबेटनको पसन्द न था तो भी अुन्हें माननी पड़ी, कांग्रेसको पसन्द न थी तो भी कांग्रेसको अुसके वश होना पड़ा। अितिहासमें अैसा संयोग-वश होता है। अिसलिअे भविष्यमें अितिहासका अैसा प्रमाण मिले कि लीगकी अिस पाकिस्तानी जिदके पीछे अंग्रेज अनुसार राजनीतिज्ञोंका गुप्त सूत्र-संचालन था तो आश्चर्यकी बात नहीं समझना चाहिये। और देशी राजाओंके सम्बन्धमें क्या खेल होगा यह तो अितिहासमें सामने आये तब सही।

जिस प्रकार भारतको अपने शिकंजेमें जकड़ कर रखनेके लिअे अंग्रेज शासक अब तक दो कमजोरियोंको कायम रख कर चले :

१ देशी राजाओंको पिछड़े हुअे प्रदेशोंके रूपमें रखकर रखा।

२ मुसलमानोंको अल्पमतिका शिकार बनाया।

यह भी अुल्लेखनीय है कि देशी राजा और मुस्लिम लीग दोनों सच्चे लोकतंत्रमें विश्वास रखनेवाले नहीं हैं। राजा निरंकुश शासन और स्वेच्छाचारमें विश्वास रखनेवाले हैं। लीग शायद धर्मांधता या कुरानशाही राज्यतंत्रमें विश्वास करती है — वह अेक फासिस्ट संस्था है* यह स्पष्ट है। अथवा यों कहिये कि वह लोकतांत्रिक तो किसी हालतमें नहीं है। कांग्रेस अेकमात्र लोकतांत्रिक दल है। अिस प्रकार सारे भारतमें अेकसे लोकतंत्रका विकास न हुआ। यह भी आजकी स्थितिमें निहित और विभाजनका प्रबल सूक्ष्म कारण माना जाना चाहिये।

आज जब अंग्रेजोंका अेकछत्र राज्य जा रहा है तब ये सब दबी हुआी कमजोरियाँ प्रगट हो रही हैं। जितनी सच्ची बड़ी भारतीय जनताके पास है वह पूरी तरह काम दे रही है। ब्रिटिश अेक राष्ट्र और अेक प्रान्त बना हुआ अेक परिस्थितिमें हुकूमत रूपमें शान्तिसे कायम हो रहा है। यह हुकूमत अपनी राष्ट्रीय सरकारको अब अधिक मजबूत और पूरी सत्ताधारी बना सकेगी। कैबिनेट मिशनकी नीतिकी छायामें बनाओ गओ अन्तरिम विधानपरिषद् सरकारके घटक अनुभवोंके बाद स्वभावतः सबसे अुत्तम नीति निकली है। जिन साम्प्रदायिक झगड़ोंको कूटनीतिज्ञ अंग्रेजोंने भारतमें अिकट्ठा किया है अुससे सारी गड़बड़ी पाकिस्तानके अलग हो जाने पर दूर हो रही है। अब शान्तिसे भारत अपना नया और सच्चा लोकतांत्रिक शासन शुरू करेगा। अब साम्प्रदायिक मताधिकार अिसलिये वर्गोंकी नहीं रहेगा और यह नअी रचना किसी जाति या धर्मके लिअे हानिकारक नहीं परन्तु अच्छी और लाभकारक है यह विश्वास जनताको दिलाया जा सकेगा।

कोअी पूछेगा अैसी आशावाद रखनेके लिअे आपके पास कौनसा कारण है? निराशावादके बजाय आशावाद अधिक कारगर है। और वे दें कि प्राणवान भारतवासियोंको अपने स्वतंत्र अुज्ज्वल भविष्यकी संभावनामें श्रद्धा है और

---

* लीगके जन्ममें लोगोंको कानूनभंग और सीधी कार्रवाओके नामसे शुरू की गओी हिंसा और अैसी धमाचौकड़ी। पाकिस्तानमें यही रूप राजनीतिक स्वार्थ आन्दोलनके लिये आगे चल तो क्या हाल होगा?

भारतीय संस्कृतिका भानका नीति पर अ... भरोसा है। हमें याद रखना चाहिये कि भविष्यके स्वप्न न देखनेवाले अथवा दृष्टिविहीन राष्ट्रका नाश होता है। आत्म निर्णयका दावा स्वीकार करके भारतीय राष्ट्र आगसे अलग होनेवाले अंगको अलग होने दे जिससे हमारा राष्ट्रीय जीवन नष्ट न होने पाये। जैसा गांधीजी कहते हैं भारत यदि साम्प्रदायिक बन जाय तो हिन्दू लोग जिन्ना साहबकी दो राष्ट्रवाली मान्यताओंको सिद्ध कर देंगे। आज जिन्ना साहबके दो राष्ट्रवादके आधार पर हमसे कुछ प्रान्त अलग हो रहे हैं। वे अलग हो रहे हैं अंग्रेजोंकी अब तककी पुरानी साम्प्रदायिक कुनीतिके कारण और गांधीजीके द्वारा बनाओी हुओी शान्तिकी कौमी अवसर ... प्रयत्नके अभावके कारण। अंग्रेजोंकी कुनीतिकी हद पाकिस्तानके रूपमें आ गओी अब वे जा रहे हैं। अिसलिओ दूसरा कारण दूर करनेकी बात रह गओी है और अिसलिओ गांधीजी अिस पर आज भी जोर दे रहे हैं। हिन्दू समझें कि वे हिंदी हैं उनका देश हिन्दुस्तान नहीं हिंद जो पहले था वही है। हिंदकी संस्कृतिकी उदारता और व्यापकताके बल पर उसने अिसे अेक बनाया है। केवल सैनिक बलसे तो औरंगजेब और मराठोंने जो कुछ कमाया था वह सब चला गया। और अिसी तरह अंग्रेजोंका कमाया हुआ भी चला गया। क्योंकि केन्द्रीय सरकार दो प्रकारसे बलवान होनी चाहिये (१) राजनीतिक अर्थमें और (२) सांस्कृतिक अर्थमें। राजनीतिक अर्थात् आर्थिक और सैनिक। सांस्कृतिक अर्थात् धर्म कौम अित्यादिसे परे अेक प्रजाकी भावना वाला लोकतन्त्र। यह निश्चित सत्य हमें भूलना नहीं चाहिये कि असा भविष्य निर्माण करनेकी स्वतन्त्रता अब हमें मिल रही है। यह सबसे बड़ी खुशीकी बात है। अब हम अिस बातका अितमीनान करना है।

जून १९४७

२

'गांधीजीकी जय!'

१५ अगस्तको जो भावभीना और गम्भीर समारोह दिल्लीकी अबसे हमारी सर्वसत्ताधारी राष्ट्रसभा बनी हुओी संविधान-सभाने मनाया उसमें जिन बातोंका अफसोस कुछ लोगोंको रहा कि समारोहमें गांधीजी मौजूद नहीं थे। उस समय गांधीजी कलकत्तेके अेक परित्यक्त मुस्लिम घरमें थे। उस

भागसे मुसलमान परिवार साम्प्रदायिक आतंकके मारे भाग गये थे। गांधीजी अुनमें निर्भयता पैदा करके और अुन्हें धीरज बंधाकर फिरसे आ बसनेकी बात समझानेके लिअे वहां रहते थे।

जिस दिन गांधीजी कलकत्तेके अुस मोहल्लेमें गये, अुसके दूसरे ही दिन अेक सूचक घटना हुआी। कुछ हिन्दू नौजवान अुनके पास जाकर बोले: आप भागे हुअे हिन्दुओंके मोहल्लेमें क्यों नहीं रहते? गांधीजीने जवाबमें कहा कि मुझे यह समझा दो कि अिस समय मेरा क्या करना धर्म है, तो मैं तुरन्त वहां चला जाअूंगा। अखबारोंसे मालूम होता है कि बादमें गांधीजीके निवासस्थान (हैदरी मन्जिल) पर पत्थर फेंके गये, कांचको चूर किया गया। कांचका अेक टुकड़ा अेक अहिंसावादी अंग्रेज विश्वजनको लगा।

गांधीजीके लिअे आजादीके शुभ दिनमें यह कैसी भेंट कही जायगी! घर छोड़कर भागे हुअे हिन्दू कुटुम्बोंको निर्भय बनाकर वापस बसानेके लिअे ये पत्थरबाज हिन्दू नौजवान खुद तो क्या कर सकते थे? जिस लिअे वे ७७ वर्षके अेक बूढ़ेको अुसके लिअे कहने आये! आये तो आये परन्तु अुन पर पत्थरोंकी वर्षा की!!

दो ही दिनमें दूसरी तरहके समाचार मिले: हिन्दू-मुसलमान आपसमें मन्दिर और मस्जिदोंमें मिले और थोड़े ही दिनों पहले साम्प्रदायिक आगसे धधकता हुआ कलकत्ता शान्त हो गया। १५ अगस्तके मंगल दिवसकी यह भेंट कलकत्तेने गांधीजीको दी और अुन नौजवानोंकी बेवकूफीको धो दिया। अिस प्रकार अुस दिनको कलकत्तेने अुज्ज्वल किया और सच्चे अर्थमें मनाया। राजाजीने अिस सारी घटनाको अेक बड़ा जादू बनाकर अुसके रचनेवालेको महान जादूगर बनाया है। सचमुच चमत्कारोंका युग अभी भारतसे चला नहीं गया है।

परन्तु गांधीजीकी सच्ची बड़ी जीत तो दूसरी ही है। ३ जूनसे १५ अगस्त तक देशमें घटनायें अितनी तेजीसे हुआी हैं कि क्या हो रहा है अिस बारेमें शान्तिसे विचार करनेके लिअे शायद ही समय या वातावरण मिला है। सदियोंका समय-चक्र अुनमें अपना मंथन-कार्य करता जाय और सुना हो तब और हो भी क्या सकता है? भारतके हजारों वर्षके अितिहासकी तुलनामें यह अवधि अेक पलके बराबर भी नहीं है। सचमुच पलके छोटेसे भागमें भारत आजाद हो गया। विजयकी सभी घटनाओं अिन

पन्नाआमें जिन महापुरुषोंने भाग अदा किया है व अगर गमम्रण करियाय गामन रखें अिसमें अभी कुछ देर है।

यह मनोहर और भव्य चित्र स्वातंत्र्य गाथाओं हं जिसमें तो किसीका गव नहा है। यह अुनका जय है। परन्तु म अिसे अगाया और दूसरी जयकी बात कर रहा हू। वह यह कि जिस महापुरुषने आरभम जो प्रण किया था अुमीके अनुसार वह पूरा हुआ है। अुन्होंने कहा था कि कांग्रेस सारे देशकी प्रतिनिधि-संस्था है यह अग्रेजोंसे लडकर स्वराज्य लायगी परन्तु वह स्वराज्य सबमरके मत पाकर लिया जायगा। आज जो कुछ मिला है वह सारे देशको मिला है और जिस सरकारने अब अपने हाथमें लिया है अुसमें सबको प्रतिनिधित्व मिला है।

जितना ही नहीं अब प्रकारसे देखें तो क्या पाकिस्तान बननेमें भी अुसी प्रणकी विजय नहीं हुआ? कांग्रेसने लड़ लडकर अपना रग जमाया और जगत-भरको असमें अभी पूर्ति की कि अंग्रेज भारत छोडकर चले गये। अिसका लाभ मुसलमान भी मनचाहा प्राप्त कर सके! वे पाकिस्तानसे ही तुष्ट हो सकते थे वे पाकिस्तान भी ले सके! पाकिस्तान अनके हितमें नहीं था परन्तु यदि वे अपनी जिद न छोडें तो कांग्रेसने पाकिस्तान देना भी स्वीकार किया। अनजाने भी अिससे यही सिद्ध हुआ कि भारतके सब वर्ग आजादीमें हिस्सा पा सके।

और अस प्रणका दूसरा अक भाग यह था कि भारत अग्रेज जातिका शत्रु नहीं है वह भारतके प्रति अग्रेजोंके राजनैतिक भ्रमको मिटानेके लिये स्वराज्य माग रहा है ताकि दोनोंका भला हो। आज यह चीज भी सिद्ध हो चुकी है। स्वतंत्र भारतका पहला गवर्नर जनरल अक भारत मित्र अंग्रेज बनता है। आज भारतीयोंको अग्रेजोंके प्रति द्वेष नहीं रहा।

जिस प्रकार लड़ाओके फलस्वरूप जो आजादी मिली वह सारे भारतको मिली है। अब यह देखना है कि भारत अुसका कैसा अुपयोग करता है।

जय हिंद!

अगस्त १९४७

पूर्ति

१

१८५७ की शताब्दी

१

हमारे देशने वर्तमान युद्धोंमें जितनी जबरदस्त प्रगति करके ऐसा बल उत्पन्न माना है कि वह अपने ऐतिहासिक समाधान अब जब चाहेगा तब कर सकता है, अगर बाद अब वह या लोगोंका निश्चय नहीं।

१७५७ में बंगालका नवाब सिराजुद्दौला अपनी आजादी जाते देखकर घबराकर अंग्रेजोंके विरुद्ध खड़ा हुआ। अनाचारोंका जैसा उसने तरहका मुकाबिलेका बजाय भागना पसन्द किया, हमारा देश जिसमें हार गया। उस समय तो अंग्रेज राजा भी नहीं बने थे, केवल व्यापारी ही थे और वे भी बंगालके नवाबकी हुकूमतमें। फिर भी वे उनका विरोध करनेका उपाय कर सके, यह हमारे भाग्यकी उस समयकी करुण दशाको बताता है। दूसरी ओर अंग्रेजोंका डर था कि हिन्दुस्तानमें ऐसा शायद कदाचित् बंगालका ऐसा अच्छा और विचारहीन कानूनोंको पसन्द न करे तो मुश्किल खड़ी होगी। जिसलिए कलकत्तेका कोई काठगढ़ का प्रबन्ध रखकर लोगोंकी आत्मामें फूट पाड़नेका काम शुरू करके सुलतान किया। इस प्रकार भारतमें अंग्रेजी राज्यका सूत्रपात आरम्भ हुआ।

इसके सौ बरस बाद अंग्रेज व्यापारियोंका यह प्राप्ति-वृक्ष पूरा हुआ। पूरा देश विदेशियोंके हाथोंमें चला गया। यह बात नहीं कि अंग्रेज बड़े बहादुर थे, बस अंग्रेज हमारे लोगोंकी निर्बलता है कि विदेशी शासकोंका राजाधीन रहना न था। परन्तु उनका वह कमजोर पहलू रहा बना हुआ था। जिस बातको सौ बरस पहले बंगालका नवाब हारा था। अन्तमें हमारा अवध शासन जिसमें धर्मावलम्बी शासक बनकर लिये अंग्रेजोंके विरुद्ध विद्रोह भी किया। उनका यह काम सिपाही विद्रोह कहलाता क्योंकि उसमें कम्पनीका राज्य स्थापित हो गया था जो कुछ अपना नौकरी करनेवाले सिपाहियोंके विचार और बदलेमें मजदूर व्यक्ति काम लेना था। तब कुछ स्वातन्त्र्य का नाम भी लिया हो क्या? परन्तु अब दूसरी ओर लोगोंकी दृष्टि

देखें तो वह अंग्रेजोंका स्थान [illegible] प्रयत्न था, जिसका [illegible] नहीं किया जा सकता।

२

१७५७ से १८५७ के १०० वर्षोंके अरसेमें स्थिर हुए अंग्रेजोंने १८५७ से अपने कायदेका नया पृष्ठ आरंभ किया। भारतमें रानीका राज्य स्थापित हुआ। प्रजाको निःशस्त्र बनाकर कानूनका राज्य शुरू किया गया। असमें से ऐसी लोगोंको बन जनता टुकड़ा देनेके लिअे नौकरी, शिक्षा अित्यादिकी व्यवस्थायें हुआ। बादमें विधान-सभायें वगैरा भी स्थापी गयी। अिस समय हमारे अूपरी स्तरके लोग शरीक हुअे। अुन्होंने यह भी देखा कि अिस नये राज्यका स्वरूप कैसा है। अुसमें से राष्ट्रीय स्वाभिमानका और स्वराज्यका विचार पैदा हुआ और अुसके लिअे प्रयत्न शुरू हुअे।

अिन प्रयत्नोंका स्वरूप तीन प्रकारसे वर्णन किया जा सकता है :

१ १८५७ के विद्रोह जैसे — सशस्त्र विग्रह — की योजना करना।

२ सरकारी नौकरियोंका यथासंभव भारतीकरण कराना और विधान-सभाओंमें स्थान प्राप्त करके वैधानिक ढंग पर राज्य चलानेमें भाग लेना।

३ जनताका अेक होकर असहयोग द्वारा निःशस्त्र शासन विरोध करना।

अिनमें से तीसरा ढंग सफल सिद्ध हुआ। पहला असफल रहा और

हमारे देशको भीतरसे कुतरकर खा रही थी। अुसके मारे मुल्कको शोषणका मंत्र गांधीजीने हमें दिया और अुस मंत्रके द्वारा प्रगट होनेवाले हमारे सच्चे सत्त्व सिखाकर काम करनेका कार्यक्रम बनाकर अुन्होंने हमें आगे बढ़ाया। जातपात, धर्म, भाषा वगैरा अनेक कारणोंसे अलग अलग रहे हुअे देशमें — शायद जिसका कारण अंग्रेजी विद्यासे मिले हुअे अेम पाठ थे — छिन्न भिन्न हुअी प्रजाशक्तियोंको गांधीजीके दिये हुअे कार्यक्रमके द्वारा संगठित करके हमने स्वराज्य प्राप्त किया।

अिस समय हम १८५७ के अपने पूर्वजोंके साहसको याद करें, यह सब प्रकारसे अुचित ही है। अिसी प्रकार १७५७ से लगाकर आज तकके अितिहासको देखें तो अेसे दूसरे छोटे मोटे साहस नहीं हुअे हों सो बात नहीं, परन्तु अुन सबका रंग १९४७ के रंगसे भिन्न प्रकारका था। वह रंग जगतका पूर्वरंग था यह नहीं भूलना चाहिये। आज संसारमें शांति और युद्धनिषेधका युग आरंभ हुआ है। भारतने अपने शांत निःशस्त्र विद्रोहकी सफल पद्धतिके द्वारा अिसे निकट लानेमें बड़ा भाग लिया है। १८५७ का शताब्दी अुत्सव मनाते समय हमें यह बड़ी बात नहीं भूलना चाहिये, क्योंकि हमारे देशमें हिंसा, स्वार्थ अित्यादि पामरताकी बुराअियां लोगोंके पुराने मानसमें से फिर अेक बार मुंह निकालकर भावना मालूम हो रही है।

१८५७ के शताब्दी अुत्सवके समय हिंसाके गुणगान होने लगे हैं। पंडित जवाहरलालने १०० वर्षमें हुअे अर्वाचीनताके परिवर्तनके बारेमें हमारा ध्यान आकर्षित किया। परन्तु अुसमें भी बड़ा परिवर्तन तो वह है जो हिंसा-बल या शस्त्रबल-सम्बन्धी हमारी दृष्टिमें हुआ है। अिसकी ओर जाग्रत रहकर लोगोंका ध्यान खींचना चाहिये, नहीं तो १८५७ का अुत्सव अनुचित सिद्ध होगा। अुसके परिणाम तो प्रतिगामी होंगे ही। अगर भारतमें भी क्या आज हिंसावृत्ति जोर नहीं पकड़ रही है? अिस समय १८५७ की भावनायें प्रजामें जाग्रत करनेमें सावधानी रखना चाहिये। अस्तु।

आज जगत अिस सत्यकी ओर मुड़ रहा है कि शांति, सत्याग्रह, शस्त्र-शासन निषेध ही मानव-जगतका सत्य है। अिसे सिद्ध करनेका प्रयोग आज जगह-जगह हो रहा है। भारतमें शायद यह प्रयोग जारी हो रहा है। १८५७ का भी सच्चा पाठ तो यही है न कि शस्त्रबल सच्चा बल नहीं है? सच्चा बल अैक्य और राष्ट्रनिष्ठा है। अैक्य और राष्ट्रनिष्ठाके अभावमें

धर्मप्रवर्तक था हम भी जिस युग समय लगे। १९१५ में बापूका गोकरामें जगत नये ही युगमें प्रयाण करता लगा है। अगला स्थान बापूका भी १८५७ से पचास-अरतीका सार है।

८-१-५७

२

पूरी हुआी पीढी

[१९१५ – १९४८]

[भारतकी आजादीकी लड़ाआीमें गुजरातका कीमती हिस्सा रहा है। और यह हिस्सा १८५७ से शुरू होनेवाले पूरे ९ वर्षके अरसेमें बताया जा सकता है। गुजरातने विज्ञानके जिस ओर जितना चाहिये अुतना ध्यान नहीं दिया है — जैसा कि महाराष्ट्रमें हुआ है। जिस कारण महाराष्ट्रकी तुलनामें गुजरातका १८५७ से १९१५ तकका काजी विकास अनिश्चित माना है या नहीं असा साधारण छाप पड़ती है। यह बात सब नहीं है। अद्योग धर्म अर्थ समाज सुधार शिक्षा राजनीति साहित्य अित्यादि सभी क्षेत्रोंमें भारतके अग्रवान अध्यक्षोंने अिन वर्षोंमें गुजरातमें अनेक पुरुष पैदा हुअे हैं जिन्होंने गुजरातको बनाया है। १९१५ से तो सब जानते अिस लिया है। नीचेके लेखमें १९१५ से १९४८ तक पूरी होनेवाली पीढ़ीकी संक्षिप्त समीक्षा है। असमें पहलेका हमारे प्रश्नकी कथा व्यवस्थित तरीके द्वारा अब लिखी जानी चाहिये और अुस पर विचार किया जाना चाहिये।

अितनी प्रस्तावनाके साथ १९१५ से १९४८ का कथाके मागसनभ लिखानेवाले निम्न लेख यहां अद्धृत किया गया है।

१५-७-५७ — म० देसाअी]

पूरी हो रही वर्तमान पीढ़ीके प्रवाहके धारमें लिखनेके लिअे ता अनेक ग्रंथ चाहिये अितने महत्त्वका वह रही है। अिस छोटे लेखमें असकी थोड़ीसी रूपरेखा ही बताया जा सकती है। जिस पीढ़ीका अर्थ है पिछले पच्चीस तीस वर्षका जमाना अुसे छोटा और सूचक नाम देना हो तो वह देशका और गुजरातका गांधी-युग है। अिस युगमें देशकी भव्य और प्रचंड प्रगति

हुआ है। जिसका समास थोड़ेमें करनेके लिअ मैं मुख्यतः गुजरातको ध्यानमें रख कर चलूंगा।

अिस पोथीके पितामह

१९१७ में गांधीजीने अहमदाबादमें अपनी छावनी डाली, तब गुजरात शायद ही भारतके राजनीतिक नक्शे पर था। व्यापार अुद्योग और कमाअीके क्षेत्रके सिवा सार्वजनिक जीवनके दूसरे क्षेत्रोंके बारेमें भी यही कहा जा सकता है। अिस स्थितिमें से निकलकर आज गुजरातने भारतके नक्शे पर खासा स्थान प्राप्त कर लिया है। स्व० श्री आनन्दशंकर ध्रुव कहा था कि यह नया जमाना गांधीजीका बांधा है। अिसलिअे अुसके प्रवाहोंका समझनेके लिअे १९१७ के बाद गांधीजीने जो आन्दोलन शुरू किये अुन्हें देखना चाहिये, क्योंकि गांधीजी पूरी होनेवाली पोथीके श्री-गणेशकी गंगोत्री थे।

सत्याग्रहाश्रम

१९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे भारतमें आनेके बाद गांधीजीने सबसे पहले अपने कार्यका आरंभ सत्याग्रहाश्रमकी स्थापनासे किया। आश्रमका ध्येय था स्वाधीन भारतके लिअे आवश्यक समग्र जीवनका सर्वांगीण प्रयोग। ऐसा प्रयोग करना हो तो राष्ट्रजीवनके नाना क्षेत्रोंमें सच्चे जीवनका नया नमूना पैदा करके आगे पेश करना जरूरी था। अिसमें जीवनके हर पहलूमें आत्मबल होना चाहिये। युगके अनुसार आवश्यक जीवन क्रान्ति भारतकी रीति प्राचीन कालसे अिस प्रकार आश्रमोंके द्वारा ही सफल होती आयी है। स्वाधीन भारतमें भी गांधीजीने अिसी प्राचीन रीतिको अपनाया। पूर्वाचार्योंकी तरह अुनके लिअे भी यह रीति सहज थी। और वह रीति भारतमें जड़ पकड़ गयी। गुजरातमें अिसमें से अनेक संस्थायें निकलीं।

नअी नअी प्रवृत्तियोंका सर्जन आश्रमके केन्द्रसे होने लगा।

गुजरात राजनीतिक परिषद

गुजरातमें अिससे पहले होमरूल (लीग) संस्थाकी कुछ राजनीतिक हलचल रही थी। वह भी मुख्यतः अहमदाबादमें और वह भी शहरमें ही और वकीलों जैसे कुछ वर्गों द्वारा। अुन कुर्सियों पर बैठ कर किये जानेवाले कामको कुछ लोग करते रहे हैं पर वे कुछ भी नहीं समझते थे। परन्तु प्रश्न यह था कि नया मार्ग कौनसा है और असल अुसका नेता कौन है। अिस दशामें गांधीजीने गोधरामें गुजरात राजनीतिक परिषदका आरंभ किया। अिसमें से आगे चलकर

१९२० के बाद गुजरात प्रान्तीय कायम समितिका गठन हुआ, जो आज तक हमारे प्रान्तका राजनीतिक काम कर रहा है।

अस्पृश्यता निवारण

अिस प्रवृत्तिके साथ ही अस्पृश्यता-निवारणके लिअे अेक संस्था स्थापित हुआ और आश्रमवासी श्री मामा साहब फड़के अुसमें कायम रहे। श्री ठक्करबापा अुसके अध्यक्ष बने।[1] १९२१ के बाद अुसमें गुजरात विद्यापीठके स्नातक श्री परीक्षितलाल मजमूदार शामिल हुअे। और जब १९३२ में हरिजन सेवक-संघकी रचना हुआ तब यह संस्था प्रान्तीय हरिजन सेवक-संघके रूपमें बदल गअी और आज तक यह अपना काम कर रही है।

सत्याग्रहका आरंभ

अिसी कालमें गांधीजीने सत्याग्रहकी लड़ाअियोंकी अपनी विशेष पद्धतिका भी परिचय गुजरातको दिया। वीरमगामकी जकातका प्रश्न, खेड़ाका लगान प्रकरण, अहमदाबादके मजदूरोंका प्रश्न — अिन तीनोंके सिलसिलेमें सत्याग्रहकी लड़ाअियाँ लड़ी गअीं। अुनमें से गुजरातके लिअे नवयुवक सेवक अपने आप निकल आये, यह भी अुल्लेखनीय है।

राष्ट्रीय शिक्षा

सत्याग्रहाश्रमके साथ राष्ट्रीय पाठशाला आरंभ की गअी।[2] १९२० में असहयोग छिड़नेके साथ गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुअी और अुसमें

---

१ आदिवासियोंकी सेवाके प्रारंभका भी यहाँ अुल्लेख करना चाहिये। श्री ठक्करबापाने पंचमहाल जिलेमें भील सेवा मंडल शुरू किया। पीछे बारडोली ताल्लुकेमें १९२४ के बाद रानीपरज जातिकी सेवा शुरू हुअी। दुबला नामक आदिवासियोंके लिअे भी आगे चलकर सेवाकार्य शुरू हुआ। अिसी प्रकार बारैया जातिके लिअे खास तौर पर बोचासणके वल्लभ विद्यालयका भी अुल्लेख करना चाहिये।

२ गांधीजीने राजनीतिक परिषदकी तरह पहली गुजरात शिक्षा परिषद भी भड़ौंचमें की थी और अुसमें राष्ट्रीय शिक्षाके विचार घोषित करना आरंभ किया था। राजनीतिक कामके लिअे जैसे आगे चलकर गुजरात प्रान्तीय समिति बनी, वैसे राष्ट्रीय शिक्षाके लिअे भड़ौंच परिषदमें से आगे चलकर गुजरात विद्यापीठका जन्म हुआ।

जनक शिक्षण-संस्थायें सम्मिलित हुआ। जिस प्रकार विद्यापीठके जन्म होने पर गुजरातको अनेक स्नातक-सेवक प्राप्त होने लगे और वे [illegible] प्रान्त-व्यापी सेवाकार्यके रूपमें लगने लगे।

आश्रम जीवन द्वारा क्रान्ति

आश्रमके द्वारा अनजाने ही एक सामाजिक क्रान्ति होने लगी थी। सादी खुराक, शरीर-श्रमवाला सादा जीवन, सादी पोशाक, स्त्री-सम्मान, स्वच्छता, [illegible] और पाखाना-सफाई, सम्प्रदाय, [illegible], जातपांत या अस्पृश्यताके ऊंचनीचके भेदोंसे रहित एकसा भारतीय जीवन, [illegible] विवाह-पद्धति, सादी और सर्वधर्मसम उपासना इत्यादि अनेक बातोंका प्रथम परिचय आश्रमने गुजरातको दिया। और उसमें थोड़े-बहुत समय तक रहकर जानेवाले सेवक इन सब चीजोंमें रहे नवजीवनके सत्वको जनतामें फैलाते रहे।

नवजीवन संस्था

और इस नवचेतनाको सारी जनतामें फैलाने और समझानेके लिए नवजीवन संस्थाका जन्म हुआ। उसके द्वारा गुजरात और भारतमें एक नये प्रकारकी पत्रकारिता भी आरम्भ हुई। जहां तक मैं मानता हूं, नवजीवन साप्ताहिक शुरू होनेके पहले गुजरातमें साप्ताहिक समाचार-पत्र तो थे परन्तु ऐसा विचार-पत्र शायद एक भी नहीं था।

इस प्रकार त्याग और गुजरातके व्यापक सार्वजनिक जीवनमें नये युगका आरम्भ हुआ। उसमें से आगे चलकर बहुत बड़ा [illegible]। [illegible] कि इस नवयुगका मुख्य जनक [illegible] आरम्भ हुआ।

इस पीढ़ीका सबक

गांधीजीकी प्रवृत्ति शुरू होने पर एक खास बात ध्यान देनेकी है कि १९२० तक गुजरातके जीवनमें थियासॉफी, होमरूल [illegible], आर्यसमाज, सामाजिक सुधार, समाज-सेवा आदिके रूपमें जो अलग-अलग प्रवृत्तियां चल रही थीं, वे सब गांधीजीकी विचार और कार्यपद्धति द्वारा आध्यात्मिक [illegible] आकार ले सकीं। गांधीजी मानवके [illegible] धार्मिक मनोवृत्ति और व्यावहारिकताका [illegible] प्रदान करते थे। [illegible] एक साथ थे। और उसी रूपमें वे सारा काम करते थे। [illegible] गुजरातको नया ढंग बताया। जिन्होंने इन सब कामोंमें [illegible]

सेवकोंने अपनी अपनी शक्तिके अनुसार तथा तालीम ग्रहण करके अपने अपने ढंगसे प्रांतके सार्वजनिक जीवनमें अपना स्थान ले लिया और परिणाम यह हुआ कि जिन सब संस्थाओंके ये बड़े लाभ बन गये। अिसका कारण यह था कि सार्वजनिक सेवा और राजनीतिक साधनाके संगम और एकता अेक नअी दृष्टि प्रस्तुत की। खास करके स्वयम् तथा ... साथ मूल गुजरातके सार्वजनिक सेवकोंके लिअे अेक नया रास्ता सम्भव हो गया। गांधीजीके भारत सेवक-समाजकी तरह व्यावहारिक संगठन तो यहाँ न बना परन्तु अेक दूसरी भाँति काम करनेवाले और नैतिक सेवक-समाज अिसमें अन्य होता गया। बाहरी दृष्टिसे देखें तो अिस सेवकोंका संगठन मुख्यतः (१) सत्याग्रह आश्रम (२) गुजरात विद्यापीठ और नवजीवन तथा (३) गुजरात प्रांतीय समिति—जिन तीन केन्द्रोंके आसपास होता रहा।

सरदार वल्लभभाअी

और अिसके नेता बने सरदार वल्लभभाअी पटेल। वह थे सरदार लेकिन थे। गांधीजीकी राजनीतिमें अन्य होने पर वकीलोंके द्वारा चलनेवाली पुरानी आरामकी राजनीतिका अन्त हुआ। अिस राजनीतिमें वाणी ही सब कुछ था। सरदार वल्लभभाअी अिसमें अधिक सार देख रहे थे। परन्तु गांधीजीकी राजनीतिक पद्धतिमें अुन्होंने वेधड़क काम करनेकी हिम्मत और बहादुरी देखी। अिसलिअे वकालत छोड़कर वे सरदार काममें लग गये।

अिस प्रकार वकील लोग असहयोगी राजनीतिसे १९२० से तो अलग रहे ही लगभग १९२५–३७ तक अलग ही रहे। बादमें फिर यह प्रवाह बदला और आज धीरे धीरे यह सवाल होने लगा है कि फिर यहाँ पुराना दौर तो नहीं हो जायगा? गांधीजीने सार्वजनिक सेवकोंकी धर्मा धोरामा पक्का बना दिया था। अिस परम्परागत गुजरातमें जड़ जमा ली है। स्वराज्य युगमें यह परम्परा आगे कैसा स्वरूप लेगी यह अब देखना है। यहाँ यह अुल्लेखनीय है कि अिस परम्पराको ताजा रखनेके लिअे स्व. महादेव देसाअीके स्मारक ट्रस्टने गुजरात विद्यापीठमें समाज सेवा महाविद्यालय आरम्भ किया है।

गुजरात प्रांतीय कांग्रेस समिति

अूपर हमने देखा कि अिस सारी पीढ़ीके दौरानमें प्रान्तकी मुख्य राजनीतिक संस्था गु० प्रां० समिति रही है। युगपिताकी कार्य प्रणाली

रचनाकार्य द्वारा संगठित की हुई नये ही ढंगकी राजनीति चलानेका था। प्रान्तीय समिति उसके अनुसार अपना काम करती रही है। बारडोलीके लोग उसके जरिये कुछ समयके कष्टनिवारणके कामोंमें लगाकर स्वराज्यकी लड़ाइयाँ लड़कर तथा काम वह करती आती है। संस्थाने अनेक रचना कार्योंमें उत्तम मदद की है। इसके सिवा उसने स्थानीय संस्थाओं और विधान सभाके चुनावोंमें भाग लिया है और प्रान्तको इस पार्लियामेण्टरी कमेटीके द्वारा प्रवृत्तियोंका व्यवस्थित रूपसे मार्गदर्शन किया है। और धीरे धीरे इसमें उसने अद्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया है।

१९३० का हमारा आजादीका सत्याग्रह बाद देशमें समाजवादी पार्टीका आरंभ शुरू हुआ। गुजरातमें भी कुछ नौजवान अपनेको समाजवादी कहने लगे। परन्तु वह पार्टी मानी जा सके इतना संगठन व प्रभाव वे कभी न कर सके। इसका कारण यह है कि उनके सामने मुख्य कार्य स्वतंत्रता प्राप्त करनेका था। और समाजवादका तत्त्वज्ञान ही ऐसा है कि स्वतंत्रता आये बिना वह एक कदम भी उठा नहीं सकता था। इसलिए यह वाद अधिकतर बातोंका मसला बना रहता था। यही कारण है कि वह लोग करने योग्य कार्योंमें निष्काम लगा हुआ प्रान्तीय समितिका हिस्सा न सके। इसके सिवा गांधीजीने अपनी समस्त दरिद्रनारायणकी सेवाको ही ध्येय रखा था और उसके लिए कार्य क्रम भी दिया था। इसलिए समाजवादी लोग ध्येयके लिहाज किसी प्रकार कांग्रेससे अलग नहीं थे। फिर इस वादको नयी दृष्टिवाला तत्त्वज्ञान भी लोगोंको पसन्द नहीं आ सकता था। गांधीजी द्वारा बताये हुए संयम प्रधान होते हुए भी स्वतंत्रतावाले आचार विचारकी तुलनामें यह नया दर्शन लोगोंके लिए अप्रिय हो गया। अब स्वतंत्रता आ गयी है। अब देखना है कि इस सालमें क्या होता है। आज कांग्रेसने अपना मुख्य कार्य पूरा कर लिया है और नये ध्येयको स्वीकार करके नव जीवनमें प्रयाण कर रहा है। इस समय उसकी स्पर्धा कर सकनेवाली अन्य कोई संस्था या राजनीतिक पार्टी नहीं है। साम्यवादी और समाजवादी पार्टियाँ हैं परन्तु उनकी आज तो कोई खास प्रतिष्ठा नहीं है। स्वराज्य आने पर हिन्दू महासभा पार्टीने बड़ी आशायें बाँधी थीं कि प्रजाकी साम्प्रदायिक बुद्धिका लाभ उठाकर वह आगे आ सकेगी। परन्तु गांधीजीके बलिदानने आज तो उस आशा पर पूरी तरह तुषारापात कर दिया है। और कांग्रेस सरकार असाम्प्रदायिक राज्य स्थापित करनेके बारेमें दृढ़ मत रखती है।

राजनीतिके बाद दूसरे क्षेत्रोंके धर्म पर आयें तो शिक्षाका अुसमें मुख्य स्थान है। गांधीजीके गर्भ्य राजनीतिक स्वराज्य और शासन था। अुसे प्राप्त करना बाद ना रखनामें साथ भी करना था और करना है। अुसमें शिक्षा मुख्य है। जिस क्षेत्रमें मुख्य काम करनेवाली संस्था गुजरात विद्यापीठ रही है। १९२० में अुसका आरंभ होने पर सरकारी साथ असहयोग करके गुजरातकी अनेक संस्थायें अुसके साथ जुड़ गयी। जिनमें मुख्य था अहमदाबादका प्रोप्राअिटरी स्कूल, आणंदका चरोतर अेज्युकेशन सोसायटी और भावनगरका दक्षिणामूर्ति संस्था। सूरतका सार्वजनिक सोसाअिटी नहीं मिली। अिसलिअे वहां अेक नया राष्ट्रीय शिक्षा-मंडल स्थापित हुआ। अुसने थोड़े वर्ष काम किया। आज तो अुसकी प्रवृत्ति लगभग खतम हो चुकी कही जा सकती है।

१९२०–२१ की असहयोगी हवा कोअी पांच वर्षमें मंद होने लगी थी। यह आशा नहीं रही थी कि अंग्रेजी शिक्षाको भी यदि सरकारसे स्वतंत्र करके सार्वजनिक बनाया जा सके तो भी हम अंग्रेज सरकारको मान देंगे। १९२४–२५ के बाद कांग्रेसने शिक्षाके क्षेत्रसे असहयोगको हटा लिया। लोगोंका सरकारी शिक्षाका मोह दूर नहीं हुआ। परिणाम-स्वरूप राष्ट्रीय संस्थाओंमें विद्यार्थियोंकी संख्या घटने लगी। अिस स्थिति पर विचार करके अनेक संस्थायें फिर सरकारी बनने लगीं। अनमें दो मुख्य उल्लेखनीय हैं: १ प्रोप्राअिटरी स्कूल, अहमदाबाद। २ आणंदका चरोतर अेज्युकेशन सोसायटी।* अिस प्रकार शिक्षा द्वारा स्वराज्य और स्वतंत्रताका गांधीजीका प्रयोग धीरे धीरे गुजरात विद्यापीठमें सीमित हो गया और वह अब तक जारी है।

दक्षिणामूर्तिने गुजरातकी शिक्षामें जो अेक नया मार्गस्तंभ खोला वह था बालशिक्षाका। अुसके नायक थे स्व० गिजुभाजी बधेका। अुन्होंने छोटे बच्चोंकी शिक्षाका विचार गुजरातमें जाग्रत किया। यह आन्दोलन बड़े शहरोंसे अधिक आगे न जा सका और अुसका प्रचार अुपरके वर्गोंमें विशेष

* आगे चलकर १९३५ के बाद यह प्रवाह कालेज और विश्वविद्यालय बनानेकी ओर मुड़ा। देखिये अहमदाबाद और आणंदकी अिस क्षेत्रकी प्रवृत्तियां।

रहा। १९२७ के बाद वर्धा-योजनाका नया विचार सामने आया। असमें गाधाजीने शिक्षा-सम्बन्धी अपने समग्र दर्शनको प्रत्यक्ष रूप दिया और अस कार्यान्वित करनेके लिअे विज्ञानशुद्ध और व्यावहारिक मार्ग बताया। बालशिक्षाके चिन्तन हो मुख्य तत्त्व अुसमें आ गये। असके सिवा अुसमें हमारी राष्ट्रीय आवश्यकताओं और व्यवहारकी भूख सतुष्ट करनेके गुण भी थे। दक्षिणामूर्ति संस्था बन्द होने पर श्री नानाभाओी भट्ट अिस नये विचारको अपनाकर भावनगरके पास आंबलामें ग्राम-दक्षिणामूर्ति* नामक शिक्षण-संस्था खोली और शिक्षा द्वारा रचनाकार्य शुरू किया है।

अिन सब प्रवाहोंमें गुजरात विद्यापीठने अपना काम अखण्ड रूपमें जारी रखा है। शिक्षाके क्षेत्रमें से असहयोगके हट जाने पर अुसने राष्ट्रीय सेवक तैयार करनेका ध्येय स्वीकार किया और देशकी सच्ची ठोस शिक्षाके निर्माणको अपना अुद्देश्य बनाया। शिक्षाका मुह गावोंकी ओर होना चाहिये नहीं तो शिक्षा सच्चे राष्ट्रकी नहीं बन सकती।

विद्यापीठकी अुत्पत्ति अिस विचारसे हुआी थी कि जो शिक्षा स्वराज्य और स्वतत्रताके विमुख है वह शिक्षा ही नहीं है। अिसलिअे स्वतत्रता और स्वराज्य प्राप्तिके लिअे कोशिश करना शिक्षाका अेक मुख्य और बडा काम है। शिक्षाके क्षेत्रमें असहयोगका सच्चा अर्थ यही था। अिसलिअे विद्यापीठने कानूनी असुरक्षा तथा कैसा अवसर लिअे और स्वराज्यकी लड़ाओके लिअे विद्यार्थी-सख्याकी तरफ नहीं देखा और आचारसे गुणको अधिक प्रिय समझा। १९३०-३४ में तथा १९४२-४५ में अिसके लिअे अुसने अपना सर्वस्व होम दिया। अिसका फल अच्छा ही निकला। अुसका काम सारे गुजरातमें नैतिक रूपमें फैला। और भले ही बहुसख्यक विद्यार्थी अिस सस्थामें नहीं आये परंतु स्वराज्यकी लडाओीकी पुकार होने पर अुसमें शरीक होना ही सच्ची शिक्षा है यह मत्र विद्यापीठकी जलती ज्योतिके कारण सब जगह फैल गया। अिस प्रकार अपने मूल अुद्देश्यमें विद्यापीठने पूरी सफलता प्राप्त की।

शिक्षामें क्रांति

विद्यापत्रमें भी अुसका काय अेसा ही मौलिक और बुनियादी सिद्ध हुआ। शिक्षामें अुद्योगका महत्त्व शिक्षाका माध्यम स्वभाषा होना चाहिये

* आगे बढ़कर अिसमें से लोकभारती नामक ग्राम शिक्षा-केन्द्र अब यहां विकसित किया गया है।

हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषाके रूपमें स्थान अथवा असका जन्मजात दावा मंजूर न किया जाय, तो भाषाओंका दूसरी भाषाके रूपमें शिक्षामें स्थान लेकिन बच्चोंका महत्त्व, शिक्षामें भावना और परिश्रम शिक्षाका अग्र स्थान अित्यादि अनेक बातें शिक्षा क्षेत्रमें अनेक नअी हो गअी और जनतामें मंजूर करायीं। असमें गुजरातमें शिक्षा विचार असा प्रकार नया पहले-पहल निर्माण हुआ। अिन कामोंके लिअे आवश्यक पुस्तकें अलग तैयार करायीं। यों कहा जा सकता है कि नवजीवन और विद्यापीठने मिलकर गुजराती साहित्यमें नया ही रास्ता बनाया और अितना ही मौलिक साहित्य जनताके सामने रखा। गांधीजीकी प्रेरणासे नवजीवनका काम शुरू हुआ जिससे गुजराती भाषाको वर्तमान रूप मिला। विद्यापीठने शिक्षा नीति तथा गाँवके लिअे सुन्दर पाठ्यपुस्तकें दीं, नये गुजरातके लिअे प्रारंभिक पाठमाला दी।

अिन सबका स्वाद आज तक गुजरातको मिला हुआ है और यह काम अब स्वराज्यके आने पर अधिक होना चाहिये, असी विद्यापीठकी निष्ठा है।

अिस पीढ़ीके तीन मुख्य बल

नया युग पैदा करनेवाले बल मुख्यतः तीन चार हो सकते हैं

१ राजनीतिक क्रान्तिदृष्टि

२ शिक्षामें क्रान्तिदृष्टि

३ धर्म और जीवनमें क्रान्तिदृष्टि

अिन तीनोंमें परस्पर सम्बन्ध होता है। तीसरी क्रान्ति मुख्य धार्मिक क्रान्ति है। अब तक हमने गांधीयुगमें हुअी पहली दो क्रान्तियोंके बारेमें थोड़ी चर्चा की। अब तीसरी क्रान्तिके विषयमें देखें।

अिस सारे युगमें पहली क्रान्तिकी संस्था कांग्रेस है और दूसरीकी गुजरात विद्यापीठ है। तीसरी क्रान्तिकी असी कोअी संस्था नहीं है। अिस बारेमें गांधीजीने कहा कि मैं सनातनी हिन्दू हूँ। मेरा कोअी अनुयायी नहीं। मैं ही अपना सच्चा अनुयायी बननेकी हमेशा कोशिश करता हूँ। अिस प्रकार वे स्वयं ही धर्मक्रान्तिकी संस्था थे और अन्तमें शहीद होकर अुन्होंने जो धर्मकार्य किया वह सचमुच अवतार-कार्यके समान महान और मौलिक धर्म संस्थापनका कार्य सिद्ध हुआ है। अिस प्रकार वे महान अीसाकी तरह स्वयं अेक धर्मसंस्था बन गये हैं। अिसका मूल्य समझनेके लिअे अितिहास पर अपनी अच्छी नजर डालनी चाहिये। अससे मालूम होगा कि यह पीढ़ी

भारतके अर्वाचीन अितिहासकी सुनहली पोथी है। वह सन्धियोंसे जकड़ा या अेक गुजरनेवाले कालकी मामूली पोथी नहीं है।

धर्ममें क्रांति

जिसे हम सनातन हिन्दू धर्म कहते हैं, वह भारतके प्राचीन अितिहासका फल माना जायगा। अुसका निश्चित स्वरूप भारतमें अिस्लामके आगमनसे पहले निर्माण हो चुका था। अुसके दो पहलू हैं: अेक धर्मका जीवन-दर्शन। जीवनमात्र अद्वैत है; अुसके प्रति वफादार रहना चाहिये। यह पहलू दुनियाके दर्शनोंमें आज तक अपूर्व और अद्वितीय रहा है। दूसरा पहलू है अितिहासकी अनेक शताब्दियोंमें निर्माण हुआ हिन्दू जीवन। अनेक जातियां और प्रजायें अिस देशमें आती गअीं और अेक समाज बनाती गअीं। अुसमें अूँच-नीचका और अस्पृश्यताका खयाल घुसा। अद्वैतका अुपासक हिन्दू समाज असी भयंकर भूल कर बैठा। परन्तु सनातन धर्ममें यह अतिरिक्त अंग अेक दोषके रूपमें रहा है। अिस्लामने अुस पर विजय प्राप्त की, परन्तु धीरे धीरे वह भी बदल गया और दोनों धर्म अिस विषयमें अेकसे बन गये। अिसीलिअे अनुशासन, फौजी तालीम और राष्ट्रप्रेमवाली गोरी जातियां भारतमें आअीं और वे अिन दोनों समाजों पर प्रभाव जमाकर राज्य स्थापित कर सकीं।

अिन दोनों कालोंमें जो पुनरुत्थान हुआ, अुसके आदिपुरुष धर्मपुरुष थे। अिस्लामके कालमें रामानन्द, कबीर, नानक, रामदास वगैरा हुअे। अुनके धर्मदुग्धका पान करके सिक्ख-मराठे पैदा हुअे। अंग्रेजी कालमें भी हम धर्मरससे ही आगे बढ़े हैं। यह बल गांधीजीके कालमें अधिकसे अधिक व्यापक और प्रखर बना। खानपानकी चारदीवारी, अूँच-नीच भाव तथा अस्पृश्यताके भयंकर जहरके विरुद्ध लड़कर हमारा प्राचीन सनातन हिन्दू धर्मका सच्चा तेज प्रगट किया। जिस हद तक हमने यह तेज प्रकट किया, अुस हद तक हम सफल हुअे। अिस प्रकार सच्चे सनातन हिन्दू धर्मका रूप गांधीजीने फिरसे दिखा दिया है और वे हमें चेतावनी दे गये हैं कि यदि हिन्दुस्तान अिस जहरको समूल नहीं निकालेगा, तो हिन्दुस्तान और हिन्दू धर्म दोनों नष्ट हो जायेंगे। जिसलिअे जैसा हमने शुरूमें देखा, आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, प्रार्थना-समाज, थियोसॉफी आदि धर्मस्थान अिस कालमें कृतकृत्य होकर नये धर्मकार्यमें लीन होते गये। अिस व्यापक बलका प्रभाव जीवन और धर्मके सब अंगों पर तथा विविध संस्थाओं पर पड़ा है। अुन सबकी विस्तृत जांच

यन रहा भी ना सकता। परन्तु अब धारा उनमें अन्तर करना चाहिये। और वह यह कि हिन्दू धमन उसके अितिहासमें अिस समय पहले ही पहल ता धर्मांधता नहा माना?

हिन्दू धर्मांधता सोभन है?

अितिहासमें धमजनन है यह ता सभा जानते है। युरोपके सार लोगोंमें भी राष्ट्रधर्मी जनून है यह जनन राजनातिक और सामाजिक है फिर भा वह यद्वांका प्ररित करनेवाला जनन हा है। अिन लाना जनूनाम ता हिन्दू लाग धम और जीवनके धारम जनना नहा बन? बना अब हिन्दू हायग अपन धमपुरपरा हरयावी घटना अुनके अितिहासमें पहलीबार कम सभव होता?

अिस घटनाम यह पीढी पूरी हुआ असा मानें ना पूरी होनेवाला हमारी पीढी सचमुच अक महान पीढी है। असका असरधिकार पानवाली पीढी अस हजम करेगी और जीवनमें जाकर दिखायगी असा आशा सभा रखने है।

७-१-४८

३
सौ वर्ष पहले

[टािअम्स आफ अिंडिया पत्र रोज १०० वर्ष पहलेकी असी तारीखका प्रकाशित अपने पुराने अंकमें से कोअी न कोअी भाग अद्धृत करता है। अन भागोंमें से कुछ यहा दिये जाते है।]

१

पंजाबको जीतनेके बाद अंग्रेजोने भारतमें व्यवस्थित राज्य स्थापित करनेका प्रयत्न शुरू किया। अुन्होने नहरें खुदवाना आरंभ किया। परन्तु बादमें रेल गाडी और रास्ते बनानेमें लग गये। अस बारेमें टािअम्स का अक खबर नीचे अद्धृत की जाती है

खतीके लिअ नहरें—योजनाम शामिल की गअी या खादी जा रही नहरोंमें गंगाकी नहर सबसे बडी है। असके खर्चका अंदाज

मात्र बारह लाख पौण्ड है। असकी लम्बाओी ९०० मीटर है और अुसमें जगह जहाज चल सकेंगे। ५५ लाख अेकड़ जमीनको वह सींच सकेगा और चार लाख पौण्ड महसूल देगी। लार्ड आकलैण्डके कार्यकालमें वह शुरू हुआ। अनेक अच्छे कामोंकी तरह यह काम अुनके बादके समयमें ताकमें रख दिया गया। आज लार्ड हार्डिंजने अुसे फिरसे शुरू किया और लार्ड डल्हाअुसीने कहा कि सरकारकी मददसे अच्छी स्थापना देनेवाले अिस काममें कोअी रुकावट नहीं आने दी जायगी यद्यपि अुस समय रुपयेकी सख्त तंगी थी।

यह भी अुल्लेखनीय है कि योजनाअें बनाना और अुन पर अमल करना दोनों अलग चीजें हैं।

२

दूसरा अुद्धरण अिससे ज्यादा मजेदार है। वह बताता है कि हमारी प्रजा नौकरी और अफसरीके सम्बन्धमें अुस जमानेमें क्या विचार रखती थी। क्या हम आज भी अुन दायरोंसे बाहर निकल गये हैं, अैसा कहा जा सकता है? हमारे लोगोंमें घर किये बैठे जागीरदारी और राजाशाहीके ख्याल ही अुसकी जड़में हैं। यह स्पष्ट है कि अुनसे बाहर निकलना चाहिये। नीचेका अुदाहरण दर्पण जैसा काम दे सकता है:

७ नवम्बर १८४९

सरकारी नौकरी या अफसरीके कारण जो वतन हक प्रतिष्ठा वगैरा मिलते हैं अुन्हें हिन्दुस्तानमें अुसके किये हुअे किसी खास काम अथवा अुसने किये गये फर्जकी मेहनताना नहीं माना जाता परन्तु सौभाग्यसे जीवनमें अच्छी तरह दर्ज बन हुअे या नियमित लाभ मिलनेवाली विरासत माना जाता है। स्थिर अधिकारी होनेसे किसीको नौकरीमें लगानेका अथवा दूसरी तरहसे लाभ पहुँचानेका जो हक मिलता है वह राज्यके हितमें अुपयोग करनेका अेक कर्तव्य है अैसा नहीं माना जाता परन्तु अैसा माना जाता है कि वह निजी लाभमें अुपयोग करनेके लिअे अूपरसे मिलनेवाला विशेष अधिकार है। यह भ्रम अूंचे अधिकारियोंसे लेकर नीचे कर्मचारियों तक सबमें और सब वर्गोंमें फैला हुआ है।

३

आजकल हमारे यहां रुओकी कमीका शोर मचाया जाता है। अिंग्लैण्डमें यह शोर आधा सच्चा है, यह कमी अूंचे दर्जेकी रुओका ही शोर है। बस साधारण छोटे रेशेकी रुओ तो हमारे यहां बहुत होती है। परन्तु अुसे मिलोंके काममें नहीं लेना, क्योंकि अुससे नफा कम होता है।

यह शोर पुराना है। औस्ट अिंडिया कंपनीके जमानेमें अंग्रेज भी यह शोर मचाते थे, परन्तु दूसरे कारणसे। यह कारण नीचेकी टिप्पणी बतायेगी। हमारे देशके लोक-स्वभावके विषयमें भी अिसमें अेक आलोचना है जो बोधप्रद मालूम होती है।

३१ अक्तूबर १८४९

दक्षिण भारतमें रुओकी खेतीके प्रयोग

१८४९ के अंतमें औस्ट अिंडिया कंपनीके स्पष्ट अुपक्रम रुओकी पैदावारके सिलसिलेमें अिंग्लैण्डको अमरीकासे स्वतंत्र बनानेके लिअ आजमाअी गअी कपासकी योजनाओंकी असफलता, भारतके मजदूरोंकी जैसीकी वैसी दशा और मांचेस्टरके अुद्योगपतियोंकी आशाअें पूरी न होने पर अुनका भारी असन्तोष — अिन सबका हमें अुल्लेख करना है।

भारतके लोगोंको मेहनतसे अटल घृणा है और वे समूहमें अेकत्र होकर काम करनेको तैयार नहीं होते। वे स्वभावसे नरम और आज्ञाकारी हैं और अुन पर सीधी देखरेख हो तो ही आज्ञा मानकर काम करते हैं। कपासकी खेतीमें कुछ किया जा सके अुससे पहले आपको समूचे कृषक-वर्गकी सारी आदतोंमें जड़मूलसे परिवर्तन करना होगा और असा कुछ करना होगा जिससे वे समझ सकें कि समयका मूल्य है। अुनकी जरूरतोंकी संख्यामें आपको वृद्धि करनी पड़ेगी और अुन पर नीचेके सूत्रका जो असर है वह दूर करना होगा। वह सूत्र यह सिखाता है कि दौड़नेसे चलना अच्छा, चलनेसे बैठना अच्छा और अिन दोनोंमें से अेक भी न करके सोना अति अुत्तम है।

४

आजकल आय-करकी चोरी अेक बड़ी समस्या बन गयी है। काला बाजारकी तरह अिसे सफेद चोरी कहें तो गलत नहीं होगा। अुससे कैसे बचा जा सकता है?

और आजकल कुछ लोग जाने अनजाने खुद सत्यवादी और प्रामाणिक बनकर कहते हैं कि हमारा नैतिक स्तर बहुत गिर गया है।

परंतु नीचे लिखी 'टािअिम्स' की सौ वर्ष पहलेकी टिप्पणी अिसमें काफी विचारप्रेरक सिद्ध होगी। अुसमें मुण्ड-कर (Poll Tax) का सुझाव काफी मजेदार है; अुसमें चोरीकी गुंजाअिश तो नहीं ही रहेगी।

१३ अक्तूबर १८४९

भारतकी सरकारी आयका विचार करने पर अेक बात जो सबको दिखाअी देती है वह यह है कि सारी आय अेक ही वर्गसे मिलती है। वह है कृषक-वर्ग। अन्य दो वर्ग — धनी व्यापारी और आम लोग — कुछ भी नहीं देते। यह भूल दूर करनेके लिअे कभी बार दो रास्ते बताये जाते हैं : आय-कर और मुण्ड-कर। अिसमें शक नहीं कि जमीनके अलावा अन्य साधनोंसे होनेवाली आय पर कर लेनेमें न्याय है। परन्तु अुसे अिकट्ठा कैसे किया जाय? भारतीयोंकी आयका निश्चित हिसाब अुनकी सहमतिके बिना मिलना लगभग असंभव है और कर लगवानेके लिअे कभी कोअी यह सहमति देगा नहीं। दूसरे रास्तेके विरुद्ध प्रभावशाली मत विद्यमान है, फिर भी हम साहसपूर्वक कहना चाहते हैं कि मुण्ड-कर जितना अव्यावहारिक लगता है अुतना वह है नहीं।

फरवरी १९५०

४

राष्ट्रकी शिक्षाके पिछले सौ वर्ष

[हिंसक शान्तिका मुख्य साधन शस्त्र और सेना है। अहिंसक शान्तिका मुख्य साधन नयी शिक्षा — नयी तालीम — माना गया और स्वीकृत हुआ है। अिसलिओ १८५७ से १९४७ तकके भारतके अहिंसक शान्तिकार्यमें की गयी शिक्षा पर दृष्टिपात करके अुसका अितिहास भी जानना चाहिये। यह भी संशोधनकी अेक बड़ी दिशा है। अिस संग्रहमें कुछ विचार प्रस्तुत करनेवाले थोड़े लेख यहां अुद्धृत किये गये हैं। ९० वर्षके अिस महान आन्दोलनको समझनेमें वे अुपयोगी होंगे अैसा मैं मानता हूं। ये लेख अिस दिशाके विषयके साथ पूरा न्याय तो नहीं करते, फिर भी आशा है कि वे कुछ न कुछ दिशा-सूचन जरूर करेंगे।

१५-७-५७ — म० देसाओ]

१

राष्ट्रीय शिक्षाका अर्थ

(१)

राष्ट्रीय शिक्षाके पिछले १०० वर्षोंके अितिहासका विचार करते समय पहले राष्ट्रीय शिक्षाका अर्थ स्पष्ट समझना जरूरी होगा। आजकल अुसका अेक अर्थ यह रूढ़ हो गया है कि महात्मा गांधीजीकी विचारधाराको माननेवाले और अुस पर चलनेवाले कुछ चुने हुओ लोग गुजरात विद्यापीठ या अुसके जैसी अन्य संस्थाओंमें जो शिक्षा देते हैं वह राष्ट्रीय शिक्षा है। यह अुसका अर्थ नहीं है, लेकिन आजकल पढ़े-लिखे माने जानेवाले लोगोंके दिमागमें अैसा खयाल घर कर गया है। अुसका मूल अर्थ तो दूसरा है और अुस अर्थमें तो ही अिस शिक्षाका अेक सदीका अितिहास जाना जा सकता है।

प्रत्येक राष्ट्र अपने बालकोंको शिक्षा देनेका व्यापक अुद्योग करता ही है। अुनके मार्ग और पद्धतियां अलग अलग होंगी, अिस अुद्योगके प्रति अुनकी निष्ठा और अर्पणबुद्धि भिन्न भिन्न होगी, अुनके व्यवस्था-तंत्रमें फर्क होगा।

परन्तु अिस प्रवृत्तिको कोअी समाज — कोअी राष्ट्र छोड़ नहीं सकता। यह प्रवृत्ति अपने राष्ट्रके मानवधनको शिक्षित बनानेवाली अत्यंत मौलिक वस्तु है। अुसके द्वारा वह राष्ट्र सजीव और प्राणवान बनता है, अपने मानवधनको तैयार करता है और राष्ट्रकार्य करनेकी शक्ति प्राप्त करता है। और असा जो व्यापक राष्ट्रीय पुरुषार्थ है असे अुस राष्ट्रकी शिक्षा कहा जाता है। यह स्वाभाविक है कि अिसका प्रभाव संपूर्ण राष्ट्रके कलेवर पर पड़ता है।

अिंग्लैंड जैसे देशमें वहाँकी किसी भी प्रकारकी शिक्षाके लिअे 'राष्ट्रीय' विशेषण काममें लिया जाता मालूम नहीं होता। यह असके लिअे जरूरी नहीं है, क्योंकि वहाँ जो शिक्षा प्रचलित है अुसकी समग्र कल्पना अुसके कल्याणके लिअे की गअी है और अिसलिअे वह 'राष्ट्रीय' ही है। अतः असके लिअे असा भिन्न विशेषण काममें लेनेकी जरूरत महसूस नहीं हुआ।

हमारे देशमें असा नहीं हुआ। हम जो 'राष्ट्रीय' विशेषण अिस्तेमाल करते हैं, वह अिंग्लैंड आदि देशोंकी तरह व्यर्थ या अनावश्यक नहीं है। अुसके द्वारा हम अेक विशेष विचार — अेक निश्चित भाव प्रगट करना चाहते हैं। अुसका बोध करानेके लिअे हम 'राष्ट्रीय' शब्द रखते हैं। असा हम क्यों करते हैं, अिसकी जाँच करने पर हमें 'राष्ट्रीय शिक्षा' का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है और अुसका मर्म क्या है यह अच्छी तरह समझमें आ जाता है।

पिछले १००–१५० वर्षोंका अर्थ है भारतका ब्रिटिश राज्यकाल। यह राज्य विदेशी था। अंग्रेज अिस राज्यका संचालन अपने देशके हितमें करते थे। अुन्होंने शिक्षा विभाग भी अिस रूपमें शासकके रूपमें चलाया और अेक खास तरहकी शिक्षाका तंत्र खड़ा किया तथा धीरे धीरे अुसे विकसित किया। यह तंत्र हमारी जनताको राष्ट्रीय नहीं लगा, कहीं न कहीं अुसमें खटका मालूम होता रहा। अिस कारण अुस तंत्रकी शिक्षासे भिन्न शिक्षाका भाव प्रगट करनेके लिअे और शिक्षामें अुसके जो प्रयोग किये गये अुनके वाचकके रूपमें 'राष्ट्रीय शिक्षा' शब्दप्रयोग जरूरी मालूम हुआ और अिस कारण वह प्रचलित हुआ। आज भी अिसी अर्थमें हम अुसे काममें लेते हैं। बस, सच पूछा जाय तो कोअी भी स्वतंत्र देश अपनी जनताके लिअे जो शिक्षा निश्चित करे वह अुसकी राष्ट्रीय शिक्षा ही है। असे निज राष्ट्रीय शिक्षाका आयोजन करने या विचार करनेकी अुसे जरूरत नहीं

होना — अैसा सवाल बना रहता ही नहीं। यदि देश अपनी भाषा या प्रवृत्ति राष्ट्रके हितका विचार करके ही शिक्षा देता है, अिसलिअे वह अपने आप राष्ट्रीय बन जाता है। परन्तु हमारे यहाँ परराज्य होनेसे अैसा नहीं हुआ। जो कुछ भी सोचा जाता रहा वह हमारे राष्ट्रके हितकी विशुद्ध दृष्टिसे नहीं सोचा गया। अतः अैसा करनेकी अलग जरूरत महसूस हुआ और अिस कारण राष्ट्रीय शिक्षा देना अेक रचनारूप बन गयी।

अिस प्रकार देखनेसे हमें आजकी चर्चाके लिअे राष्ट्रीय शिक्षाकी कामचलाअू व्याख्या मिल जाती है। राष्ट्रीय शिक्षाका अर्थ है पिछली सदीके दौरानमें राष्ट्रका सच्चा निर्माण करनेके हेतुसे किया गया शिक्षा-संबंधी राष्ट्रीय विचार और तदनुसार किये गये काम। अिसका अितिहास हमें देखना है।

अिसलिअे पहले हमें यह स्पष्ट समझ लेना है कि राष्ट्रीय शिक्षाका विचार भारतमें विदेशी राज्यके कारण अुसके शिक्षा-कार्य पर जो असर हुआ अुसमें से और अुसकी बदौलत अुत्पन्न हुआ है। अुसका विकास किन किन मंजिलोंमें हुआ है यह हम आगे देखेंगे। अेक प्रकारसे देखें तो यह सारी वस्तु सरकारी अथवा अंग्रेजी शिक्षाकी राष्ट्र द्वारा की गअी आलोचनामें और सुधारके प्रयत्नोंमें समा जाती है अैसा कहा जा सकता है।

(२)

प्रारंभ-युगका विचार

अीस्ट अिंडिया कंपनी १८१८ तक व्यापार और अुसके लिअे चलाये जानेवाले शासनके अलावा अिधर अुधरकी बातोंमें नहीं पड़ती थी। शिक्षाकी तरफ अिस कालमें अुसका पहले-पहल ध्यान गया विलायतके अुदारमतवादी सुधारकोंके कारण। अुन्होंने बताया कि भारतमें हम व्यापार करके कमा खायें यह काफी नहीं है, हमें भारतकी शिक्षाका भी खयाल करना चाहिये। जिससे (अन्त करके १८२३ के कंपनीके अधिकारपत्रमें) १ लाख वार्षिककी बड़ी रकम अुस मदमें खर्च करनेकी कलम जोड़ी गअी। परन्तु दस वर्ष तक अिस बारेमें कुछ हुआ नहीं। १८३३ के नये अधिकारपत्रके समय फिर वह बात याद आअी और अिस दिशामें विचार शुरू हुआ कि यह रकम शिक्षाके लिअे किस प्रकार और किस चीजमें खर्च की जाय?

यह बाद यानी राजा राममोहनरायका युग। तबसे देशकी शिक्षाके बारेमें जो विचार शुरू हुआ वह ठेठ आज गांधीजीके युग तक चला। असलिअे अिस अितिहासको राजा राममोहनरायसे गांधीजी तकका नापें तो अुचित होगा, क्योंकि दोनों पुरुष समर्थ शिक्षाकार भी थे, यद्यपि वे पेशेवर शिक्षक नहीं थे। दोनोंने अपने-अपने जमानेमें समग्र राष्ट्रकी स्थिति, गति और विकासका विचार करके अपने समयके अनुरूप निर्णय किये और शिक्षाका विचार देशके समक्ष रखा।

राजा राममोहनराय वृत्ति तथा प्रकृतिसे पंडित विद्वान थे। ज्ञानोपासना अुनके जीवनकी अखण्ड साधना थी। अुन्होंने देखा कि देशके लोगोंको यदि अपनी प्रगति करते रहना हो तो नअी विद्याओं और कलाओंका संपादन जारी रहना चाहिये। असलिअे नअी विद्याके रूपमें अंग्रेजी भाषा और अुसके द्वारा मिलनेवाले नये ज्ञानको अुन्होंने स्वीकार किया। देशमें फारसी, अरबी और संस्कृतके सिवा अब नअी भाषाके ज्ञानभंडारको भी देशको हस्तगत करना चाहिये यह अुनका विचार था। अिस प्रकार अुन्होंने देशकी प्रचलित शिक्षामें अेक नये विचारकी वृद्धि की और अुसके अनुसार अंग्रेजी भाषाको शिक्षामें स्थान मिला। जिसमें अुनकी दृष्टि राष्ट्रकी शिक्षाके प्रवाहमें नअी कामकी वस्तु बढ़ानेकी थी और अिस प्रकार यह वस्तु राष्ट्रीय थी।

परन्तु यह वृद्धि अेक नअी ही प्रकारका अनर्थ करनेवाली साबित हुआ। अंग्रेजी शिक्षाप्रवाहको जिसने अैसा स्थान दे दिया कि अुसके कारण राष्ट्रीय शिक्षाका स्वतंत्र और अलग विचार करना हमारी जनताके लिअे दूसरा हो गया। अिस शुद्ध विचारके भीतर नागरिकोंकी दृष्टियों और रीतिनीतिमें भिन्नत्व अुत्तरोत्तर गहरा होता ही गया।

राजा राममोहनरायके अिस नये सुझावके विचारके लिअे दो प्रश्न खड़े हुअे:

१ यह अंग्रेजी विद्या ली जाय या नहीं?

२ और ली जाय तो किस भाषाके द्वारा?

निर्णय हुआ कि नअी विद्या तो ली जाय। अिस रूपमें विद्याका कभी बहिष्कार नहीं हुआ। परन्तु यह निश्चय हुआ कि यह विद्या अंग्रेजी भाषाके द्वारा ली जाय।

आज सारे मालूम होता है कि पराअी भाषाका माध्यम स्वीकार करनेमें बड़ी भूल हुअी। अिस अेक कारणसे हमारी प्रजाके विकासको अपार हानि

पहुंचाया है। परन्तु जिसका थोड़ा यहां चर्चा अप्रस्तुत न होगा। जितना ही उल्लेख करना चाहिये कि जिस समय राष्ट्रीय शिक्षामें सरकारने अपना दखल प्रवेश किया और जिस प्रकार भारतमें सरकारी शिक्षा जैसी नयी शिक्षा-विधि आरंभ हुआ, जिसकी सफलतामें और सुधार अथवा पूर्तिके रूपमें राष्ट्रीय शिक्षाका जन्म उसका प्रयत्न करनेका कारण जनतामें पैदा हुआ। भारतकी सांस्कृतिक प्रणालीमें सरकारी शिक्षा जैसी वस्तु शायद पहली बार आरंभ हुआ। उसके साथ प्रजाकीय अथवा राष्ट्रीय शिक्षाका अलग प्रकार भी अपने आप पैदा हुआ। उसकी शिक्षा और हेतु समझने लायक है।

अगर जिसे सरकारी शिक्षा कहा गया है उसका प्रारंभ १८ ३ से मानें तो गलत नहीं होगा। १८ ०४ बाद राजा राममोहनरायने जिस शिक्षामें जो प्रयाण करनेके लिए अंग्रेज सरकारको अपना सुझाव उसका समर्थन-पत्र दिया उसने १८५७ तक अपना स्वरूप ग्रहण कर लिया और दूसरे वर्ष देशमें सर्वप्रथम अंग्रेजी विश्वविद्यालयोंकी स्थापना हुई।

यह नवप्रयाण भारतकी चली आती राष्ट्रीय शिक्षा प्रणालीमें एक नया क्रांतिक रूपमें था यह ध्यानमें रखना चाहिये। राजा राममोहनरायके खयालमें जिसमें कोई नयी शिक्षा पद्धतिकी बात नहीं थी। वे तो यही समझते थे कि अंग्रेजी विद्यामें देशको प्रजाके लिए एक नया विद्याक्षेत्र खुलता है। जिसीलिए उन्होंने नयी विद्याको देशके विद्याध्ययनके प्रयत्नमें स्थान दिया था। परन्तु परिस्थितिके कारण वह शिक्षा दूसरी ही वस्तु सिद्ध हुआ और जिसीलिए उसे सरकारी करनेकी जरूरत महसूस हुआ ताकि सच्ची राष्ट्रीय शिक्षाको उससे अलग बनाया जा सके।

२

नये बलका असर

(१)

शिक्षा राष्ट्रीय है जिसका अर्थ यह है कि वह राष्ट्रके समग्र पुरुषार्थको पोषण देती है उसे आगे बढ़ाती है और उसका विकास करती है वह राष्ट्रके समस्त जीवनमें जितना ओतप्रोत होना चाहिये। हमने देख लिया कि भारतमें जिस प्रकारकी शिक्षा या जिसमें अंग्रेजी राज्यकालमें नया प्रयाण आरंभ हुआ।

इतिहासकार बताते हैं कि इस नवप्रयोगसे पूर्व भारतकी अधिकांश जनता पढ़ना लिखना जानती थी। इसके लिए गाँव-गाँवमें स्थानीय व्यवस्था थी। इसके संचालनके लिए लोगोंने अपने ढंगसे बन्दोबस्त किया था जो सरकारी नहीं था। गाँववाले अपने सामाजिक आदर्शके अनुसार सब बन्दोबस्त करते थे। कारीगरी-धंधोंकी शिक्षाके लिए भी परम्परागत पद्धति प्रचलित थी। कारीगरके पास रहकर काम सीख-सीखकर लोग माहिर बनते थे। बल्कि इसमें जातपात और वर्णोंकी मर्यादाएँ रखी गई थीं। अर्थात् सारा काज उस कालके समाजके सजीव भागके रूपमें संगठित था। उच्च शिक्षाके लिए भी प्रबन्ध था। उसके लिए प्रसिद्ध विद्याधाम थे जहाँ जाकर विद्यार्थी पढ़ते थे। उनके खर्चकी व्यवस्था भी स्थानीय होती थी जो राज्याधीन नहीं थी यद्यपि राज्य उसमें सहायता भी देता था। इस व्यवस्थाके साथ साथ पंचायतका हमारा प्राचीन पद्धति लगा हुआ था। यों कहिए कि शिक्षाके लिए जनताने अपनी प्रथा निर्माण कर ली थी जिसके अंगमें सारी सार्वजनिक प्रारंभिक शिक्षाकी लाभदायी व्यवस्था थी।

इस सारी व्यवस्था पर १८-१९ वीं सदीके [illegible] कालमें हुए राज्य-परिवर्तनके कारण बड़ा असर पड़ा था। उसका ढाँचा बिगड़ता रहा होगा फिर भी मूल रूपमें वह कायम था। और उसकी बुनियाद गाँवोंके अन्दर होनेके कारण और ग्रामीण सारा कारोबार चलनेके कारण उसका ढाँचा कायम रहा था। भारतकी ग्राम-व्यवस्थामें उसकी जड़ जमी हुई होनेके कारण उसकी बुनियादका नुकसान नहीं पहुँच सका।

(२)

अंग्रेजी राज्यसत्ता आने पर तो हालत नयी बातें हुईं वे ये :

१ परराज्यने जो शासन-तंत्र खड़ा किया उसमें १८५७ तक भारतकी ग्राम-व्यवस्थाको धक्का पहुँचा।

२ मुगलों और मराठोंकी शासनशाही सैनिक पद्धति मिटकर सख्त फौजकी अंग्रेजी छावनी प्रणाली आरम्भ हुआ। जिससे सैनिक वर्गोंमें लोग बेकारी पैदा हो गयी। युद्ध एक रोजगार उद्योग था। अतः इस प्रकार सिर्फ ज्ञानसे समाजकी सैनिक जातियाँ सत्तासे लुप्त हुईं।

३ अंग्रेजी व्यापारके कारण स्थानिक उद्योग-धंधे टूटने लगे। इस कारण भी बेकारोंकी संख्यामें वृद्धि करनेवाला साबित हुआ। उसने लोगोंकी सब व्यवस्थाको पलट-पलट बदलनेका कारण भी पैदा किया।

जब गनिर जातियां ही नहीं परन्तु गासन तथा प्रबन्ध दोनोंमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी लगी हुआ जातियां अथवा वग नये राज्यमें क्या कर?

जिसलिअ पन्द्र व्यापारी वग तथा राजकाजमें लग हुअ वग अग्रज बपनाने आडनिय दस्तावे सुनने पत्वारी नाराणा-कानयाने कानूनगो जियादिका जो भी काम मिला अनमें जाने लग। अितन मिलमिलमें लाग-बाग रिश्वत अिनाम भेंट-सोगात आदि रिवाज अग्रजी शासनमें भी चल पड़। बात अितनी ही थी कि य सब बातें कपनी-सरकारके काममें सीधी बाधक न हो तब तक कोअी आपत्ति नहीं अठाअी जाती थी। यह स्थिति सपूर्ण अग्रजी शासनकालमें जारी रही। अिसे अब स्वराज्यमें कैसे मिटाया जाय जिसकी चितामें हम आज लग हुअ ह।

(३)

सरकार द्वारा शुरू की गअी शिक्षासे सम्बधित निणय अिस प्रकारकी सामाजिक पृष्ठभूमिमें कार्यान्वित हुअ। सरकारने घोषणा की

१ शासन-काय अग्रजीमें होगा। अिसलिअ नौकरीके वास्ते अग्रजी भाषाकी जरूरत पदा हुआ।

२ अग्रजी विद्यायें अच्छ और सुन्दर ह अिसलिअ अन्ह शिक्षामें मुख्य स्थान दिया जाय। जिस प्रकार पश्चिमकी शिक्षा प्रमुख स्थान पर विराजमान हुआ। और अस शिक्षाको प्राप्त करनेवाले अग्रज और भारतीय लोग समाजमें अूचे दर्जेके मान जाने लग। अग्रज लोगोंने जिस गौरवको गुरुभार कहा जाता है अुसे ग्रहण किया। अिसका आदि आचाय मकॉले माना जा सकता है जिसने बगर समझ-बूझ भारतकी विद्याओंके बारेमें अपना मत देनका साहस किया और अज्ञानमें अनकी खिल्ली अुडाअी। और

३ घोषणामें यह माना गया कि नअी विद्यायें देशी भाषाओं द्वारा लोगोंमें फल जायगी और सारी शिक्षा लोगोंके लिअ अकरस बन जायगी।

(४)

जिस नअी शिक्षाके लिअ जो प्रथा निश्चित की गअी अुसका सूत्रपात १८५४ स १८५७ के अरसेमें नियमित और सम्बद्ध भी हुआ। अुसके मुख्य अग य थ

१ राज्य नियत पाठ्यक्रम,

२ सरकारी पैसेकी सहायतावाली नीति और अुसके अनुसार दी जानेवाली सरकारी सहायताके बल पर दी जाती शिक्षा पर—

३ सरकारका नियंत्रण। १८५७ के विद्रोहके बाद राज्यका अुद्देश्य असा प्रबन्ध करना हो गया जिससे फिर वैसा विद्रोह न हो सके। नअी शिक्षाकी व्यवस्थामें राज्यकी वफादारी अेक अनिवार्य वस्तु थी।

(५)

अिन नये नियमों तथा नये विश्वविद्यालयोंकी कार्यप्रणाली और अुद्देश्यके कारण नअी शिक्षा प्रजामें अुतरनेके बजाय अुसके जीवन-प्रवाहकी अेक अलग धारा बन गअी। अुसके लिअे अुपमा दी जाय तो भारतके शिक्षा-शरीरमें यह नअी शिक्षा अुसके निकम्मे अंगकी तरह हो रही। जिसके फलस्वरूप पुरानी शिक्षा मरने लगी। परम्परागत अच्छी शिक्षा पंडितों और मौलवियों तक सीमित हो गयी जिनका समाजमें कोअी आदर न रहा। कोअी चिन्तक या ज्ञानी हमारे प्रगाढ संस्कृत-शास्त्रोंसे अधिक आदरणीय बन गया। जिससे पुराने संस्कार भंडारोंमें से जीवन-रसका सिंचन होना धीरे धीरे बन्द होता गया और अंग्रेजी भाषासे मिलनेवाले नये ज्ञान विज्ञान मुख्य बन गये और अिस बातको भुला दिया गया कि लोगोंकी शिक्षा अेक स्वाभाविक विकासकी वस्तु है और जो कुछ हुआ अुसके बारेमें अंग्रेज अितिहासकार सहज लिखता है

> भारतीयोंके मानसका पूर्व अितिहास जाने-समझे बिना अुन्हें शिक्षित करनेका काम भारतकी (सरकारी) शिक्षाने हाथमें लिया। अुसके सम्बन्धमें सबके मानस असमर्थ थे क्योंकि अुन सबमें विचार पास पश्चिमकी जानकारी नहीं थी। अिसलिअे वे सभी अुसके शासक समान रूपमें सारी हानिके कारण बननेके पात्र थे। अिंग्लैंडमें जो पद्धति जनताके लिअे सर्वश्रेष्ठ थी वह भारतमें भी वैसी ही होनी चाहिये और वह यदि जोर जबरदस्तीसे लागू किया जाय तो जम जायगा। अिसलिअे शिक्षा पद्धतिके चुनावकी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं। विद्यार्थियोंमें अुचित प्रकारकी जानकारी काफी मात्रामें लादी जाय तो नागरिक पात्र तुरंत तैयार हो जायेंगे असा मान लिया गया।

अब तक अिसी भावनासे काम हुआ। विभिन्न विश्वविद्यालयोंमें होनेवाले विचार यहाँकी विद्यायें पुस्तकें अित्यादि तैयार माल जैसा बना

रहा और असका शिक्षा-व्यापार ही चलता रहा । जिसका परिणाम-स्वरूप समाज जीवनमें विचारका प्रवाह अनन्त हो मात्रामें और असी प्रकारका मर्यादित हो गया।

शिक्षा हो नया असका असर और क्या नतीजा रहा । जिसका अन्दाजा स्वातंत्र्य अस गिरावट जो मनुष्यपुत्र या बनियादी तालिमका बनाया गया वे सूरत सामने आ जाता है। असका उल्लेख वर्णन किया जाय तो जिसका अध्ययन प्रारम्भ और रंगीन अितिहास है प्रजाआंक निर्माणका काम इतनाहर अच्छा सुन्दर विवेचन असमें न हमें मिल सकता है। जिसमें सब न जाकर शास्त्रमें कुछ मुद्दे अपरोक्त अितिहासकार मत्थक शब्दोंमें ना अद्धृत करना ठीक होगा

१ भारतको भौतिक तथा राजनीतिक प्रगतिकी तुलनामें भारतीय संस्कृतिके लिअ हमारी शिक्षाने बहुत कम काम किया है। हमारी पाठशालाओं तथा कॉलेजोंका आर भारतकी दृष्टि कम जीवन निर्वाहके लिअ रहा है युवा जीवनके मन्त्र लिअ वह दूसरा ओर देखता है।

२ भारतमें विदेशी संस्कृतिके खिलाफ भावनाओंका लहर अठी है जिसलिअ अुसके अगले लिअ आज मानसकी अनुकूल भूमि नहीं मिल सकती।

३ भारतके व्यक्तित्व या समग्र जीवन पर अस शिक्षाका शायद ही गहरा प्रभाव पड़ेगा जिस पर रमवका प्रभाव न हो । (पृ ४)

जिसके सिवा भारतमें जो नया शिक्षातन्त्र पैदा हुआ असका परिणाम यह हुआ कि

हमारा भारतकी (अंग्रेजी) शिक्षा प्रणालीके जालमें फँसा हुआ शिक्षक अनकी नियमपूर्वक कायम रहकर चलता है। असके लिअ कोअी प्रणाली या अलिखित कानून नहीं है। नियत समय पर अस अमुक पत्रक भर कर भेजना चाहिये अमुक नियमोंका पालन करना चाहिये परीक्षामें हो अनमें अमुक अमुक फासला विद्यार्थी पास होने चाहिये और निरीक्षकका जो अकाल या स्वर्गकी अपेक्षा अधिक नियमित रूपमें आता है यानी मिनट्स यह निश्चय कर लेना पड़ता

है कि कोई नियम टूटा नहीं है और प्रत्येक कुछ न कुछ काम होता रहता है। ऐसी प्रथामें से थॉमस आर्नोल्ड या मैथ्यू आर्नोल्ड जैसे (स्वतंत्र शिक्षाशास्त्री) निकल आनेकी आशा रखना व्यर्थ है। यह शिक्षण प्रथा भारतमें शंकर कबीर या तुकाराम पैदा नहीं करेगी। (पृ० ७२)

शिक्षा और विचारके क्षेत्रमें मनुष्यका व्यक्तित्व काम कर सके ऐसा अवसर यह प्रथा देती ही नहीं। सच्चा स्वतंत्र या व्यक्तित्व जो भी हो वह पाठशालाके बाहर ही रहना चाहिये। (पृ० ७३)

इस प्रकार दूसरी अनेक बातें कही जा सकती हैं। परन्तु सार रूपमें ये ही तीन प्रकारके कुछ मुख्य लक्षण ऊपर आ गये हैं। अन्तमें एक बातका उल्लेख करना रह जाता है।

(६)

शिक्षा केवल सरकारी गुट ही न रहे परन्तु गैर-सरकारी संस्थाएँ इस कामको करें तो उन्हें सरकार मदद दे इस नियमसे शिक्षा-तंत्र चला। जिससे शिक्षाके क्षेत्रमें व्यक्तिगत साहसको स्थान मिला। आगाओं मिशन इसका लाभ उठाने लगे। जिस प्रकार ये भारतमें अंग्रेजी शिक्षाके प्रचारमें अपना हिस्सा अदा करने लगे जो अब तक जारी है। इसी प्रकार बादमें भारतीय संस्थाएँ भी इसमें भाग लेने लगीं और उन्होंने शालाएँ तथा विद्यालय शुरू किये जैसा कि बंगाल बम्बई और मद्रासमें —जो तीन मुख्य प्रान्त कम्पनीके स्थान हैं—पाया जाता है। उपरान्त व्याख्यानोंमें राष्ट्रीय शिक्षाके प्रयत्न इसीमें से पैदा हुए।

१ –१– ५८

५

धार्मिक शिक्षाका प्रश्न

हमारे जैसा सच्चा स्वातन्त्र्य और सच्ची जिम्मेदारी प्राप्त होनेके बाद शालाओंमें धार्मिक शिक्षाका प्रश्न जितना ज्यादा आज आवश्यक है, जितना पहले कभी नहीं माना गया था। वस्तुतः बुद्धिशक्तिकी देवपूजाका परिणाम तथा स्थितियोंमें जलन्न हुअे गत महायुद्धके समयके और बिहार पञ्जाब-पाकिस्तान जगतभरमें मनुष्योंके हत्याकांडने क्षुब्ध करके यह भान कराया है कि हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकारके जीवनके पथप्रदर्शन और शासनके लिअे केवल बुद्धिकी अपेक्षा किसी अन्य वस्तुकी भी जरूरत है। भारतको हम लोग अधिक धार्मिक वृत्तिवाला मान लेते हैं और हमें कभी कभी अिस बातसे सावधान भी किया जाता है कि पाठशालाओंमें धार्मिक शिक्षाके प्रति लापरवाह रहनेसे हम अपने जन-जीवनकी आत्माको गंभीर हानि पहुँचायेंगे।

भारत-सरकारके शिक्षामंत्री मौलाना आज़ादसाहबने भी यह प्रश्न अुठाया है। १९४८के जनवरी मासके मध्यमें दिल्लीमें हुअी केन्द्रीय सलाहकार मंडलकी १४वीं बैठकमें आये हुअे सदस्योंके समक्ष बोलते हुअे अुन्होंने बताया था:

> आप सब जानते हैं कि धार्मिक शिक्षा देनेके बारेमें १९वीं सदीका अुदारमतवादी बहुजनवादी दृष्टिकोण कभीका अपना महत्त्व खो बैठा है। प्रथम महायुद्धके बाद भी अिस बारेमें अेक नअी ही समझ पैदा होने लगी थी और अिस दूसरे महायुद्धके अन्तमें सामने आअी बौद्धिक क्रान्तिने तो असे निश्चित स्वरूप दे दिया है। पहले यह माना जाता था कि धर्म बालकोंके स्वतंत्र बौद्धिक विकासमें बाधक होता है, परन्तु अब यह स्वीकार किया जाता है कि धार्मिक शिक्षाका सर्वथा त्याग नहीं हो सकता। यदि राष्ट्रकी शिक्षामें अिस तत्त्वका अभाव होगा तो नैतिक मर्यादाका कुछ भी मान नहीं रहेगा और न मानवताके मार्ग द्वारा चरित्र-निर्माण ही संभव होगा। आप सब यह बात जानते होंगे कि रूसको पिछले महायुद्धके दौरानमें अपनी

विचारसरणी छोड़ देना पड़ा था। अिंग्लैण्डकी ब्रिटिश सरकारको भी १९४४ में अपनी शिक्षा प्रणालीमें सुधार करना पड़ा था।

अलबत्ता विदेशी सरकारको धार्मिक शिक्षाके मामलेमें अपने आपको अलग रखना पड़ा था। परन्तु राष्ट्रीय सरकार यह जिम्मेदारी अुठानेसे बच नहीं सकती। जनताके नये मानसको योग्य मार्गों द्वारा निर्माण करना अुसका प्राथमिक कर्तव्य है। भारतमें हम धर्म रहित बौद्धिक शिक्षाका ढांचा खड़ा नहीं कर सकते।

स्वाभाविक रूपमें ही अिस बातने हमारी राष्ट्रीय शिक्षाके अिस जरूरी सवाल पर चर्चा खड़ी कर दी है। परन्तु मुझे डर है कि अुसकी गंभीरता और महत्त्वको अच्छी तरह समझा नहीं गया है।

प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि अंग्रेजी राज्यके विरुद्ध सन १८५७ में हमारे लोगोंको विद्रोहकी प्रेरणा देनेवाले कारणोंमें अेक कारण यह डर था कि विदेशी अीसाअी शासक अुन्हें धर्मभ्रष्ट करके अीसाअी बना लेंगे। अिसी कारणसे रानीकी घोषणामें अुस समय हमें निश्चित आश्वासन दिया गया था कि हमारी धार्मिक और कर्मकाण्ड-सम्बन्धी मान्यताओं और आचारोंमें कोअी हस्तक्षेप नहीं किया जायगा। अुसके बाद तुरन्त ही स्थापित की गअी अंग्रेजी शिक्षा प्रणालीने घोषणाकी अिस बातको स्कूलोंमें धार्मिक शिक्षा बिलकुल न देनेके अर्थमें अपना लिया, यद्यपि अुसने साम्प्रदायिक ढंगसे स्कूलोंके विभाग तो किये। अिसके पीछे अिरादा यह था कि किसी भी अेक धर्मके कर्मकाण्ड या साम्प्रदायिक सिद्धान्तोंको सरकारी स्कूलोंमें सिखाया न जाय अथवा अुनका अनुसरण न किया जाय। परन्तु धार्मिक शिक्षाका अर्थ केवल कर्मकाण्ड या अुसका आचरण ही नहीं होता। अन्तमें जब भी धार्मिक शिक्षाका महत्त्व स्वीकार किया जाता है तब अिसी ध्येयको सामने रखकर किया जाता है कि मनुष्यके गहनतम व्यक्तित्वको बाहर लाकर अुसे मानव जीवन और पुरुषार्थकी विविध भूमिकाओंमें व्याप्त किया जाय। वह हमारे व्यक्तित्वका अेक अन्तर्भूत मूल तत्त्व है, अुसकी अवगणना करें तो हमारा व्यक्तित्व विगठित — विच्छिन्न हो जाय। अिसके लिअे किसी प्रमाणकी जरूरत हो तो मैं हमारे देशके अैहलौकिक कहलानेवाली अपनी शिक्षाके परिणामोंका अुदाहरण दे दूंगा। अुनमें कुछ समय अवेकले ही मन में यह सन्देह करता हूं।

भारतमें अंग्रेजी शिक्षाके अितिहासकार आर्थर मेह्यू अपनी पुस्तक 'अेज्युकेशन ऑफ अिण्डिया' में अिस प्रकार लिखते हैं :

> यूरोपीय साधारण रूपमें तथा विचारक आलोचना और अवहेलना करने जिस दृष्टिकोणमें तैयार हुआ है, अुस दृष्टिकोणसे रूपमें हमारी शिक्षाका नक्शा अुसने बनाया है। परन्तु हृदय तक पहुँचने अथवा विधायक प्रवृत्ति मन पर असर डालनेकी अपनी असमर्थताके कारण अुसने सारे धर्मोंको विरोधी रूपमें बाद किया है। (पृ० ३)

दूसरे अनुच्छेदमें यही स्पष्ट कहा है

> धर्मके मामलेमें आवश्यक रूपमें तटस्थ — अलग रहना चाहने वाली सरकारकी अपनी शिक्षा प्रणालीके साथ असम्बद्धता होनेके कारण अिस प्रणालीमें धार्मिक आन्दोलन, धार्मिक प्रभाव और धार्मिक लक्ष्य नहीं रह गया है और अिनका नवीन शिक्षाका अुद्देश्य था बदले बिना जिन लोगोंका जीवन तत्त्वतः धार्मिक वृत्तिवाला है अुन लोगोंमें मिथ्या और अप्रिय बना दिया है अिस बात पर बहुत जोर दिया जा चुका है। (पृ० ६७)

भारतमें अीसाअी अुच्च शिक्षा सम्बन्धी कमीशन — जिसके अध्यक्ष अॉक्सफर्ड कॉलेजके प्रिंसिपाल अे० डी० लिंडसे थे — की रिपोर्टमें कहा गया है

> पिछले सौ बरसके विकासका कुल परिणाम यह हुआ है कि जातपातके पुराने आधार पर बना हुआ सरकारी नौकर, वकील, डाक्टर, राजनीतिज्ञ, व्यापारी, अुद्योगपति, साहूकार वगैराका शहरी धनिक वर्ग पैदा हो गया है, परन्तु धर्मसंस्थाके सम्बन्धका — पादरियोंका — कोअी वर्ग पैदा नहीं हुआ, सिवा अिसके कि राष्ट्रनायकोंके पैगम्बरोंको अिस वर्गमें गिना जाय। (पृ० ३६)

कॉलेजके प्रिंसिपालकी रिपोर्टमें किये गये तीव्र और प्रभावकारी कटाक्षकी ओर मैं पाठकोंका ध्यान खींचता हूँ। अिसके सिवा मैं अेक और बात ध्यानमें रखनेका अुनसे अनुरोध करता हूँ। वह यह कि पिछली आधी सदी और अुससे भी अधिक समयमें हमारे राष्ट्रीय नेताओं द्वारा किये गये राष्ट्रीय शिक्षा देनेके लगभग सभी प्रयासोंमें अेक या दूसरे प्रकारसे नीति और धर्मकी शिक्षा देनेकी ओर कभी लापरवाही नहीं दिखाअी गअी। और वास्तवमें वे नेता जीवन और धर्म (वह धर्म जो स्वतन्त्र विकासके सबके जन्मसिद्ध अधिकारको प्राप्त करनेसे सम्बन्ध रखता था) के बारेमें

प्राणवान दृष्टिकोण रखनेवाले पैगम्बर हो थे। जिसके लिए अहिंसा भारतीय व्यक्तित्वको उसकी अन्तर्गत गहराइयोंमें से चेतनावान बनाती थी। और ऐसा करनेका श्रेय धर्म ही यथार्थ मात्रामें रखता है। नायर मसूर अपनी पुस्तकमें बिलकुल सच कहा है कि

> धर्मके द्वारा प्राणवान न बनी हुई कोरी शिक्षा समग्र रूपमें भारतीय व्यक्तित्व और जीवन पर गहरा असर नहीं डाल सकती। प्रगतिका विरोध करनेवाले वर्गोंको बुरा धर्म रोक सकता है या सही शिक्षामें भाग सकता है जो उन लोगोंसे अधिक प्राणवान हो जिन पर विरोधी अपना शासनके लिए आधार रखते हैं। (पृ ४)

इतना ध्यानमें रखिये कि गहरा धार्मिक वचन लेकर एक अन्य जातिका रूप ले लिया था और हमारे विदेशी शासकोंका वह साथी था गुलाम बन गया था। जिन लोगोंने अपने अलग लेकर धर्मका शिक्षण दूर रखनेकी बात स्वीकार कर ली थी। विदेशी शासकोंके पास तो ऐसा करनेके लिए एक दूसरे अलग अलग धर्मों और सम्प्रदायोंको अलग बनाता था। और इससे धर्म तथा पद—प्रतिष्ठा—के मामलेमें मजबूत बन गए शिक्षित वर्ग धर्मके आधार जिसके लिए अपने नये मार्ग ढूंढ़ ? वो समाजके पीछे ये वर्गियोंमें से शिक्षित वर्ग ढूंढ़ लिया था। जिन्हें लोगोंको आज भी बाहवाही है। परन्तु स्वातंत्र्य आने पर उनमें भी बड़ा परिवर्तन सच गया है। पाकिस्तानके जन्मके जिस रूपमें भी साम्प्रदायिक विभाजन कर लिया है—वह एक रहस्यपूर्ण घटना है। और गांधीजीकी क्रूर हत्या अन्तमें जन्म दिया रखनेवाली एक ऐसी घटना है जिस पर हम सबको बहुत गंभीर विचार करना चाहिये। इस पर आधारित साम्प्रदायिकता जो अबतक अबतामान्य गहराई नाच देखा पड़ा रहा था तथाकथित प्रगतिशील अथवा राष्ट्रवादका पूरा हो रहा समाजमें न जरा भी हानि अगाध बिना सुरक्षित रूपमें बाहर निकल आया है। वह राष्ट्र प्रगतिशील एक ही अपनेमें था और वह यह कि उन्होंने विदेशी राष्ट्रसत्ताकी अनुमति लेकर भूमिका पर तथा मनमाने रूपसे इहलौकिक तथा धार्मिक रूप अनिष्टकारी विचारोंकी भूमिका पर शिक्षा पाकर एक लोगोंको एक अन्य शक्ति उत्पन्न कर ली। धर्मको रूढ़ कर्मकाण्ड या साम्प्रदायिक मान्यताओंमें ही नहीं समा जाता। वह तो मानव आत्माकी अत्यन्त गहरी सूक्ष्म आविष्कार है। वह जितना व्यापक वस्तु है कि इहलौकिक

शिक्षा स्वयं ही धर्मरूप बन जाती है — अर्थात् अिहलौकिकताके धर्मका रूप ले लेती है। क्या बुद्धिवाद भी लगभग अेक धर्म ही नहीं बन गया था? अुसकी जगह पश्चिममें आज मानवताके धर्मने ले ली है यह अेक अपूर्ण धर्म है। महान घटनाओं और पिछले वर्षोंने सारी दुनियाके लिअे बारबार सिद्ध न हो सकनेके कारण अिस पर अपनी पकड़ भी खो बैठनेवाले मनके बुद्धिको आशा दे, जिसी विचार करनेकी नये प्रयोग करनेका सूचक है। भारतमें तो हम अभी ही नाजुक स्थितिके सामने आकर खड़े हैं। अनेक वर्गों और आम जनताके बारेमें सुनिश्चित विश्वास बाकी अब छूटे अथवा थोड़े ही क्षेत्रमें व्याप्त घटना लगा है। यह तो हमारे सारे जीवन पर पड़ा हुआ लम्बा गहरा और अलग अलग ढंग पर दिखनेवाला घाव है। अुसकी हानिकारकता स्पष्ट है। तात्त्विक दृष्टिसे यह गलत है और अेक अर्वाचीन भारतवर्षके जगने और विकसित होनेमें बाधक है। भारतकी आम जनता अपने युगों पुराने वहमों, जादू टोने, रूढ़ियों और गन्दे अज्ञानके नीचे लगभग दब गयी है। अर्वाचीन शताब्दियोंमें बाहरसे आये बाद जिसमें अेक ही तामस रूप कर सका है और वह है अुसमें से सारी आशा और जीवनका सारा आनन्द नष्ट करनेकी रीति। वह आज हमारे मानव-समूहके रूपमें जा रहा है। अुसे फिरसे अुसके स्वत्वका भान कराना चाहिये। यह काम सच्चे प्रकारकी स्वतंत्र और सर्वांगीण राष्ट्रीय शिक्षा ही कर सकती है। क्या अुसमें धर्मको भी कोअी स्थान हो सकता है? यदि हो तो वह कैसा होगा? यही हमारे सामने प्रश्न है। पाठक शुरूमें यह न समझें कि अिसके मार्गकी कठिनाअियोंकी मुझे कोअी कल्पना नहीं है। और ये कठिनाअियां धार्मिक शिक्षाके मामलेमें तो विशेष प्रकारकी हैं। परन्तु अिसका अर्थ यह नहीं कि हम अिन कठिनाअियोंके नीचे शुतुरमुर्गकी तरह अपने सिरको दबाकर ही यह मान लें कि हम अुनसे बच गये।

जैसा अेक अंग्रेज लेखक कहता है आवश्यकता तो यह तय करनेकी है कि वे धर्म शब्दसे निश्चित रूपमें क्या क्या कहना चाहते हैं तथा अुसकी शिक्षा बालकोंको किस ढंग पर देनी चाहिये।

धर्मके विषयमें हमारे भावी नागरिकोंमें अेक विशाल दृष्टिबिन्दु विकसित करनेकी अनंत आवश्यकता है। (धार्मिक शिक्षाकी समस्या और अुसका नया हल — लेखक आन्र्स मोवन्स व्याजिट पृ ४४)। यह किसे

करना चाहिये और किस प्रकार करना चाहिये यह प्रश्न अैसा है जिसके लिअे बहुत विचार और प्रयोगोंकी जरूरत है। मैंने जैसा शुरूमें ही कहा था, यहां तो मैं अितनी ही मांग कर रहा हूं कि हमारे सामने खड़े अिस महाप्रश्नकी जांच की जाय और अुस पर अुचित विचार किया जाय।

६-७-४८

६

राष्ट्रकी बुनियादी शिक्षा

मैडम माण्टेसोरीने बालकमें सहज रूपमें काम करनेवाली मानस-क्रियाको सब-कान्शस अथवा अव्यक्त या सूक्ष्म मानस कहा है। वे कहती हैं कि मूढ़ या अबोध दिखाओ देनेवाले छोटेसे बालकमें भी अपने अेक खास निराले कानूनके अनुसार काम करनेवाली अव्यक्त मानस-प्रक्रिया चलती ही रहती है और हमें मालूम न होने पर भी अुसके अपने नियम जरूर होते हैं, जिनका बालक सहज भावसे कुदरती तौर पर अर्थात् अचूक रूपमें अनुसरण करता है। अिन नियमोंको यदि हम बड़े लोग समझें तो हमें बालसृष्टिके साथ काम करना आ सकता है। नहीं तो बेचारे बालक हमारे दोषके कारण दुःखी होते हैं और अुनकी शिक्षा शुरूसे ही बिगड़ जाती है। आश्चर्यकी बात है कि अैसी ही स्वाभाविक सज्जता अुसने माता पिताके या सच्चे मानव-हृदयके वात्सल्यमें रखी है। जहां यह है वहां अिन नियमोंका अपने आप पालन होता है। अैसा करनेके लिअे अुन नियमोंकी कोरी विद्या काम नहीं देती।

मॉण्टेसोरीके अिस विधानकी अुपमा द्वारा समाज-पुरुष या नागरिकके मानसकी शिक्षा पर लागू करें तो यों कहा जा सकता है कि नागरिकका अव्यक्त मानस अुसकी प्राथमिक शिक्षा तैयार करती है। जिस प्रकार बालककी सामान्य और अनिवार्य निःशुल्क सार्वत्रिक शिक्षा नागरिकके अव्यक्त या सूक्ष्म समाज-मानसको तैयार करनेवाली प्रक्रिया मानी जा सकती है।

अिसलिअे अिस शिक्षाका विचार करते समय यह याद रखना चाहिये कि अुसके द्वारा हमें समाज-पुरुषके अव्यक्त मानसको निश्चित करना

है अुस मार्ग पर अिस शिक्षाका असर होता है। अिसलिअे यहाँ तक समग्र समाज-जीवनके साथ सहज आनंदका आधार होना चाहिये। समाज-जीवनके मूल और प्रारंभिक व्यापार क्या हैं? अिसमें से कुछ प्रश्न करके और विकसित होते असा समझना चाहिये। अर्थात् शालामें बालकोंको ज्यादातर अिन मूल व्यवहारोंका अपने भीतर खूब रसपूर्वक स्वाभाविक और समन्वित रूपमें जीवन जीनेका अवसर मिलना चाहिये। बालक खुश होकर अिस जीवनमें आनन्दपूर्वक रमेगा और अुससे अपना समाज-मानस स्वभावतः शिक्षित होगा। शिक्षा केवल वैयक्तिक प्रक्रिया नहीं है, वह सामाजिक मानवको तैयार करनेवाली सामाजिक या सामूहिक प्रक्रिया भी है यह न भूलना चाहिये।

अिस प्रकार वास्तव सूक्ष्म मानसकी अपेक्षा द्वारा यदि जनतांत्रिक बाल-नागरिककी शिक्षाका विचार करें तो मनुष्यके समूह-जीवन और व्यक्ति-जीवनके मूल व्यापारोंके बारेमें हमें सोच लेना चाहिये और अुन्हें शिक्षामें खूब देना चाहिये। असे जीवनके मूल व्यापार क्या हैं? मेरा खयाल है कि वे बिलकुल आसानीसे गिनाये जा सकते हैं:

१ तंदुरुस्तीकी देखभाल।

२ अुद्योग और हुनर-कला — अुत्पादक परिश्रम।

३ सामान्य जीवनकी समझ (हाथ-कामके अलावा आंखों द्वारा) — ज्ञानोपासना।

अिन वस्तुओंको प्राथमिक शिक्षामें प्रत्यक्ष स्थान होना चाहिये। अितना याद रखना चाहिये कि यह किसी पंडितकी तरह या लेमन करनेवाले बेगारीकी तरह न हो परन्तु जीवनको समझने और अुसमें स्वयं सहयोग देकर असे ग्रहण करनेकी अुत्कण्ठा रखनेवाले मानसके लिअ आवश्यक ढंगसे हो। अर्थात् यह प्रक्रिया प्रवृत्ति-परायण और अुद्यम-परायण होनी चाहिये।

अिस परसे आगे बढ़कर देखें तो सच्ची प्राथमिक शालामें अितना काम होना चाहिये:

(१) स्वच्छता और आरोग्यके लिअ बालककी और शालाकी सफाईके काम प्रत्यक्ष कराये जायं, ताकि अुनकी आदत पड़े, अस्वच्छताके लिअ घृणा पैदा हो, हाथोंसे सफाई करनेमें घृणा या हल्कापन — जो अब झूठे बड़प्पनका प्रश्न बन गया है — न महसूस हो।

जिसका सामाजिक भाग है हमारे घरके समान बन रहे गांवोंमें स्वच्छताका क्रान्तिकारी बीज बोना। प्राथमिक शिक्षामें स्वच्छता और सफाईका रोज आग्रह रखनेका कार्यक्रम अुगते नागरिकोंके अव्यक्त मानसमें यह बीज बोयेगा, जो आगे पनपकर बड़ा वृक्ष बन जायगा।

(२) बालककी काम करनेवाली अिन्द्रियोंको तालीम देनेके लिये अुत्पादक अुद्योग होगा। जिससे वह अुपयोगी सर्जनका रस चखेगा। किसी प्रकारके वर्गमें नहीं, परन्तु समाजके लिअे अुपयोगी नवसर्जन करनेमें बुद्धि और विवेककी जो व्यवस्थितता होनी चाहिये अुसकी आदत अुसे अपने-आप पड़ेगी। जैसा कुछ लोग मानने लगते हैं, अुद्योग केवल बालककी अिन्द्रियोंको तालीम देनेवाला ही नहीं है। वह अुसकी बुद्धि तथा विवेकशक्तिका भी अनजाने परन्तु अचूक रूपसे विकास करता है। अुसका समाज-जीवनका निर्माण भी अिसीमें निहित है। आखिरकार देखें तो मानवकी अधिकांश विद्यायें अिसी प्रकार प्राप्त हुई हैं, निर्माण हुई हैं और विकसित हुई हैं।

अब हम अिस अुद्योगका सामाजिक पहलू लें। वह यह है कि अेक शताब्दीसे अधिक समयसे हमारी शिक्षा-प्रणालीमें से और अुसके परिणामस्वरूप सारी जनताके मानसमें से ही कला-कौशलकी जो तालीम मिट गअी है वह अुद्योगके कारण फिर अपने आप हमारे बालकोंमें जड़ पकड़ेगी। जिस राष्ट्रमें अुद्योग करनेवाले परिवार बड़े काम-धंधे करते हों वही राष्ट्र खड़ा रह सकता है। अिसके लिये हमारे नागरिकोंकी प्राथमिक शिक्षाके सूक्ष्म मानसमें अुद्योग और हुनर-कारीगरीके आदरकी भूमिकाके रूपमें निर्माण होना चाहिये। गांधीजीकी बुनियादी शिक्षामें यह अेक बड़े महत्त्वकी चीज है जिसकी ओर अभी तक थोड़े ही शिक्षाशास्त्रियोंका ध्यान गया है। रूसका अुदाहरण सदा ध्यानमें रखने लायक है। १९१८ में वहां शिक्षामें जो क्रान्ति हुई वह अुसके अुत्थानका आधार है। (अिस बारेमें देखिये 'दि लेटेस्ट फेड'—लेखक जे० बी० कृपालानी, प्रकरण ६)

(३) अुसके बाद तीसरी चीज बताअी गअी है—सामान्य जीवनकी समझ। हमें याद रखना चाहिये कि बालक जहां जन्मा और बड़ा होता है वहां अुसी रूपसे वह जीवनको समझना चाहता है। घर, भोजन-सामान, अुसके खेती-बाड़ी, गांव, सारा समाज-तंत्र, सरकार आदि जो जो और जहां जहां अुसके आसपासके जीवनको स्पर्श करते हैं वहां वहां अुन्हें ग्रहण करनेके लिअे

७

गांधीजीकी कार्य पद्धति

अब तक हम अेक गम्भीर रूपमें अपनी छाती पर धरी हुअी किसी सरकारसे लड़ रहे थे। अिस काममें हमने लगभग ६० वर्ष तो लिये ही हैं। यह आज दीपककी तरह स्पष्ट है कि कांग्रेसका जन्म जाने अनजाने अिसी अेक आवश्यक अैतिहासिक कार्यके लिये हुआ था।

नरम विचारके राजनीतिज्ञोंने अंग्रेज शासकोंका अनुकरण करके वैधानिक कार्य-पद्धतिका विकास किया। अुसमें कार्य-साधनका औचित्य अच्छी तरह सुरक्षित रहता था। यदि केवल हां औचित्यका विचार करना होता तो वह पद्धति काफी होती। हम जानते हैं कि स्वराज्य मिलनेके बाद लोकतांत्रिक दशामें आम तौर पर अितना काफी होता है। नरम लोग सुराज्यके लिअे जरूरतसे ज्यादा चिन्ता करते थे, अुन्हें विदेशी राज्यकी आन्तरिक कराअी खास तरहसे दिखाअी नहीं दी थी। अिसलिअे अुनकी वह सयानी पद्धति अेन मौके पर असफल सिद्ध हुअी और १९१९ के जमानेमें भारतीय जनताको अपने स्वाभिमानकी रक्षा करनेके लिअे नयी पद्धति ढूंढनी पड़ी।

यह व्यावहारिक बात तो स्पष्ट ही थी कि कोअी भी नअी पद्धति लोगोंको अुपयोगी और कारगर मालूम होनी चाहिये। अिसके बिना तो लोग किसी पद्धतिके पास तक नहीं फटकते। परन्तु अिसके अलावा वह साफ भी होनी चाहिये। अिन दोनों शर्तोंको पूरा करनेवाली पद्धति लोगोंने गांधीजीके सत्याग्रहमें देखी। देखते ही अुन्हें प्रतीति हो गअी कि यह पद्धति और ये नेता अब हमारे लिअे अुपयुक्त हैं।

✓अिस पद्धतिके आधारभूत सिद्धान्त दो थे — सत्य और अहिंसा। अिन पर निर्मित पद्धतिके सिद्धान्त भी दो थे — असहयोग और कानून भंग। ये साधन अुचित हेतुके लिअे काममें लिये जाने चाहिये। अुनके अुपयोगमें पूरी सामाजिक जिम्मेदारीका भान होना चाहिये। समाज शरीरके लिअे वे हानिकारक नहीं होने चाहिये। अिसलिअे चाहे जैसा असहयोग नहीं किया जा सकता। चाहे जैसा कानून भंग भी नहीं हो सकता। वरना समाज छिन्न भिन्न हो जाय। अिसलिअे असहयोग अहिंसक होना चाहिये, कानून भंग सविनय होना चाहिये, यह स्पष्ट बता दिया गया।

अिस परसे निश्चित शब्दोंमें यदि सत्याग्रहके शस्त्रोंका वर्णन करना हो तो वे ये हैं :

१ अहिंसक असहयोग।

२ सविनय कानून भंग।

अिन दो विभागोंमें अिन साधनोंका औचित्य ही नहीं समाया हुआ है, अुनमें अिनकी अनिवार्य प्रभावशक्ति भी निहित है। अिन दो विभागोंकी भावनाओंको जिस हद तक लोग कायम रखेंगे, अुस हद तक जनताकी शक्ति अमोघ बनेगी, यह निश्चय गणितके धारणके नतीजे कानूनसे निकाल कर बताया जा सकता है। अिसीलिअे गांधीजी अपने लेखोंमें कहते हैं कि सच्चा सत्याग्रह कभी हारता ही नहीं।

अेक सूक्ष्म विवेचकने गांधीजीके 'अहिंसक असहयोग' पर असी मार्मिक आलोचना की है कि वह अेक निषेधात्मक वस्तु है, असका विधायक भाग अुतना सामने नहीं आता।

अिसका अर्थ यह नहीं कि गांधीजीकी पद्धतिमें केवल निषेध ही है। केवल शब्दको देखनेसे असा भ्रम जरूर हो सकता है, परन्तु वह ठीक नहीं है। शब्द अपने जमानेकी मुख्य आवश्यकताके अनुसार पैदा होता है। जिस कालमें गांधीजीकी पद्धति देशके सामने पेश हुआ, अुस समय सरकारके साथ असहयोग करनेकी भावना मुख्य थी, अितना ही नहीं, असा करनेमें निषेधात्मक नहीं परन्तु बड़ा विधायक रहस्य निहित था। अिसलिअे वह शब्द सामने आया। और असका विधायक भाग जो राष्ट्रके समाजके सहयोगसे सम्बन्ध रखता था, धीरे धीरे अुग्र होता गया।

१९२४ से जो रचनात्मक कार्यक्रम शब्दप्रयोग शुरू हुआ है वह अिस जन-सहयोगसे कायम ही सम्बन्ध रखता है। अिस प्रकार असलमें गांधी-पद्धतिके तीन अंग माने जा सकते हैं। और यह तीसरा अंग अितना व्यापक और विशाल है कि गांधीजीने अपने लेखों और भाषणोंमें अुसे जोरदार ढंगसे अनेक अंग-अुपांगोंका समावेश करनेवाला बताया है। यह अुनके तत्त्वज्ञानका विधायक भाग है और सच पूछा जाय तो असीके बल पर प्रासंगिक काम देनेवाले अुपरोक्त दो साधन अपनी साधनताका बल प्राप्त कर सके और कारगर बन सके हैं।

गांधीजीकी सनातन पद्धति सत्यमय और अहिंसामय साधनकी है। अुसमें स्पष्टतः प्रसंग आयें — और वे तो आयेंगे ही — अुस समयके लिअे

सत्य और अहिंसामय युद्ध-प्रणाली भी असीमें निहित है। वह यह है कि पाप या अनिष्टका साथ असहयोग किया जाय और जरूरत पड़े तो अुसका सविनय प्रतिकार करनेके लिअे कानून भंग किया जाय।

यह हुआ संक्षेपमें गांधीजीका पद्धति। अगर अलग अलग अंगोंका ही देखें तो ये नये नहीं हैं। परन्तु अन्होंने अिन सबका जो अेक सुसंबद्ध पद्धति शास्त्र और तत्त्वज्ञान-युक्त नीतिनियम दिया है जो अनका अमूल्य दान है।

अिस बारेमें अब संसारको भी प्रतीति हो गयी है। दक्षिण अफ्रीकामें अिस पद्धतिका जन्म पिछली सदीके अन्तिम दशकमें हुआ। तबसे अब तक असने तरह तरहकी कसौटियां पार की हैं। कहा जा सकता है कि पिछले विश्वयुद्धने अुसकी आखिरी परीक्षा कर ली। अिस समय बहुत-से ज्ञानी जगतके विचारकोंका मत बन गया है कि यह अेक असी चीज है जिसकी तरफ ध्यान देना चाहिये। अुस पर वे अमल कर सकें या न कर सकें यह दूसरी बात है।

मअी १९४७

८

'आखिरी प्याला'

१९३१ में गांधीजीके लिअे 'आखिरी प्याला'* गानेवाले कवि झवेरचन्द मेघाणी आज सशरीर विद्यमान नहीं। अिसलिअे आजकी गांधीजीकी मनोदशाका वह कवि हृदय किन शब्दोंमें वर्णन करता यह तो कौन कह सकता

* यहां गुजरातके प्रसिद्ध कवि श्री झवेरचन्द मेघाणीकी 'छेल्लो कटोरो' नामक कविताकी ओर संकेत है। यह कविता अुन्होंने लिखकर बापूको अुस समय अर्पणकी थी जब वे १९३१ में दूसरी गोलमेज परिषदमें शरीक होने लन्दन जा रहे थे। कविताकी दो लाक्षणिक पंक्तियां अिस प्रकार हैं :

छेल्लो कटोरो झेरनो आ पी जजो बापु!
सागर पीनारा! अंजलि नव ढोळजो बापु!

हे बापू, जहरका यह आखिरी प्याला तुम पी जाना। तुमने तो जहरका महासागर पी डाला है! अब गोलमेज परिषदमें मिलनेवाली जहरकी अंजलिको गिरा न देना, अुसे भी पी जाना।

है! परन्तु जितना सही है कि आखिरी प्याला तो आज गांधीजीके पीनेके लिअ आ रहा है। अेक गुलाम देशको अुसकी गुलामीसे छुड़ानेके लिअे नेतृत्व ग्रहण करके जिन्होंने न कभी खाया हो न जाना हो अिस ढंगसे अुसे घर देना देनेकी पड़ी अुस पुरुषके जीवनमें कैसा होना चाहिये! १९१९ में लोकमान्यके जिस मशालको छिन जाने पर अुनके हाथोंसे गांधीजीने देशको स्वराज्य-सूचक यज्ञ आग बनानेकी जिम्मेदारीका भार अपने कंधों पर लिया और धर्मभावना तथा त्यागके साथ आग बनाकर आज दिल्लीमें जिसे स्थापित किया है। परन्तु — फिर भी — यदि यदि देशमें आज सबसे अधिक दुःखी हृदय किसीका है तो वह महात्मा गांधीका है! अिसका भेद समझमें नहीं आता। जिस समय अिन महानुभावके हृदयमें भारतके भविष्यके स्वप्न दौड़ रहे हैं और अुसी समय वही धनुष वही बाण होने पर भी अन्त सबको दूर करनेमें आज वह लाचारी महसूस करता है और अिसलिअे दुःखी है। अुनके अहिंसक धर्मयुद्धसे स्वराज्य लेनेका दावा आ गया। प्राचीन महाभारतकी तरह यह सफल हुआ परन्तु अन्तमें युद्ध युद्ध ही ठहरा। काम निकल जाने पर बच नशा भी जाय अुस तरह धर्म फिर शिथिल होकर पीछे रह गया है और युद्धोंके समय जैसी रक्तपातकी मनो-भावनायें फिर मानव-हृदयमें जाग्रत हुआ है। अिसलिअे महाभारतके अन्तमें बच रहे सभी सम्बन्धियोंके साथ वियोगसे खिन्न हो जाते हैं और मानव गुनाहोंसे मनोमन जिन्दगीके साथ आखिर कविद्रष्टा कहते हैं

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति माम्।
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किं न सेव्यते॥

[हाथ ऊँचा कर मैं पुकार-पुकार कर कह रहा हूँ परन्तु कोअी मेरी बात सुनता नहीं। धर्मसे अर्थ और काम मिलते हैं तो फिर अुस धर्मका सेवन क्यों नहीं किया जाता]

और धर्मराज आखिर प्रकट करते हैं कि हम सचमुच युद्धमें जीते हैं या हारे हैं?

अनर्थो ह्यर्थाकारो नयोऽनर्थोऽयमुत्तम ।
जयोऽजयाकारो जयस्तस्मात् पराजय ॥

[अर्थ जैसा दीखनेवाला यह अनर्थ ही है जिस जयका स्वरूप पराजयका होनेके कारण हमारा यह जय पराजय ही है।]

भारतमें अहिंसा बड़े प्राचीन युगसे आजतक हमारी श्रद्धाका विषय बना हुआ लगता है। पर वह वास्तवमें अहिंसा था ही नहीं — दयाभाव मात्र था। जिसका सबूत यह परिणाम ही होता है। स्वतंत्र होने पर भी हमें अब स्वतंत्रताका स्वाद नहीं आता। पाकिस्तानसे हमें इस दिशामें अभी पराक्रम-बुद्धि करने लायक अवसर अब दिखायी देते हैं।

और गांधीजी साफ अच्छा करके कह रहे हैं: सत्य और अहिंसाके बिना आज तो तुम्हारा काम नहीं चलेगा। तुम नहीं सुनते, जिसलिये मैं अपना मुँह बन्द नहीं रख सकता। स्वराज्य और राजधर्मकी अपेक्षा मानव धर्म श्रेष्ठ है और जिस स्वतंत्र धर्मके अन्तर्गत सारा समाया हुआ है। फिर भी हम अनकी बात नहीं मानते। जिस सत्यका वर्णन करनेवालोंका आखिरी प्याला पीना क्या पैगम्बरोंका सामान्य भाग्य ही होगा?

१८-७-४७

९

स धर्मः किं न सेव्यते?

महाभारतका सारा अितिहास लिख लेनेके बाद अन्तमें महाभारतकार स्वयं ही सार निकाल कर कहते हैं:

> ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति माम् ।
> धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किं न सेव्यते ॥

हाथ ऊँचा करके मैं पुकार-पुकार कर कह रहा हूँ, परन्तु कोई मेरी बात सुनता नहीं। धर्मसे ही अर्थ भी और काम भी सिद्ध होता है, जिस धर्मका सेवन तुम क्यों नहीं करते?

और धर्मपूर्वक काम तथा अर्थ (अर्थात् समग्र जीवन) व्यतीत करना आ गया, अगर बाद जिसे चतुर्थ अथवा तुरीय कहते हैं अुसके सिद्ध होनेमें क्या कुछ बाकी रह जाता है?

धर्मके अटल और व्यापक नियममें श्रद्धा गांधीजीके जीवन-कार्यको समझनेकी कुंजी है। ये धर्म और नियम व्यवहारमें और परमार्थमें व्यक्तिगत व्यवहारमें या प्रत्यक्ष जगत-व्यापी मानव-व्यवहारमें समान रूपसे

सत्य हैं तथा अुनके पालन या अुल्लंघनका अच्छा-बुरा परिणाम अवश्य होता है — फिर भले वह किसी मर्यादित दृष्टिसे जल्दी या देरसे अुत्पन्न होता दिखाअी दे। चेतन-वस्तु और कर्मवस्तु दोनों अेक ही विषयकी दो अलग अलग पहलुओंसे किया गया निरूपणमात्र है। और अिसलिअे कर्मका नियम अर्थात् धर्म चेतन-वस्तुकी तरह ही व्यापक और अटल है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो धर्मके अनुसार किया जानेवाला कर्म ही चेतन-कर्म अथवा आत्मकर्म है। जिसलिअे धर्म और कर्म दोनों अेकरूप बनकर रहते हैं तब चेतन अपने पूर्ण रूपमें विराजमान कहलाता है। जिसीको चतुर्थ पुरुषार्थ — मोक्षका नाम देना हो तो दीजिये यद्यपि यह थोड़ा गौण बात हुआ।

गांधीजी धर्मके अिस विश्व-नियमका अनुसरण करनेवाले धर्म-पुरुष थे। प्रत्येक कर्म धर्मकर्म होना चाहिये भले ही वह कर्म व्यक्तिगत या राजनीतिक क्षेत्रमें होता हो या स्वजनके पक्षमें अथवा शत्रुके विरुद्ध होता हो। व्यभिचार झूठ चोरी वगैरा यदि अधर्म हों तो ये सब अपने या पराये मित्र या शत्रु सबके साथके व्यवहारमें समान रूपसे अधर्म होंगे। अितना ही नहीं अच्छेसे अच्छा अुद्देश्य पूरा करनेके लिअे अथवा अन्यायी अत्याचारी या जालिमका सामना करनेमें गुलामीसे मुक्त होनेमें अपने दुःखियोंका भरण-पोषण करनेमें या स्वदेश-सेवा करनेमें भी जिन अधर्मरूप कर्मोंका आश्रय हरगिज नहीं लिया जा सकता। कारण अधर्मसे कभी अच्छा परिणाम नहीं आता, अधर्मसे तो हमारे अच्छे हेतुके साथ हमारा भी नाश ही होता है। साथ ही अन्यायी अत्याचारी चोर और जालिम मनुष्य राजा या व्यापारीकी नौकरी करना या अुसके काममें साथ देना या अुनकी कारवाअियोंका स्वीकार करना भी अुस हिंसा चोरी झूठ अित्यादिमें भाग लेना ही कहा जायेगा। धार्मिक पुरुष कभी गुलामी अत्याचार या अनाचारका पुरस्कार सहन नहीं कर सकता।

परन्तु अन्याय और अत्याचारका प्रतिकार धर्मपूर्वक कैसे किया जाय? अिस मामलेमें गांधीजीकी दी हुअी देन अुनका अभिप्राय स्पष्ट था। पाप यदि असत् है — अधर्म है तो अुसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है। पाप स्वयं अपने पैरों पर कभी खड़ा नहीं रह सकता। अुसे फलने-फूलने या खड़ा रहनेके लिअे सामनेवाले पक्षका ही बल चाहिये। यह बल मिलना बन्द हो जाय तो पाप अपने-आप नष्ट हो जाता है। अत्याचारी अथवा जालिम आदमी अपना

अन्याय और अत्याचार अुस अन्याय-अत्याचारमें शामिल होनेवाले लोगोंके सहयोगके बल पर ही पनपता रहता है। अिसलिअे पापी या अन्यायीके विरुद्ध लड़ाअी सबसे पहले अुस पाप या अन्यायके साथ हम स्वयं जो सहयोग करते हैं अुसे बन्द करनेसे अर्थात् असहयोगसे ही शुरू होती है। जिसका दूसरा नाम आत्मशुद्धि है। हम अपनी कमजोरी या पापके कारण ही दूसरोंको जालिम या अत्याचारी बननेमें मदद देते हैं। अिसलिअे पहले हम यह सहयोग देना बन्द कर दें और अुस सहयोगके आधार पर ही स्वयं खड़े रहना या चलना बन्द कर दें तो अपने-आप आधी या शायद पूरी लड़ाअी खतम हो जाती है। कारण सामनेवाले अत्याचारीका आधा बल अुससे कम हो जाता है और हम स्वयं अुस हद तक अधिक सबल बन जाते हैं। हमने अपनी आत्मशुद्धि कर ली हो तो फिर अत्याचारीको खतम करनेके लिअे लायक अेक ही कदम बाकी रह जाता है और वह है प्रतिकार। बाजी हारकर भी हम अुसके अत्याचारके अधीन न हों और अुसके साथ सीधे संघर्षमें आवें। अर्थात् धर्मका ही दृढ़तासे अनुसरण करें। असा करना अत्याचारीको पूरी तरह खतम करनेका सीधा कदम या आखिरी कदम साबित होता है क्योंकि धर्मका सत्य अुस समय अुसके अधर्मके विरुद्ध सीधा टक्कर लेता है। और यह तो सब जानी बात है कि सत्यके सामने असत्यका टिका रहना संभव ही नहीं है। परन्तु हमारे द्वारा धर्मके अिस सत्यको अमली बनाना आसान नहीं है और आसान है भी। क्योंकि अिसमें धर्मके लिअे आत्म-बलिदान ही करना होता है। और यह बलिदान जितना शुद्ध — अर्थात् सच्चा होगा अुतना ही धर्मका अपराजेय अटल नियम अमली बनने लगेगा। यह आत्म-बलिदान अथवा तप अुस अन्यायीके विरुद्ध लड़ी जानेवाली लड़ाअीमें सीधा — आखिरी कदम है। अिसलिअे गांधीजी कहते थे कि अेक ही सच्चा सत्याग्रही हो तो भी स्वराज्य अवश्य आयेगा। क्योंकि अुस अेकके शुद्ध — सच्चे बलिदानसे धर्मका विश्व नियम अमली बनने लगता है।

बापूजी स्वयं असे सच्चे सत्याग्रही बननेका सतत प्रयत्न करते थे और अिस बातमें क्या कोअी शंका हो सकती है कि अुनके अकेलेके अुस सच्चे सत्याग्रहके सामने — या यों कहिये कि सत्यके प्रयोगोंके सामने भारतमें अंग्रेजी सल्तनतके असत्यकी अिमारत हमेशाके लिअे टूट कर धराशायी हो गअी?

बापूजीके जिन आत्म-बलिदान अथवा तपके प्रसंगोंकी मैंने नीचे धारनेसे अब तक दी गयी है। उनके प्रसंगोंकी तरह उपवासके प्रसंग भी अध्याय पढ़, बंगालके विरुद्ध आत्म-बलिदानके या सीधी कार्रवाईके ही प्रसंग कहे जायेंगे। परन्तु उपवास खास विशुद्ध मर्यादाओंके भीतर विचार पूर्वक उठाया जानेवाला ऐसा नाजुक कदम है कि उसे आम जनताकी लड़ाइयोंमें सामूहिक कदम नहीं बनाया जा सकता। इसीलिए उपवासके प्रसंगोंको जैसे प्रसंगोंसे अलग रखा गया है। परन्तु सत्याग्रही पुरुषकी दृष्टिकोणसे सोचें तो वे सभी समान रूपमें आत्म-बलिदानके — तपश्चर्याके ही प्रसंग थे।

अिसमें अेक बात अप्रस्तुत रूपमें भी कहने जैसी उचित मालूम होती है। अंग्रेजोंके विरुद्ध लड़ी गयी लड़ाइयोंमें गांधीजीने जनतासे आशीर्वाद — असहयोगके रचनात्मक साथ आखिरी कदम (आत्म-बलिदान वगैरा या मरेंगे) तकके कदम उठवाये। अंग्रेजोंका सशस्त्र सामना करना संभव नहीं था अिस लाचारीके कारण प्रजा बाह्य-वस्तु रूपोंमें गांधीजीके जिस कार्य क्रममें शामिल हुई। फिर भी यह कहना चाहिये कि अेक सच्चे धर्म-पुरुषके — सत्याग्रहके बल पर ही प्रजा मुख्यतः अपनी आजादीको सफल हासिल कर सकी। जिसी प्रकार गांधीजी पाकिस्तानके पापके विरुद्ध भी संपूर्ण सफलताके प्रयोग नहीं कर सके। गांधीजी विभाजनके पापसे बहुत दूर थे और ऐसा वे जिस शब्दके सच्चे अर्थमें कहते थे। उन्होंने कभी मुसलमानोंकी विभाजनकी मांगको किसी भी दृष्टिसे स्वीकार करने योग्य नहीं माना। और जब हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंसे अलग करनेके सरकारी ढंगके विच्छेदक कदमके विरुद्ध उन्होंने प्राणोंकी बाजी लगा दी थी, वैसा ही भारत-माताके जिस विच्छेदके बारेमें भी उन्होंने किया होता, क्योंकि यह विच्छेद उन्हें पापसे भी बढ़कर लगता था। पाकिस्तानके विरुद्ध अपनी लड़ाईके लिए उन्होंने प्रथम आशीर्वादका कदम प्रजा द्वारा आरंभ शुरू करानेके लिए अपने रास्ते पर भी कर लिया था। जिस आशीर्वादके कदमके बाद उनका पाकिस्तानके विरुद्ध सीधा — अंतिम कदम भी जरूर आता और उस अवसर सच्चे सत्याग्रही धर्म-पुरुषके बल पर ही बड़ा हुआ तब पाकिस्तानके विरुद्ध छेड़ा जानेवाला युद्ध भी सफलता पूर्वक पूरा हुआ होता — और शायद सब साधन अमन बहुत जल्दी पूरा होता। परन्तु अंग्रेजोंके विरुद्ध सशस्त्र युद्ध करनेमें जो लाचारी प्रजाने महसूस की थी वह मुसलमानोंके विरुद्ध लड़नेमें अब दिखाई नहीं दी। इसीलिए पाकिस्तानके

विरुद्ध अहिंसक युद्धमें गांधीजीका अनुसरण करनेमें वह आनाकानी करने लगा। फिर भी वह कांग्रेस अपनी ओरसे अपने मार्ग पर और आगे निर्भय साहसपूर्वक अग्रसर होता रहा और अुस पर कायम रहता ही रहा। परन्तु मुसलमानोंका सशस्त्र विरोधक जब भी प्रगट करता उसकी अधिकारियोंसे हम लोग अुनके युद्धके ही मार्गसे appeasement — मुसलमानोंको हर तरह खुश रखनेका काम ही माना गया और अन्तमें हमने अपनी हत्या करके ही दम लिया। परन्तु जो सिद्धि प्राप्त करने गांधीजी दलबाद मजहबी विरोधको कभी जड़से और अुपायोंसे स्थायी नहीं होकर भी शान्ति स्थापित नहीं हो सकती — यह पाठ हम पूरापूर्ण अपना नजरसे सामने होना पड़ेगा। महात्मा गांधीजीकी भी मानना रहा था कि भले ही पूरा बाद गांधीजीका सारा प्रयत्न विरुद्ध सफल रूपमें पार स्थायी हुआ और इस लड़ाईसे सदैव जीवनमें विश्वास रखते रहे हैं।

गांधीजीकी जेल-यात्राअें

१ दक्षिण अफ्रीकामें

१९०८ जनवरी १० ट्रान्सवालके हत्यारे कानूनके नामसे प्रसिद्ध और एशियाई दफ्तरमें प्रत्येक भारतीयको अपना नाम दर्ज कराकर परवाना लेनेकी बातसे सम्बन्धित कानूनके विरुद्ध किये गये सत्याग्रहमें जोहानिसबर्गमें पकड़े गये। दो मासकी सादी कैदकी सजा हुई। सरकार द्वारा समझौतेकी शर्तें पेश करने पर २० दिन बाद ३० जनवरीको छूटे।

१९०८ अक्तूबर १६ सरकारके विश्वासघात करने पर फिर सत्याग्रह शुरू हुआ। अुसमें गांधीजी ७ सितम्बरको वॉक्सरस्टमें पकड़े गये और अुन्हें दो महीनेकी सख्त कैदकी सजा हुई। सजा पूरी करके १३ दिसम्बरको छूटे।

१९०९ जनवरी १५ ट्रान्सवाल अधिप्रवास अधिनियमका भंग करके नेटालसे ट्रान्सवाल जाते हुए वॉक्सरस्टमें पकड़े गये। तीन मासकी सजा हुई। २४ मईको छूटे।

१९१३ नवम्बर ६ नये अधिप्रवास बिलके विरुद्ध हड़तालियोंके साथ ट्रान्सवालमें प्रवेश करते हुए पामफर्डमें पकड़े गये। जमानत पर छोड़े गये।

नवम्बर ८ स्ण्डटनमें फिर पकड गय। फिर नमानत पर छाड गय।

नवम्बर ९ टावयय नामक स्थान पर फिर पक गय और मुकमा चलानव ल्ज्ञि डडी े जाय गय।

नवम्बर ११ डडामें ९ महानका सम्न क्का सजा हुअी।

नवम्बर १७ दूसरी धाराके मातहत वाक्सम्में और तान महानका मस्न कका सजा हुअी।

सरकारल ममझौनकी बातचीत कक लिज १८ न्सि म्बरका छाड न्यिा।

२ भारतमें

१९१७ अप्रल १७ चम्पारनमें जाचक न्अि गय थ। वहा मातहारा जिल छोडनका सरकारा नान्मि मिल न मानन पर मुकदमा चलाया गया परन्तु सजा दनक बजाय सरकारन बादमें मुकमा वापस ल लिया।

१९१९ अप्रल १० राष्ट्राय सप्ताहक मिलसिलमें लागाकी अत्तजनाका शान्त करनक लिअ पजाब जाते हुअ दिल्लाक नजदाक कासाक पास पकडे गय। परिणाम-स्वरूप लागामें अधिक अुत्तजना फलन पर बम्बअी लाकर छाड न्यि गय।

१९२२ माच १० 'यग अिडिया' पत्रमें लिख गय तान लखाक लिअ राजद्रोहक अभियागमें पकडकर छह वषकी सादी कदका सजा दी गआ।

यरवडा जलमें अपण्डिसाअिटिसका तकलाफ हा जान पर ५ फरवरी १९२४ का छाड न्यि गय।

१९३० माच १२ १२ माच १९३० का दाडी-कूच शुरू का और दाडामें नमक-कानून ताडा, परन्तु पकड नहा गय। बादमें धरसानाके नमककी तरफ जानसे पहले ता० ५ मअीका रातके समय कराडीमें अुह १८२७ क रग्युलशन २५ क मातहत पकड कर मुकदमा चलाय बिना ५ मअीका यरवडा जलमें बन्द कर न्यिा गया।

गाधी-अिर्विन-समझौतका बातचीतक लिअ २६ जनवरा १९३१ का छाड गय।

१९३२ जनवरी ४ ३१ दिसम्बर १९३१ को फिर सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू हो गअी। ४ जनवरी १९३२ को सरकारने गांधीजीको बम्बअीमें १८१८ के रेग्युलेशन ३ के मातहत पकड़ कर मुकदमा चलाये बिना यरवडा जेलमें बन्द कर दिये गये।

८ मअी १९३३ को २१ दिनका हरिजन अुपवास शुरू करने पर सरकारने अुन्हें छोड़ दिया।

१९३३ जुलाअी ३१ व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू करने पर पकड़कर यरवडामें चार दिन स्थानबद्ध रख जानेके बाद ४ अगस्तको नियन्त्रणके साथ छोड़ दिये गये।

१९३३ अगस्त ४ परन्तु गांधीजीने अुन नियन्त्रणोंका अुसी दिन सविनय भंग किया जिससे अुन्हें पकड़ कर अेक सालकी सजा देकर यरवडा जेलमें बन्द कर दिया गया।

अिस बार मजदूरोंके साम्प्रदायिक निर्णयके सिलसिलेमें अुपवास शुरू करने पर अुन्हें २३ अगस्तको छोड़ दिया गया। परन्तु गांधीजीने सजाका समय पूरा होने तक अर्थात् ४ अगस्त १९३४ तक केवल अस्पृश्यता विरोधी काम करनेका ही निर्णय किया।

१९४२ अगस्त ९ भारत छोड़ो आन्दोलनके सिलसिलेमें बम्बअीमें पकड़कर भारत रक्षा कानूनकी २६ वीं धाराके अनुसार आगाखां महलमें नजरबन्द रखे गये।

६ मअी १९४४ को बीमारीके कारण जिन्दगी खतरेमें मानकर सरकारने अुन्हें छोड़ दिया।

गांधीजीके अुपवास

१९१३ फीनिक्स — आश्रमके दो साथियोंके दोषके सिलसिलेमें प्रायश्चित्त स्वरूप अेक सप्ताहका अुपवास। बादमें भी साढ़े चार मास तक अेक ही समय भोजन किया।

१९१४ फीनिक्स — असे ही कारणोंसे १४ दिनका अुपवास।

१९१८ अहमदाबाद — (मार्च १२) अहमदाबादके मिल-मजदूर समझौता होने तक अपनी हड़ताल चालू न रखें अथवा मिलका कामकाज

हमेशाके लिअे छोड़ न दे तब तक अुनका स्पर्श न करनेकी प्रतिज्ञा। ३ दिनके अुपवासके बाद समझौता हो गया।

१९१९ साबरमती — (अप्रैल १) नडियादमें रेलकी पटरी अुखाड़नेके प्रयत्नके प्रायश्चित्त-स्वरूप तीन दिनका अुपवास। लोगोंसे अिस प्रकारका अेक दिनका अुपवास करनेको कहा। अपराध करनेवालोंसे स्वयं हाजिर हो जानेको कहा था।

१९२१ बम्बअी — (नवम्बर १९) पांच दिनका अुपवास प्रिन्स ऑफ वेल्सके आगमनके मौके पर हुअे दंगोंके सिलसिलेमें प्रायश्चित्तके रूपमें।

१९२२ बारडोली — (फरवरीके दूसरे सप्ताहमें) चौरीचौराके हत्याकाण्डके सिलसिलेमें पांच दिनका अुपवास।

१९२४ दिल्ली — (सितंबर १८) कोहाटके हिन्दू-मुस्लिम दंगोंके बाद हिन्दू मुस्लिम अेकताके लिअे २१ दिनका अुपवास।

१९२५ साबरमती — (नवम्बर २४) आश्रमके साथियोंकी भूलके सिलसिलेमें सात दिनका अुपवास।

१९३२ यरवडा जेल — (सितंबर २० से आगे) मैकडॉनाल्डके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध आमरण अुपवास। २६ सितम्बरको शामके पांच बजे सरकारके बदले हुअे निर्णयकी जानकारी कराअे जाने पर अुपवास छोड़ दिया।

१९३२ यरवडा जेल — (दिसम्बर ३) अप्पासाहब पटवर्धनको जेलमें मांगा हुआ सफाईका काम न मिलने पर अुनके अुपवासकी सहानुभूतिमें अुपवास। दो दिनमें आश्वासन मिलने पर अुपवास छोड़ा।

१९३३ यरवडा जेल — (मअी ८) २१ दिनका हरिजन अुपवास। सरकारने अुसी दिन गांधीजीको जेलसे छोड़ दिया था। अुपवासकी पूर्णाहुति पूनामें 'पर्णकुटी' नामक स्थान पर २९ मअीको हुई थी।

१९३३ यरवडा जेल — (अगस्त १६) सजाके दरम्यान पहले मिलनेवाली सुविधाअें सरकार द्वारा बन्द कर देने पर जेलमें से हरिजन कार्यका संचालन करनेकी छूट प्राप्त करनेके लिअे अुपवास शुरू किया। २० अगस्तको अुन्हें कैदीके रूपमें ही ससून अस्पतालमें हटा लिया गया। परन्तु २३ अगस्तको अुनकी स्थिति गंभीर होने पर अुन्हें बिना शर्त छोड़ दिया गया।

१९३४ जुलाई — हरिजन आन्दोलनके अेक विरोधीका हरिजन आन्दोलनके अेक प्रचारकके साथ मार पीट करने पर गांधीजीने प्रायश्चित्तके रूपमें सात दिनका अपवास किया।

१९३९ राजकोट — (मार्च ३ शामको) राजकोटके ठाकुर साहबने प्रजाको दिये हुअे गंभीर वचनका भंग किया, अिस कारण अपवास। वाअिसराय द्वारा मॉरिस ग्वायरको पंच बनाने पर ७ मार्चको दोपहरके २-२० बजे अपवास छोड़ा।

१९४३ आगाखाँ महल — (फरवरी १० शामको) तीन हफ्तोंका अपवास सरकारी आरोपोंके विरुद्ध।

१९४७ कलकत्ता — (सितंबर १) कलकत्तेमें साम्प्रदायिक अेकताके लिअे अपवास। ७३ घण्टे बाद शहरमें सम्पूर्ण शान्तिका अेक दिन बीतने पर और सब जातियोंके लोगों द्वारा अपने अपने हथियार गांधीजीके सामने पेश करना शुरू करने पर तथा शान्तिका आश्वासन देने पर अपवास छोड़ा। (सितंबर ४)

१९४८ नअी दिल्ली — (जनवरी १३) साम्प्रदायिक अेकताके लिअे अनिश्चित अवधिका अपवास। १८ जनवरीको सब जातियोंके १३ नेताओं द्वारा साम्प्रदायिक अेकताके लिअे भरसक प्रयत्नकी प्रतिज्ञा करने पर अपवास छोड़ा।

जेल और अपवासकी ये सब यातनाअें अथवा तपश्चर्याअें अिस महापुरुषने सहन करके जो सफलताअें प्राप्त की हैं, जो आन्दोलन जगाया है, लोगोंके हृदय जिस तरह हिलाये हैं, अन सबके प्रतापसे आज हिन्दुस्तान अथवा यों कहिये कि बहुत हद तक सारी दुनिया शान्ति और स्वतंत्रताके दर्शनोंका अनोखा लाभ ले रही है। अनकी अिन सब यातनाओंका यह विवरण अन महापुरुषके प्रति और अनके दिये हुअे अमूल्य अुत्तराधिकारके प्रति हमारी जिम्मेदारीको याद सदा कायम रखे यही कामना है।

फरवरी १९४८ — गोपालदास पटेल

१०

सरदार और जवाहरलाल

गांधीजीने अेक अवसर पर अपने व्यक्तित्वका वर्णन अिन शब्दोंमें किया था : “मैं प्रत्यक्ष व्यवहार-कुशल आदर्शवादी हूं।” केवल आदर्शका गगन विहार कवि, कलाकार और नीतिवादी या शायद सिनिक — मनोमन आत्मचिन्तनमें देखनेको मिल सकता है। अिस वर्गके लोग कदाचित् अपने आदर्शको विचार अथवा आचरणकी भाषामें या मानव-जीवनकी मर्यादाओंमें नहीं करते या कर सकते। कौन जाने अिसके पीछे क्या रहस्य है! गांधीजीकी अेक बड़ी विशेषता यह थी कि वे आदर्शका ध्यान जीवनमें अुसका प्रयोग करके देखनेके हेतुसे करते और रखते थे। अिसीलिअे वे प्रयोगको क्षणभर भी भूल नहीं सकते थे और न भूलना चाहते थे। वे अितने सालतक अेक पूरी पीढ़ी जितने लम्बे समय तक अद्वितीय पितृतुल्य नेता रह सके, अिसका भी यही कारण था। व्यवहार और गगन विहार, वस्तुस्थिति और आदर्श, तात्कालिक सफलता और दूरदर्शी विजय — ये द्वन्द्व असे हैं जिनका आम तौर पर आपसमें मेल बैठाना कठिन है। ये द्वंद्व अुनमें अेकसाथ गुंथे हुअे थे। वे केवल व्यावहारिक बनकर नहीं, परन्तु आदर्शसे प्रेरित होकर अिस व्यवहारमें पड़े और अिसलिअे आदर्श व्यवहारकार बन गये थे।

ये दो गुण यथासंभव अलग होकर मानो मूर्तिमान बन गये हों, अिस प्रकार गांधीजीके समर्थ दो बड़े साथियोंमें देखनेको मिलते हैं। पंडित जवाहरलाल और सरदार वल्लभभाअी गांधीजी द्वारा भारतको अखंड स्वाधीनताके लिअे तैयार करनेकी हुअी अिन दो गुणोंकी अनुपम जोड़ी हैं। भारतमें गांधीजीके पास विविध कार्योंकी आवश्यकतावाले क्षेत्र मौजूद थे। अुग्र और अशांतिके कारण स्वभावतः गगन विहारकी प्रभामें बहनेवाला युवक-वर्ग और व्यवहार तथा दुनियादारीके सयानेपनके कारण स्वभावतः केवल व्यवहारदर्शी बननेवाले प्रत्यक्ष बल — अिन दोनोंको भारतकी आजादीकी सेवामें गांधीजीको अुपयोग करना था। अेकको केवल गगन विहारकी तालीम कर्मभूमि पर कायदेसे करना था, तो दूसरेको केवल अवसरवादी या येन-केन प्रकारेण काम बनानेकी कगार(?) जड़तासे बाहर निकालकर और नम्र बनाकर अुसकी अतुल शक्तिका

व्यापक समाजमें माहना था। यह काम गांधीजीने अिन दो गुणोंके मूर्तिमान प्रतिनिधि पंडितजी और सरदारको समान रूपसे आगे रखकर किया। यह जोड़ी आज स्वतंत्र भारतका भविष्य निर्माण कर रही है — जिसीलिअे स्वराज्य अुन्हें सत्ताकी बागडोर सौंपी है।

अिन दोनोंके जन्मदिन पन्द्रह दिनके अन्तरसे अभी अभी देशभरमें मनाये गये — सरदारका जन्मदिन ता० ३१-१०-४८ को और पंडितजीका ता० १४-११-४८ को। देशने जिस प्रेम, आदरभाव और अुत्साहसे ये दिन मनाये, वह भारतके अिन दो महारथियोंके प्रति प्रजाकी कृतज्ञता प्रदर्शित करता है।

पंडित जवाहरलालजी अपने रहन-सहन और शिक्षा-दीक्षासे अंग्रेज स्वभावके हैं। भारतमाताकी मिट्टीसे बना हुआ शरीर और अुसकी आत्मा यदि भारतमें जन्म लेकर भी जाग्रत न होती, तो पंडितजी अपनी शिक्षाके दबावसे अंग्रेज सामन्त या अमरावके पक्षका नामी नवाबी ढंगसे जीवन बिताते। अिसके बजाय अुन्होंने भारतके गरीबोंके सेवक बननेका प्रयत्न किया, जिसके दो कारण बताये जा सकते हैं — अुनकी भारतीय आत्मा और गांधीजीका गुरुपद। अुनकी अेक पुस्तकका नाम अुन्होंने 'डिस्कवरी आफ अिंडिया' रखा है। अुसमें यह भाव साफ नजर आता है। भारतके सच्चे स्वरूपका, अुसकी संस्कृतिका और गौरव-गरिमाका जो साक्षात्कार अुन्हें हुआ, अुसका आनन्द अिस पुस्तकमें व्यक्त होता है। यह वस्तु जवाहरलालजीको अुनकी विलायती शिक्षाने नहीं बताओ, बल्कि अिस वस्तुसे भिन्न दूसरी ही बातें अुनकी विलायती शिक्षाने अुन्हें आत्मसात् कर लिया। फिर भी वे अपनी सच्ची आत्माको पहचान सके। अिसी प्रतीतिका अुन्होंने 'भारतका साक्षात्कार' — 'डिस्कवरी आफ अिंडिया' — कहकर वर्णन किया है, असा मेरा खयाल है।

अुपरोक्त शिक्षाने अुन्हें आदर्शके रूपमें यूरोपीय समाजवाद सिखाया। अिस शिक्षाके कारण आज भी जब वे यूरोपमें जाते होंगे, तब अुन्हें वहां अकेलापन या परायापन शायद ही लगता होगा। परन्तु गांधीजीके सान्निध्यमें रहते हुअे और साथ काम करते हुअे जैसे अुन्होंने यह सीखा कि स्वदेशाभिमान ही काफी नहीं है, अुसके साथ मानवताका अभिमान भी चाहिये, वैसे ही अुन्होंने यह भी सीखा कि सिर्फ समाजवाद ही काफी नहीं है, अुससे आगे बढ़कर गांधीजीका सर्वोदयवाद और शान्तिवाद भी होना चाहिये।

अिस कारणसे वे समाजवादी होते हुअे भी गांधीजीके साथ रहकर आगे बढ़ सके और भारतकी तथाकथित समाजवादी पार्टी अुन्हें अपने अेक सहयोगी पक्षकारके रूपमें प्राप्त करनेमें असफल रही। आजकलके 'समाजवादी' नेताओंकी पंक्तिमें जवाहरलालजीकी कल्पना नहीं की जा सकती, अिसका कारण यह है कि अुनके व्यक्तित्वको गांधीजीने अेक विशेष रूप दिया और तालीमके जरिये अुसका विकास करके अुसे अपना राजनीतिक अुत्तराधिकार सम्हालनेके योग्य और सुन्दर बनाया। समाजवादी पार्टीने जवाहरलालजीको जमकर खो दिया, जिसमें अुस पार्टीकी भी अतिनामिन कामनाका अन्दाजा लग जाता है। जवाहरलालजीमें अैसा व्यक्तित्व बल था कि वे अुस पार्टीके निरे अवास्तविक और अस्पष्ट हुअे मानसके शिकार नहीं बन सकते थे। अिस असफलताजन्य मानसमें जवाहरलालजीकी आत्मा आच्छादित होकर पता नहीं किस दिशामें मुड़कर मुक्ति पाती। भारतके लिअे यह अेक बड़ी आफत ही होती। परन्तु पंडितजीका मानस और प्रतिभा अुससे अधिक बलवान और अधिक तेजस्वी थी। और यह चीज आज सिद्ध हो चुकी है जिसे सभी देख सकते हैं। भगवान करे अुनके तेज और अुनकी शक्तिका लाभ भारतको और जगतको दीर्घ काल तक मिलता रहे।

सरदार वल्लभभाअीकी प्रतिभा और अुनका व्यक्तित्व अिससे भिन्न स्वरूपके हैं। वे धरतीके हैं और धरतीकी तरह अचल अटल हैं। स्थिर भूमि और भूमिका पर पैर जमाये बिना वे किसी बातमें न तो स्वयं हाथ डालते हैं और न अन्य किसीको डालने देते हैं। जिस काममें वे पड़ें अुसमें गहरे अुतर जानेकी अुनकी कलाका मूल अुनके स्वभावकी अुपरोक्त विशेषतामें है। यह बात अुन्हें किसीसे सीखनी नहीं पड़ी।

यह कौन नहीं मानता कि मनुष्यका और वस्तु या घटनाका मूल्यांकन करते रहना चाहिये? परन्तु अैसा कर सकनेवाले विरले ही लोग होते हैं। जिसके लिअे वास्तविकताओंका रंग बिरंगा दर्शन और अुलझनोंमें काम दे सकनेवाली पारदर्शी दृष्टि चाहिये। यह अेक विरल मानव-शक्ति है। गहन विचार, पांडित्य, अति आत्मवाद अित्यादिसे भी यह दृष्टि धुंधली हो सकती है। दृष्टिका यह कमाल मुत्सद्दीगिरी, राजनीति और व्यवहारमें बड़ा काम देती है। यह शक्ति सरदार साहबमें सहज ही देखनेको मिलती है। अिसी दृष्टिसे अुन्होंने गांधीजीको और अुनके कार्योंको भी देखा और अुनका मूल्यांकन

१२

कुशल व्यूहकार माअुण्टबेटन

जमानेका खेल पलटता हो तो अुसका लिहाज करता है कि अेक बार हाथमें लिया कि अुसे पलटकर ही छोड़ना चाहिये। फिर अुसमें न कष्ट लगें या बाजार घट लगें, क्योंकि बादमें अेक जाय तो बाकी भी साथ ही अेक जाता है। कुछ अिसी न्यायसे लॉर्ड माअुण्टबेटनने भारतकी ब्रिटिश राजनीतिक समस्या हल की, जैसा अब कहा जा सकता है। राज्यका विभाजन असलमें देखें तो जमानेका ही खेल हुआ न? अलबत्ता अिसका माअुण्टबेटनको बधाअी दी जा रही है। अिसमें असली मुद्दा तो यही माना जायगा कि भारतकी राजनीतिक शतरंज पर मोहरा चाल चला जाय जिससे ब्रिटिश सरकारका सोचा हुआ दाव सफल हो सके — अिस चालको अिस कुशल नौसेनानीने समझ लिया और अपनी कुशलताका अुसमें पूरा अुपयोग किया। वरना भारतकी समस्या कम हल की जाय यह तो पार्लियामेण्टकी सरकारने ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंने निश्चित ही कर लिया था। यह काम बाकी माअुण्टबेटनके सिर पर रहा था।

पाठकोंको पता होगा कि जिन्ना साहबकी नीतिका अेक अंग हमेशा यह होता था कि कोअी बात सामने आये तब पहले तो अुसे अेक धक्का लगा दिया जाय और बादमें प्रतीक्षा की जाय। अिस बीच कांग्रेसका रुख मालूम हो जाता और अपने मित्रोंसे बातचीत करना हो तो अुसका भी मौका मिल जाता। और खास बात तो यह थी कि वे सब अपना दाव सोच सकते थे। ३ जून १९४७ को जब माअुण्टबेटनने नअी योजना पेश की तब भी यह दाव चलानेकी जिन्ना साहबने कोशिश की थी। परन्तु अिसमें अुन्हें सफल नहीं होने दिया गया क्योंकि जमानेका रुख माअुण्टबेटन दूसरी तरह पेश नहीं आ सकते थे। अिसीलिअे अिनकी योजनामें पहले जो जून १९४८ की तारीख थी वह पीछे हटकर अेकदम १५ अगस्त १९४७ के रूपमें सामने आअी। और तारीख अितनी पीछे हट जाने पर अुन्होंने अेक सैनिकके ढंगसे अवसरके योग्य काम करनेकी जो कुशलता और व्यूहरचना दिखाअी अुसके लिअे वे सचमुच बधाअीके पात्र हैं।

अगस्त १९४७

१३

धर्मवार देश और भाषावार प्रान्त

१

पाठकोंको अिस शीर्षकसे आश्चर्य होगा। वे सोचेंगे : धर्मवार देश क्या? अिसमें तो हमारा विश्वास नहीं है। और अिस बातका भाषावार प्रान्तके साथ क्या जोड़ा जाता है? भाषावार प्रान्त तो ठीक है, परन्तु धर्मवार देश ठीक नहीं। और अुसका भाषावार प्रान्तके साथ क्या वास्ता?

आपत्ति ठीक है। परन्तु अिसका अेक दूसरा पहलू भी है। धर्मवार देश या राष्ट्रकी नीति ठीक नहीं, अैसा हम कहते तो जरूर हैं, परन्तु हमारी वृत्ति और मानस देखें तो सचमुच क्या मालूम होता है? जाने अनजाने भी अन्तमें धर्मवार देश ही अलग हो जाय, क्या अैसी वृत्ति या मनोदशा हमारी जनतामें नहीं पाअी जाती? यह बात सही है कि अिस बारेमें बात चले तो हम वढिम अुसे पसन्द नहीं करते, परन्तु हमारे हृदयका भाव अैसा नहीं है।

और भाषावार प्रान्त? अिस सम्बन्धमें हमने कुछ वर्षोंसे आन्दोलनके तौर पर अेक भावनाका सृजन किया है। अुसे हम अमलमें भी लाना चाहते हैं, परंतु अैसा करनेमें तरह-तरहके सवाल पैदा होते हैं, बड़ी बड़ी झंझटें खड़ी होती हैं और यह तो शायद ही कोअी कह सके कि अैसा करनेमें प्रान्तोंके बीच कलह और झगड़े पैदा नहीं होंगे।

अर्थात् धर्मवार देशका हमारी बुद्धि तो विरोध करती है, परंतु हृदयकी भावना दूसरी है। अिसलिअे अमलमें वही प्रकट होती है। और भाषावार प्रान्तके लिअे मनकी वृत्ति तो तैयार होती है, परन्तु अुसको अमल करनेमें बड़ी बाधाअें खड़ी होती हैं जो हमारी ही मनोभावनाओंकी अुपज हैं। अिसलिअे अिस लेखके शीर्षकमें अैसा विचित्र समन्वय दीखे तब जरूर दोनों प्रश्नोंको जोड़ा गया है और यह समस्या भारतके वर्तमान प्रश्नोंकी ही समस्या है, अैसा कहें तो कोअी आपत्ति नहीं अुठाअी जा सकती।

२

नीचेके अवतरणमें पैदा हुई दो विरोधी स्थितियाँ स्पष्टताकी यात्राके लिए जिस लेखमें अेक और बातकी ओर भी ध्यान जाता है। धर्मवादी राज्य पाकिस्तानका आदर्श है। अुस देशका भाषावार प्रान्तोंकी ओर ध्यान नहीं है। शायद वह तो सारे पाकिस्तानमें अेक ही भाषा चलानेका निश्चय करेगा। वहाँ अपनी भाषाओंको अेक मुख्य भाषा मानकर पाकिस्तानको पाकिस्तानसे अेक अलग प्रान्तका पद देनेसे क्या लाभ होगा?

धर्मवादी देशके आदर्शको अपनाने पर भी पाकिस्तान कहता तो यह है कि विधर्मी प्रजाजन भी पाकिस्तानके नागरिक रह सकेंगे। और कायदे आजम जिन्नाने अपने अेक वक्तव्यमें पूनाके प्रोफेसर गाडगिलका हवाला देकर कहा है कि असा होना कोअी विचित्र बात नहीं। प्रोफेसर गाडगिलके मत जिन्ना साहब अिस प्रकार अद्धृत करते हैं:

> डाक्टर डी० आर० गाडगिल जैसे प्रखर अध्यापक अपने ९ अक्तूबर १९४७ के वक्तव्यमें कहते हैं कि नये भारतीय यूनियनको हिन्दू राज्य अथवा अधिक अच्छी तरह कहें तो हिन्दू राष्ट्रीय राज्योंका संघ कहना ही अुसका सच्चा वर्णन है। वे कहते हैं कि भारतीय यूनियनको हिन्दू राज्य कहनेसे ही अुसका मुख्य और सबसे सूचक लक्षण व्यक्त होता है। वे आगे बताते हैं कि अिसका यह अर्थ नहीं कि भारतीय यूनियनके प्रदेशोंमें हिन्दू-परम्पराके बाहरके लोगोंके लिअे स्थान नहीं होगा और अुनके प्रति भेदभाव रखा जायगा।

अर्थात् जिन्ना साहब यह कहते हैं कि धर्मवादी देशका आदर्श मेरा ही नहीं है, भारतीय यूनियनका भी यही आदर्श है। और अिसमें मुख्यतः सिद्धान्तकी दृष्टिसे कोअी दोष नहीं, क्योंकि विधर्मी अल्पमत भी धर्मवादी देशके तंत्रमें रह सकते हैं।

अिस बारेमें वस्तुतः अुनका मुख्य आशय अितना ही मालूम होता है कि दोनों नये राज्य अिस आदर्श पर चलें, क्योंकि अुनके मतानुसार क्या वे अिसी लगनसे अुत्पन्न नहीं हुअे हैं? असा हो तो वे भारतीय यूनियनको हमेशा तंग कर सकते हैं और अपने देशसे तो गैर मुस्लिमोंको लगभग निकाल ही बाहर कर देंगे। बादमें पाकिस्तानी धाकधमकी मचाते रहनेके लिअे सुविधापूर्ण सिद्धान्त यही बन जायगा कि यूनियनमें जो मुसलमान हैं अुनके लिअे

पाकिस्तान सरकार जिम्मेदार रहेगी। जिस प्रकार यदि सिद्धान्त रूपसे व्यवस्था हो जाय तो सदाके लिअे भारतको सताते रह सकते हैं जैसी कि मुस्लिम लीगकी अब तककी नीति रही है। भारतीय यूनियन हिन्दू राज्य है यह स्वीकार कर लिया जाय तो यह बात आसान हो जाय। अिस प्रकार पाकिस्तान अपना आदर्श दूसरों पर भी थोप देना चाहता है और अिसमें श्री गाडगिल जैसोंके विचार वांछित सहायता देते हैं। अस्तु।

३

अब भाषावार प्रान्तके सिद्धान्तका विचार करें तो अुसे भारतीय यूनियन अपना आदर्श मानता है। परन्तु अुसके अमलमें वह जल्दी कदम नहीं अुठा सकता। अैसा करनेमें अनेक विघ्न आते हैं।

जिस प्रकार दीपकके दो आदर्श अैसे हैं मानो भारतके दो टुकड़ोंकी परछाअीं जिनमें भी पड़ी हो। पहला आदर्श पाकिस्तानने चलाया, दूसरा आदर्श कांग्रेस अपने सामने रखती है। पहला आदर्श भारतीय यूनियनके सरपे मढ़नेकी पाकिस्तान कोशिश करता है, दूसरा आदर्श स्वाभाविक होनेके कारण पाकिस्तानको तंग करता है, वह सोचता है अिसका क्या किया जाय? पहला आदर्श भारतमें अनेक सालोंसे जो संस्कृति और राज्य-व्यवस्था विकसित होती आ रही है अुसके विरुद्ध है, जब कि अिस्लामके तो धर्म प्रधान राज्यकी शिक्षा और कौमी व्यवस्था समझमें ही नहीं आती। और श्री जिन्नाने जिस ढंगसे पाकिस्तान हासिल किया है अुसे देखते हुअे फासिस्ट ढंगसे काम किये बिना अुनका छुटकारा ही नहीं है। भारत अुसके बिलकुल विरुद्ध है।

४

बात यह है कि किसी विशेष जाति या राष्ट्रका निर्माण धर्म, भाषा, जाति, प्रदेश, भूगोल आदि अनेक प्रकारके तत्त्वोंको अेकसाथ लेकर होता है। यह अेक अैतिहासिक विकास है। किसी भी अेक तत्त्वके आधार पर राष्ट्र पैदा नहीं होता, वह अेक समूह भावनाका परिणाम होता है, और वह भावना अुन पुरुषार्थोंसे अुत्पन्न और पुष्ट होती है जो किसी प्रदेशमें रहनेवाले लोग अपने समूह-जीवनमें साथ रहकर करते हैं। अुस समूह-जीवनको बल और प्रेरणा देनेवाले अुपरोक्त सारे तत्त्व अेक प्रदेशमें साथ रहकर समाज-जीवन

निर्माण करनेमें सम्प्रदाय दृष्टि बन्द पर अेक-दूसरेके साथ आचार करके राष्ट्र भावना निर्माण करते हैं। अिसलिअ भिन्न धर्मोंमें से किसी अेकको अलग करके या मुख्य मानकर काम किया जाय तो राष्ट्रके स्वाभाविक निर्माण पर अत्याचार होता है। मनुष्य समाजमें असा अत्याचार हो सकता है जिसका कारण यह है कि समाजमें कोअी प्रबल मनुष्य पैदा हो जाता है तो वह अस समाजकी भावनाको अपने समर्थनके लिअे तो मायाजालका शान? अपनी बना सकता है। असा काम मि० जिन्नाने भारतीय राष्ट्रके मुसलमानोंमें किया है। परिणामस्वरूप कांग्रेसकी कल्पनाकी भारतीय स्वराज्यकी अेक क्रान्तिमें से दो क्रान्तियां अुत्पन्न हो गअीं। अेक वह जिसे कांग्रेसने गाया था और जिसे यूनियनमें मूर्तिमान किया जा सकेगा और दूसरी पाकिस्तानकी जिसके द्वारा हिन्दू मुसलमानोंका १८वीं शताब्दीमें पहुंचा अधूरा रहा निर्णय अितने वर्षोंके बाद फिर सजीव बन रहा है। मानो अितिहासकी सरस्वती जो कांग्रेसके कालमें अंग्रेजी राज्यके मरुस्थलमें छिप गअी थी अब फिर स्वराज्यमें प्रगट हो गअी! अिस प्रकार अंग्रेजोंने यहांसे जानेके पहले यह झगड़ा बहुत बड़े ढंगसे खड़ा कर दिया और हमें लाचार कर दिया। राजा कालस्य कारणम् अिसीका तो नाम है।

५

अब भाषावार प्रान्तकी बातको देखें। राष्ट्रको बनानेमें आवश्यक होनेवाले अनेक तत्त्वोंमें भाषा धर्मकी तरह अेक सांस्कृतिक बल है, परन्तु यह प्रायः प्रान्तिक होता है। धर्म असा हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। धर्मके जातिके अनेक भेद होने पर भी भाषा अुन सबमें अेकरूप होती है। मतलब यह कि भाषाका तत्त्व अुन सबमें प्रधान और समावेशक तत्त्व होता है।

प्रत्येक देशमें प्रबन्धकी दृष्टिसे असे कुछ विभाग करनेकी जरूरत होती है। जैसे विभाग अंग्रेज शासक जैसे जैसे अनका राज्य बढ़ता गया वैसे-वैसे अपने कब्जेमें रखनेके लिअे करते गये। अिस कारण अुसमें पूर्व अितिहासकी कुछ प्रादेशिक व्यवस्था तो आअी परन्तु और कुछ नहीं हुआ।

अंग्रेजोंके कालमें चालू हुअी यह व्यवस्था स्वराज्यमें अनुकूल नहीं हो सकती। अुसमें भी देशी राज्योंके समावेशका सवाल बहुत बड़ा है। अतः अिस बड़े प्रश्नका क्या किया जाय? कांग्रेसने बरसोंसे भाषावार प्रान्तकी जो

कल्पना अपने सामने रखी है वह अब वास्तवमें अनर्थकी कोशिश कर रहा है।

अिसमें भयस्थान स्पष्ट हैं पहला तो यह कि कुछ लोग अैसा मान कर चलते हैं मानो भाषा ही प्रान्तका नक्शा बनानेमें अेकमात्र मुख्य वस्तु हो*। *अिसके परिणाम-स्वरूप मौजूदा प्रान्त तथा देशी राज्योंमें मिले हुअे* झगड़े खड़े हो सकते हैं। भाषाकी शिक्षाका अेक अैसा काम है जिसके लिअे भाषावार प्रदेश अुत्तम सुविधा बन सकता है। परन्तु यह हो सकता है कि वहां प्रदेश आर्थिक औद्योगिक राजनीतिक तथा शासनिक दृष्टिसे सम्पन्न न भी हो। अिसलिअे अेक प्रदेशकी शिक्षण-व्यवस्था अेक ही भाषावार

* महाराष्ट्रमें प्रो० डी० आर० गाडगिल अैसा राय फैलाते हैं। अुन्होंने यह कल्पना की कि भारत अेक बड़ा संघराज्य है अुसके घटक भाषावार प्रान्तीय राज्य हैं। अर्थात् अुनकी दृष्टिमें अमरीकाकी भांति भारत मानो भाषावार राज्योंका समूह राज्य हो और सत्ता मानो अिन घटक राज्योंमें हो। अिसलिअे तब अिस तरह माग की कि प्रत्येक राज्यमें अुसकी खुद भाषा प्रदेश अिकट्ठा करके रख देना चाहिये। और अिस प्रकार भाषावार राज्य-पुनर्गठनका आन्दोलन महाराष्ट्रमें शुरू हुआ।

यह विचार वास्तवमें गलत था। अूपर श्री जिन्ना कहते हैं कि धर्मवार सर्वराज्यकी कल्पना श्री गाडगिलकी थी। अुससे मिलती जुलती दूसरी कल्पना यह भाषावार राष्ट्रीय राज्योंके संघकी मानी जायगी। दोनों अेकसी ही गलत और तथ्योंसे दूर हैं।

भारत अेक राज्यके रूपमें स्वतंत्र हुआ है। अमरीकाकी तरह राज्यों अिकट्ठे होकर कोअी सार्वभौम भारत नहीं बनाया है। अिस प्रकार भारतीय यूनियनका अेक मूल राज्य है जिसका सुगठन निश्चित हुआ है। यह अुसकी स्वतन्त्र अितिहासिक और अुसके संविधानसे भी देखा जा सकता है। अिस सार्वभौम राज्यकी राष्ट्रसभा या पार्लियामेण्ट जब चाहे तब और जैसा चाहे वैसा कानून बनाकर अुसके घटक राज्य बना सकती है और अुनमें फेरबदल कर सकती है। मतलब यह कि घटक राज्योंका मूल सार्वभौम अस्तित्व नहीं है। महाराष्ट्रमें भाषावार राष्ट्रीय प्रदेश राज्यका जो आन्दोलन अुठा वह अुपरोक्त गलतफहमीके कारण ही अुठा अैसा स्पष्ट लगता है।

१८-३-५३

—म० प्र०

हो परन्तु अगली राज्य-व्यवस्था तो कोअी भाषावार नहीं भी हो सकता। फिर भी बम्बअी शहर किस प्रान्तमें जाय अिसका विचार करते हुअे कुछ लोग अिस विवादमें पड़ गये हैं और शहरको भाषावार प्रान्तोंसे अलग रखने लगे!! अिस सबका कारण यह मान्यता है कि भाषा ही प्रान्त-रचनाका अेकमात्र निर्णायक तत्त्व है। वस्तुतः अैसा नहीं है। वह भले ही अेक दृष्टिसे रखने लायक मुख्य तत्त्व हो, परन्तु वही अेकमात्र तत्त्व नहीं हो सकता। यदि यूनियनके लिअे यह भावना बन जाय और पाकिस्तानकी साम्प्रदायिक महत्त्वाकांक्षा अलग होनेके बाद भाषावार प्रान्त बनाने पर अिसमें जबानिस्तान या प्रान्तस्तानकी लड़ाअी छिड़ जायगी।

६

भाषावार प्रान्त शिक्षाके लिअे खास तौर पर जरूरी हैं। अगर बिना शिक्षाके काममें कठिनाअी आती है यह आजकल दिखाअी दे रहा है। अिसका हल भाषावार विश्वविद्यालयोंकी स्थापना और शिक्षा-तंत्रकी पुनर्व्यवस्था है। परन्तु अंग्रेजी और अुर्दू भाषा अिसमें विचार करायेंगी। साथ माथा भी पचायेंगी। (अेक मुस्लिम-शासनकी और दूसरी अंग्रेज-शासनकी भाषाकी भेंट भारतको मिली है।)

अुर्दू कोअी गैर हिन्दुस्तानी प्रान्तकी भाषा नहीं, फिर भी अंग्रेजी राज्यने अुसे प्रारम्भिक शिक्षामें स्थान देकर मुसलमानोंमें अुसे अपनी प्रान्त-भाषा समझनेकी भावना जाग्रत कर दी है। अिसका क्या किया जाय? अिसी प्रकार कुछ लोग अंग्रेजी राज्य और अीसाअी धर्मके असरसे अंग्रेजीको अपनी भाषा मान बैठे हैं। अुनका क्या हो? यह सवाल अुनके धर्मको लागू नहीं होता। अलबत्ता डर तो रहता है कि अिसमें भी धर्मको दखल दिया जायगा। तब तो भाषावार प्रान्तका प्रश्न धर्मवार देशकी हद तक पहुँच जायगा और फिर नये स्तानकी बला पैदा हो जायगी।

७

अिस प्रकार धर्मवार देश और भाषावार प्रान्त ये दो चीजें भारतके अितिहासमें से आज खास तौर पर अूपर अुठ आअी हैं और वे अपना हल चाहती हैं। यह हल ढूँढ़ निकालनेमें सच्चे धर्मकी और भारतकी सच्ची संस्कृतिकी परीक्षा होगी। जैसे जैसी गलती करानेके लिअे जिन्ना साहब आज बड़ेसे बड़े कारण प्रस्तुत कर रहे हैं, वैसी गलती यदि हम कर

वढ़ तो अिसके लिअे भविष्य हमारी पार्टीको जिम्मेदार मानेगा। क्या यह टीका हम अपने माथे पर लगा सकेंगे? जवाब साफ है — नहीं।

२७-१०-४७

१४

लोकतंत्र या नौकरशाही

हम स्वतंत्र हो गये हैं। अिसलिअे सारा राज्य लोकतंत्रके नाम पर कहा जाता है कि जनता अब सर्वोपरि बन रही है अब देशमें प्रजाका राज्य है। बात सही है। परन्तु यह तो सिद्धान्त हुआ। व्यवहारमें क्या है? सरकारी अधिकारी ही अभी तक अपनेको सत्ताधारी मानते हैं। और जिसीको विदेशी शासनमें नौकरशाही कहा जाता था।

अिस सत्ताग्राहीके मानसका गहरा दोष भारतमें आजका नहीं है। कंपनी-सरकारके जमानेमें अंग्रेजोंने हमारी प्रजाका यह दोष देख लिया था और अिसीलिअे जिले जिलेमें कलक्टर जैसे अेक राजा या ठाकुर बिठा दिया और अस कुल सत्ता सौंपकर अपना राज्यतंत्र खड़ा किया था। आज भी यहां तंत्र चालू है क्योंकि वह सत्ताके आगे लाचार बन जानेकी लोगोंकी करुण मानसिक दशा पर रचा गया है। अिसलिअे हम लोकतंत्र लोकतंत्र तो चिल्लाते हैं, परन्तु अुस प्रकारकी राज्यप्रथाकी आदतें न तो भारतके लोगोंमें हैं, न सरकारी शासनतंत्रमें।

अिस मानसवाली नौकरशाहीको कट्टरजाति* पसंद होता है। अत स्वराज्य आ जाने पर भी तुरन्त सुधरने लगनेके बजाय सरकारी नौकर अपनी पुरानी नौकरशाही सत्ता कायम रख सका है। यही कारण है कि यह कायम होनेके बाद भी वह अपने-आप कट्टरपन छोड़नेको प्रवृत्त नहीं होता। अुलटे अैसे बयान देता है कि यदि कंट्रोल हट जायगा तो अनेक बहुत बुरे परिणाम होंगे। अिसकी अिस बातमें कुछ सचाअी होगी। परन्तु प्रश्न यह नहीं

* और कल्याणराज्य तथा समाजवादी ढंगके अनुसार बनी हुअी ये योजनाअें — पंचवर्षीय योजनाअें, यन्त्रोद्योगोंकी प्रगति करनेके विचार — भी अिस नौकरशाही या अफसरशाही पद्धतिको ही पोषण देनेवाले हैं, अितना यहां जोड़ देना ठीक होगा।

१५-७-५७ — म० दे०

है या अितना छोटा नहीं है। अगर लोकतन्त्रके ढंग पर शासनको चलाना हो तो नौकरशाहीको निरा सेवाकी अनाना है। आज यह शासनका जो साधन अगर हाथमें आ गया है अुसमें सब पर सब निरंकुश और भ्रष्टाचारमें सने हुअे नजर पड़ती रहती है। अिसके परिणाम-स्वरूप लोग सारे तन्त्रमें अविश्वास रखते हुअे आत्मीयकी भावनासे भाग रहे हैं। आजादीके बाद शासनमें अगर कुछ अन्तर हुआ हो तो यह बात है। अिससे अगर हालत न बदली तो डर है कि भारतके भीतर लोकतन्त्रका दिखावा ही रहेगा, असलमें वह जायगा और सारा वजन यानी नौकरशाही राज्य करती रहेगी और निर्वाचित मन्त्रीगण लगभग असर नामके बनकर अगर वह अनुसार सलाम करते रहेंगे। यह अत्यन्त भयंकर दशा है।

जैसे ही कुछ स्पष्ट-अस्पष्ट ढंगसे गांधीजीने कण्ट्रोल विरुद्ध जो आन्दोलन-सा छेड़ दिया है यह समझमें आने लायक है। कण्ट्रोलोंके कारण खतरेमें पड़ी हुअी साम्प्रदायिक अेकताको फिरसे स्थापित करनेका महत्त्व ज्यादा बाद यह कण्ट्रोल हटवानेका आन्दोलन अनका दूसरा अेकता का कामना सका है।

जनता पर टूट पड़नेको तैयार व्यापारी वर्ग और अनके शिकार बने हुअे गरीब लोग — दोनों अिस कण्ट्रोलको हटानेकी बात पर अेकमत हो रहे हैं अिसमें भी यही अेक कारण है। सूचक बात यह है कि सरकारी नौकर ही ज्यादातर कण्ट्रोल हटानेका विरोध करते दिखाओ देते हैं। जनता अेमर पाशमें से छूटना चाहती है यह अेक शुभ चिह्न है। परन्तु वह याद रखे कि गांधीजी ही शुभ अिस पाशसे छुड़ा सकते हैं अुसकी शर्त यह है कि वह अनका नेतृत्व स्वीकार करे। नहीं तो मौजूदा ढंगका कण्ट्रोल तो हट जायगा परन्तु लोगों पर राज्य तो मध्यमवर्गी व्यापारियों और सरकारी नौकरोंका ही कायम हो जायगा। परन्तु आम जनताको यदि सच्ची शान्ति करनी हो तो अुसे गांधीजीकी अर्थनीति पर वापस जाना चाहिये। वह अर्थनीति यह है कि खादी और ग्रामोद्योगों द्वारा अपना आलस्य मिटाकर और अुत्पादन बढ़ाकर किफायत और स्वावलम्बनके द्वारा लोगोंको अपना आर्थिक स्वराज्य प्राप्त कर लेना चाहिये। अिसी तरह लोग अपनी 'शाही' स्थापित कर सकेंगे और मन्त्रियोंको भी लोकराज्य स्थापित करनेके कार्यमें अपना आवश्यक सहयोग दे सकेंगे।

८-१२-४७

१५

राष्ट्रीय संविधानकी दो शाखायें

हमारे देशका स्वतंत्र संविधान बनाया जा रहा है जिसकी दो शाखायें हैं। अुनमें से अेक शाखाका संविधान-सभा विचार करती है।

राष्ट्रके संविधानकी अेक शाखा यह हुआ। जिस शाखाको सब लोग जानते हैं। अखबारोंमें और बाहर भी अुसकी खूब चर्चायें और विज्ञापन होते हैं। अिस कारणसे लोक-मानस पर असा असर पड़ता है मानो यही देशका संविधान तैयार करनेवाला काम है। परन्तु स्वतंत्र और लोकतांत्रिक राष्ट्रका संविधान जितनेसे पूरा नहीं हो जाता। अुसका दूसरा अंग लोकमतका निर्माण और अुसका संविधान है। लोक राज्य-संविधानका महत्व होता है परन्तु अुसकी परिपूर्ति लोकसेवाकी संस्थाओं द्वारा होती है। अुसके बिना लोकतंत्र चल नहीं सकता। अिसीलिओ संविधान-सभाके साथ कांग्रेस और दूसरे दल भी अपना नया और नवयुगके अनुरूप संविधान तैयार करनेकी कोशिश कर रहे हैं। लोक संविधानकी यह दूसरी शाखा है। और असलमें यह बड़ा कामकी है, क्योंकि अिस पर हमारे लोक निर्माणका बहुत बड़ा आधार रहता। परन्तु दुःखकी बात तो यह है कि सामान्य लोगोंके मनमें यह बात जितनी ठसी नहीं है। अिस बातका क्रान्तिकारी महत्त्व अुनकी समझमें नहीं आया है। परन्तु यह महत्त्व कितना अधिक है यह अेक छोटी किन्तु बड़ी सूचक बातका अुल्लेख करके हम बतायेंगे।

हमारे देशकी संविधान-सभाका जन्म होने तक गांधीजीने अुसके लिअे अपार परिश्रम किया तथा सतत चिन्ता और जागृति बताओ। परन्तु अुसके अच्छी तरह बन जाने पर अुन्होंने अुसमें अपना बहुत मन नहीं लगाया। अिसलिओ नहीं कि अुसका महत्व कम है, परन्तु भविष्यकी कार्यावलीके लिअे अुसमें लगनेकी जरूरत नहीं था। यहाँ तक कि राष्ट्रपिता होते हुअे भी अुन्होंने देशकी अिस चिरस्मरणीय बननेवाली सभामें जब तक युग रहा है पर तब लगनेका समय नहीं निकाला।

अब दूसरी शाखाको देखिये। कांग्रेसका नया संविधान तैयार करनेके लिअे अुन्होंने कितने अधिक दिन और घंटे दिये हैं? मरनेके दिनों तक वे अिस बारेमें चिन्तन करते रहे और कांग्रेसको मार्गदर्शन देते रहे। अन्तमें दफ्तरो जो मसविदा अुन्होंने दिया वह भी अिसी सिलसिलेमें था। अुन्होंने बताया

है या अिससे छोटा नहीं है। अगर लोकशाहीके ढंग पर सरकार चलानी हो तो नौकरशाहीको निकाल देनेकी जरूरत है। आज जब कि [illegible] साधन अगर हाथमें आ गया है अगर बड़े पद पर बड़े हिन्दुस्तानी और भ्रष्टाचारसे भरे हुअे नक्शा बदला गया है। अिसका परिणाम-स्वरूप लोग चारों तरफ जागे हुअे आजादी मनानेका भाव रखते हैं। आजादीके बादके राज्यमें अगर यह जगह हो तो यह बात है। जिसका अन्त होना ही चाहिये। नहीं तो स्वतंत्र भारतके भीतर व्यापकता फिर हो जानेमें पड़ जायगा और गांधीजीके बजाय यहांकी नौकरशाही राज्य करेगी तथा लोग निश्चित सत्ताधारी लगभग अमल जाल्में फंसकर अगर यह अनुसार निरुपाय बना रहेंगे। यह अन्धेर भयंकर होता है।

अैसे ही कुछ स्पष्ट-अस्पष्ट भाव गांधीजीने कंट्रोल विरुद्ध जो जिहाद छेड़ दिया है यह समझमें आने लायक है। पाकिस्तानके कारण खतरेमें पड़ी हुअी साम्प्रदायिक अेकताको फिरसे स्थापित करनेका सवाल हल करनेके बाद यह कंट्रोल हटवानेका आन्दोलन अुनका दूसरा अनोखा ही कामका सेवा है।

जनता पर टूट पड़नेको तैयार व्यापारी वर्ग और अनाज निकालने वाले बने हुअे गरीब लोग — दोनों जिस कंट्रोलको हटानेकी बात पर अेकमत हो रहे हैं जिसमें भी यही अेक कारण है। सूचक बात यह है कि सरकारी नौकर ही ज्यादातर कंट्रोल हटानेका विरोध करते दिखाओ देते हैं। जनता अपने हाथोंमें न छोड़ना चाहती है यह अेक शुभ चिह्न है। परन्तु यह याद रहे कि गांधीजी ही अेक अिस पाससे छूट सकते हैं असली बात यह है कि यह अुनका तत्त्व स्वीकार करें। नहीं तो मौजूदा ढंगका कंट्रोल तो हट जायगा परन्तु लोगों पर राज्य तो मध्यमवर्गी व्यापारियोंका और सरकारी नौकरोंका ही कायम हो जायगा। परन्तु आम जनताको यदि सच्ची शांति करनी हो तो अुसे गांधीजीकी अर्थनीति पर वापस जाना चाहिये। यह अर्थनीति यह है कि खादी और ग्रामोद्योगों द्वारा अपना आलस्य मिटाकर और अन्नोत्पादन बढ़ाकर विकेन्द्रीकरण और स्वावलम्बनके द्वारा लोगोंको अपना आर्थिक स्वराज्य प्राप्त कर लेना चाहिये। अिसी तरह लोग अपना 'शाही' स्थापित कर सकेंगे और मंत्रियोंको भी लोकराज्य स्थापित करनेके कार्यमें अपना आवश्यक सहयोग दे सकेंगे।

८–१२–४७

राष्ट्रीय संविधानकी दो शाखायें

हमारे देशका स्वतंत्र संविधान बनाया जा रहा है जिसकी दो शाखायें हैं। अनमें से अेक शाखाका संविधान-सभा विचार करती है।

राष्ट्र संविधानकी अेक शाखा यह हुआ। जिस शाखाको सब लोग जानते हैं। अखबारोंमें और बाहर भी अुसकी खूब चर्चायें और विज्ञापन हुये हैं। अिस कारणसे लोक-मानस पर अैसा असर पड़ता है मानो यही देशका संविधान तैयार करनेवाला काम है। परन्तु स्वतंत्र और लोकतांत्रिक राष्ट्रका संविधान अितनेसे पूरा नहीं हो जाता। अुसका दूसरा अंग लोकमनका निर्माण और अुसका संविधान है। लोक राज्य-संविधानका महत्त्व होता है परन्तु अुसकी परिपूर्ति लोकसेवाकी संस्थाओं द्वारा होती है। अुसके बिना लोकतंत्र चल नहीं सकता। अिसीलिये संविधान-सभाके साथ कांग्रेस और दूसरे दल भी अपना नया और नवयुगके अनुरूप संविधान तैयार करनेकी कोशिश कर रहे हैं। लोक संविधानकी यह दूसरी शाखा है। और अुसमें यह बड़ा फायदा है, क्योंकि अिस पर हमारे लोक निर्माणका बहुत बड़ा आधार रहेगा। परन्तु दुःखकी बात तो यह है कि सामान्य लोगोंके मनमें यह बात जितनी ठसी नहीं है। अिस बातका कांग्रेसवालोंका महत्त्व अुनके मनमें नहीं आया है। परन्तु वह महत्त्व कितना अधिक है यह अेक छोटी किन्तु बड़ी सूचक बातका अुल्लेख करके हम बतायेंगे।

हमारे यहांकी संविधान-सभाका जन्म हुआ तब साधारणतः अुसके लिये अेक परिश्रम किया तथा मनन चिन्ता और जागृति बताओ। परन्तु अुसके अच्छी तरह बन जाने पर अुन्होंने अुसमें अपना बहुत मन नहीं लगाया। अिसलिये नहीं कि अुसका महत्त्व कम है परन्तु संविधानका [illegible] लिये अुसमें लगनेकी जरूरत नहीं था। यहां तक कि गांधीजी [illegible] भी अुन्होंने अपना अिस विश्वसनीय बननेवाली सभामें [illegible] है पर तब देखनेका समय नहीं निकाला।

अब दूसरी शाखाको लीजिये। कांग्रेसका नया संविधान [illegible] लिये अुन्होंने कितना अधिक दिन और घर दिये हैं? [illegible] बारेमें चिन्तन करते रहे और कांग्रेसका मार्गदर्शन [illegible]। [illegible] जो दस्तावेज अुन्होंने दिया वह तो अिसी [illegible] है। [illegible]

कि अब इसमें कायदा सुधार हो जाना चाहिये और लोक-सेवक-संघके नये रूपमें जन्म लेना चाहिये। राज्य-सविधान आगामी चाहे जितना अच्छा मिसाल नहीं कर सकता। यह काम तो लोगोंमें जागृति और जनतामें काम करनेवाले विविध दलोंके लोक-सेवक ही कर सकते हैं। जैसे लोगोंका अब एक बड़ा दल खड़ा करना चाहिये। अन्यथा लोग निश्चित आरामसे ही नये सविधानका लाभ अुठा सकेंगे। वर्ना सबल वर्गकी सिरजनी और लोगोंको दलबन्दीमें फसानेवाली स्वार्थ-वासना ही उत्पन्न होगा और देश छिन्न भिन्न हो जायगा। जिसके फलस्वरूप एक पक्ष हारकर दूसरेको स्वतंत्रताका नाश भी हो जाय तो आश्चर्य नहीं। अस समयमें केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंके रूपमें या सेना और पुलिसके बल पर हुकूमत चलानेवाली डिक्टेटरशाही पैदा हो जायगी अथवा लोक-संघकी सेवाभावना तत्त्व पर मूल आधार रखकर चलने वाला अर्वाचीन ढंगका लोकतंत्र अुत्पन्न होगा। कांग्रेसने दूसरे प्रकारकी चीज — लोकतंत्र — पैदा करनेका आदर्श अपनाया है। अिसके लिये वह नया सविधान तैयार करनेकी कोशिश कर रही है।

देशके स्वतंत्र सविधान पर असर डालनेवाला यह दूसरा यत्न है। वह भी सविधान-सभाके बराबर ही महत्त्व रखता है। आगकी शान्तिके सच्चे बीज अिस बातमें निहित रहेंगे कि देशके सविधानकी अिस दूसरी शाखाके संबंधमें हम क्या करते हैं।

पुराना अितिहास याद करें तो १९२०–२१ में गांधीजीने कांग्रेसका असा सविधान तैयार करके असकी क्रान्तिकारी शक्ति प्रगट करके दिखा दी थी। असके बल पर आगे चलकर १९३० में फिर नया सविधान तैयार किया गया और अस नये सविधानके द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त की गअी। प्रजाके निर्माण करनेके लिअे राजनीतिक स्वतंत्रताके साधनकी जरूरत थी। वह साधन अब हमें मिल गया है। असके साथ हमारे आगे बढ़नेसे पहले ही गांधीजी 'शहीद' होकर स्वयं हमें आगेका मार्ग दिखा गये हैं। यह सच है कि अस मार्ग पर हमें अनका प्रत्यक्ष नेतृत्व प्राप्त नहीं है। परन्तु देशके आगे बढ़नेके लिअे जिस नये सविधानकी जरूरत है वह अिससे स्पष्ट हो जाता है। वह सविधान तैयार करनेकी जिम्मेदारी कांग्रेस पर है जैसे राज्य-सविधान तैयार करनेकी जिम्मेदारी सरकारी सविधान-सभा पर है। लोगोंको लोक-सविधान तैयार करनेके अिस कामको अधिक ध्यान देकर समझना चाहिये।

२२-३-’४८

१६

भारतके राज्य संविधानका जन्म

१

२६ जनवरी १९३० का दिन जब स्वातंत्र्य दिवसके रूपमें निश्चित किया गया तब अिस बातका खयाल नहीं था कि अुस धन्य दिवसको आखिर सचमुच स्वातंत्र्य दिवस बननेका सौभाग्य भी प्रदान करेगा। वह दिन ठीक २० वर्ष बाद जिस महीनेमें सचमुच स्वतंत्र भारतका स्वातंत्र्य दिवस बन रहा है, यह महाभाग्य प्रदान करनेके लिअे भारतकी सब सन्तानोंको जगत्पिता परमेश्वरका आभार मानना चाहिये।

यह दिन दिखानेवाले गांधीयुगका अितिहास जितना भव्य है, अुतना ही अुसकी फलश्रुतिके रूपमें निर्माण हुअी भारतकी संविधान-सभाका अितिहास भी भव्य है। अिस सभाने तीन वर्षमें सचमुच अपना भगीरथ कार्य पूरा कर लिया और वह भी सर्व-सम्मतिसे। (मौलाना हसरत मोहानीका विरोध केवल विरोध था, परन्तु अिस दृष्टिसे नहीं था कि जो कुछ हुआ था वह अन्याय है।) तैंतीस करोडकी आबादीवाले राष्ट्रका अेक संविधान बनना भारतके अितिहासमें तो अपूर्व वस्तु है ही, शायद संसारमें भी अपूर्व हो।

और संविधान तैयार करना कुछ लोगोंको वकालत, राज्यविद्या और कलमबाजीका खेल लगता है। परन्तु स्वतंत्र होनेवाले देशके लिअे यह वास्तविक चेष्टा होती है। देशकी जनतामें विद्यमान सभी बलाबल, दांवपेंच, पूर्णापूर्णता और दुर्बलताओंका मंथन शुरू होता है। संक्षेपमें अुसे राष्ट्रका समुद्र-मंथन ही कहें तो अुचित होगा। देशमें विद्यमान भली-बुरी शक्तियोंका देवासुर-संग्राम मचता है और अुसमें से नवनीत निकालना होता है। जब यह महाप्रक्रिया हो — या यों कहिये कि यह महामंथन चले, अुस समय अुसकी रक्षा करनेके लिअे मजबूत सरकारका बल होना चाहिये। नहीं तो दुनियामें जैसा आजकल देख रहे हैं वैसा या अैसी तरहका और कुछ हो सकता है। अुसके बारेमें सदा सावधान और खडे पैरों रहनेवाली सरकार न हो तो संविधान अेक तरफ धरा रह जाय, या यों कहिये कि मंथनकी प्रक्रिया बिगड जाय।

भारतमें अेक बल नहीं था सो भी बात नहीं। जैसे प्रथम बल मुसलमानोंका था, अिस देशके दो टुकडे करनेकी बात स्वीकार करके अकस्म

खतम कर दिया गया। दूसरा वर्ग था अंग्रेजों द्वारा दूध पिलाकर पाला हुआ देशी राजाशाहीका जन्तु। गांधीजीकी सिखाओ हुओ कुशल और दूरदर्शी नीतिने अिस जहरको भी नाश कर दिया। सरदार साहबने राजाओंको समझा-बुझाकर अन्हें स्वतंत्र भारतकी गोदमें मिला लिया। अस्पृश्यताके सामाजिक विषको भी अंग्रेजोंने १९३२ में ही राजकीय बनानेकी कोशिश की थी। लेकिन गांधीजीने आमरण अुपवास द्वारा अुसे अुसी वक्त ही दबा दिया और अब आजादहिन्दमें तो संविधानने स्पृश्यास्पृश्यको कायदेसे मिटा दिया और मिटाना बना दिया। और राष्ट्रीय सरकारको केवल कांग्रेसकी न बनाकर वास्तवमें राष्ट्रीय अथवा सर्वदलीय बनाया, यह भी कोओ छोटी बात साबित नहीं हुआ। साम्यवादी और समाजवादी दलोंने भी कुछ विरोधी वातावरण फैलाकर काफी प्रयत्न किये जो अभी तक जारी हैं। परन्तु ये केवल राजनीतिक विरोध-मात्र जैसे रहे हैं। अिन दलोंके पास कोओ राष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं है।

अिन तीन वर्षोंमें आंतरिक सुलह-शांति और सुव्यवस्थाके प्रश्न भी कम नहीं अुठे। और हाल ही में आजाद हुओ जनताकी तरह तरहकी आशाओं आकांक्षाओं मांगों और तकाजे भी जबरदस्त परेशानी बन हुओ थे। फिर देशके अलग अलग वर्ग अपने अपने हितोंकी साधनामें परस्पर जो निर्दय और निष्ठुर दंगाओंकी व्यवहार करते रहे वह भी कम गंभीर भयस्थान नहीं था। और ये वर्ग केवल आर्थिक ही नहीं परन्तु राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक भी रहे हैं। अिन सब कठिनाअियोंसे पार होकर अंतमें २६ जनवरीको अपना राष्ट्रीय संविधान समग्र प्रजाके हितके लिअ तैयार करके हम अुज्ज्वल भविष्यकी ओर प्रयाण कर रहे हैं। अिस धन्य अवसर पर जिस स्थितिको संभव बनानेवाले सब लोगोंको हम श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं। भारतकी जय हो!

२३-१२-४९

२

स्वतंत्र भारतकी अपरोक्त तारीखसे चार ही दिन बाद अुतनी ही स्मरणीय बनी हुओ दूसरी तारीख आती है ३० जनवरीकी। यह तारीख तो अुससे भी अधिक स्मरणीय और प्रेरक बनेगी क्योंकि २६ तारीख यदि स्वतंत्र संविधानके कलेवरका जन्मदिन है तो ३० तारीख अुस कलेवरके आत्मतत्त्वका स्मरण-दिवस बन जाती है। जिस शक्तिने भारतको आजादी

वापस लानेमें सबसे अधिक योग दिया अुसकी सर्वोच्च पराकाष्ठा तो अिसी दिन दुनियाको प्रत्यक्ष देखनेको मिली। भावी भारतकी आत्मा क्या है, अिसका गांधीजीने अपनी वाणीसे तो वर्णन किया ही था, ३० जनवरीके दिन अुन्होंने अुसे पूर्ण रूपमें अपने आचरण द्वारा सिद्ध कर दिखाया।

हमारा आदर्श सर्वोदय है और अुसका अुपाय जो नीचेसे नीचे (अन्त्य) हो सबसे हैं अुनकी सम्हाल सबसे पहले करनेमें मिल जाता है। पाकिस्तानमें हिन्दू और भारतमें मुसलमान अुस समय अन्त्य थे। स्वतंत्र भारत अिसे भूल नहीं सकता। यह बात दिखानेको गांधीजी शहीद हुअे। भारतके आत्माको आजकल सेक्युलर (धर्म निरपेक्ष) राज्य — अिन शब्दोंमें पेश किया जाता है। अिसका अर्थ गांधीजीकी कुरबानी बताती है। हिन्दू महासभा और असे विचारके दूसरे कुछ प्राचीन जोशीले लोग कहते हैं कि यह तो नास्तिक राज्य हो गया, हमें हिन्दू राज्य चाहिये। और जोशीले दयावान हिन्दू राजनीतिज्ञ यह भी कहते हैं कि भारतमें हिन्दुओंका बहुमत है अिसलिअे हिन्दू राज्य ही होना चाहिये। असे लोग अभी तक राजपूतों और मराठोंके बारेमें सवाल हिन्दू धर्मसे ही प्रेरणा लेते जान पड़ते हैं। अितिहासने बताया है कि हिन्दू धर्मकी अिस जीवन-दृष्टिने अन्तमें देशको गुलाम बनाया, यह दृष्टि अकेली प्रेरक या प्रगतिशील सिद्ध नहीं हुअी। और अिसके बाद हिन्दू धर्मके नव संस्करणका अर्वाचीन युग शुरू हुआ, जिसके पुरस्कर्ता पुरुष गांधीजी थे। अुन्होंने हिन्दू धर्मकी पुराण पवित्र प्राचीन विशालताको फिरसे जीवित किया और प्रत्यक्ष जीवन-व्यवहारमें दिखा दिया कि हिन्दू धर्म अेक सनातन शक्ति है। असा हिन्दू धर्म कोअी सम्प्रदाय या मजहब नहीं है, क्योंकि किसी विशेष कल्पना, किताब या प्रवर्तक व्यक्ति तक ही मर्यादित रहनेवाला धर्म नहीं है। जीवन धर्मका यह दर्शन परम मानव धर्म-सा ही है। यह वस्तु गांधीजीने अपनी कुरबानीसे भारतको सदा याद रखनेके लिअे चिरस्मरणीय रूपमें दी है।

अिस प्रकार २६ और ३० जनवरी दोनों मिलकर स्वतंत्र भारतका स्वरूप बताती हैं। सर्वोदय राज्य ही सच्चा हिन्दू राज्य है, वही सच्चा सेक्युलर राज्य भी है। हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज अपने ही पापसे क्षीणतेज बना था। आज जब कहीं-कहीं कुछ निरंकुशवादी हिन्दू जोशीलेपनसे अिस धर्मके सामने हिन्दूके जीवन और मरणका सवाल रखते हैं कि हमारे धर्मका

नवयुग आरम्भ हो रहा है। अेक नये और अेकदम आगे-आनेवाले युगमें प्रवेश करनेका युग आरंभ हो रहा है, अेकदम नया आरम्भ है।

३

संविधान-सभामें भारतका संविधान बनानेका काम पूरा होने पर श्री आम्बेडकरने अेक लम्बा भाषण किया। अुसमें अुन्होंने अेक चेतावनी दी कि आजसे सबको यथाविहित कायम कानूनके अनुसार चलना चाहिये, जिसके लिये हमें क्रान्तिकी पद्धतियाँ और सत्याग्रह, असहयोग और सविनय कानूनभंग आदिकी पद्धतियाँ भी छोडनी पडेंगी। पुराने नरम दलके लोग जिसी प्रकार १९२० से गांधीजीसे कहते आये थे। अब नये युगमें नये पैदा हुअे नरम संविधानवादी लोग भी यह कहें तो अिसमें आश्चर्य नहीं।

परन्तु अिस विचारको अेक बात ध्यानमें रख जाती है। डॉ. आम्बेडकरने सत्याग्रह अिसीलिये क्या अेक मानकर यह कहा होगा? हरिजनोंके नेताकी हैसियतसे अुन्होंने भी कुछ सत्याग्रह और असहयोग आदि छेडे थे। मनुस्मृतिको जलानेका तरीका भी अुस समय आजमाया गया था। यदि अुसे सत्याग्रह समझकर वे कहते हों कि अैसे सत्याग्रहके लिअे अब स्थान नहीं रहा तो अिसमें आपत्ति नहीं, क्योंकि वह सच्चा सत्याग्रह नहीं था।

और आज अनशन, हड़ताल आदि तंग करके या मनाकर काम निकालनेके जो हठाग्रही ढंग भारतमें शुरू हुअे हैं वे भी त्याज्य हैं, क्योंकि वे सत्याग्रह नहीं हैं।

परन्तु गांधीजीकी सिखाअी हुअी चीज तो अुनकी अेकमात्र और अनमोल जीवन भेंट है। वह अुनका मानव-परिवारको सिखाया हुआ अुत्तम पाठ है। अुसके लिअे स्थान था अिसी कारणसे स्वराज्य आया। अैसे अब स्वतंत्र भारतमें हम जितना स्थान देंगे अुतना वह सुराज्य या सच्चा अथवा सम्पूर्ण स्वराज्य बनेगा और सबको शान्ति, समृद्धि और सुख दे सकेगा। सत्याग्रहके द्वारा लोकतंत्र सनाथ हुआ है। अेक व्यक्ति भी सत्याग्रहके द्वारा महाशक्ति सिद्ध हुआ है। सत्याग्रहसे स्वातंत्र्यने अपना परम शस्त्र प्राप्त किया है। सत्यको अपने जैसा ही अमोघ और परम कल्याणकारी शस्त्र सत्याग्रहसे मिला है। स्वतंत्र भारतमें अिस पर कोअी प्रतिबंध नहीं लगा सकता। परन्तु सच पूछा जाय तो विद्रोह और सत्याग्रह पर प्रतिबंध लगा ही कौन सकता है?

२४–१२–४९